सी डैक
CDAC

अभिव्यक्ति

तृतीय अंक

सितम्बर २०११

वार्षिक हिन्दी पत्रिका

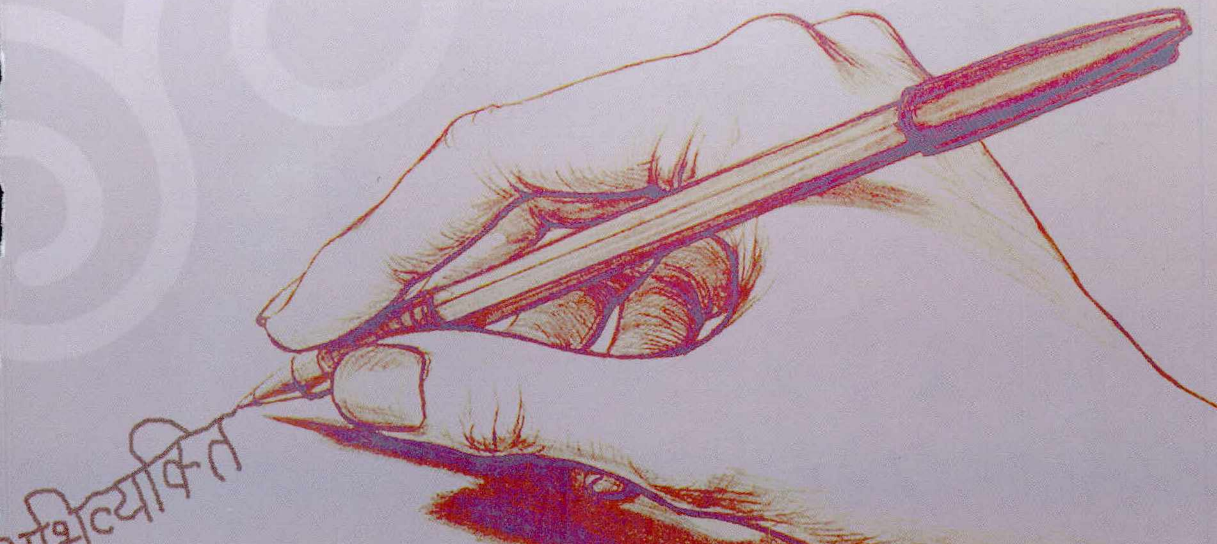

प्रगत संगणन विकास केन्द्र

अभिव्यक्ति

संपादक

वी. एन. शुक्ला

जे. सी. सेठी

संपादन सहयोग

डॉ. पी. सी. जैन

कल्पना जौहरी

सुभाष चंद

विशेष सहयोग

नवीन चन्द्र

प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं, उनसे सी-डैक, नोएडा और संपादकों का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सी-डैक

CDAC

प्रगत संगणन विकास केन्द्र

अनुसंधान भवन, सी-56/1, संस्थागत क्षेत्र

सैक्टर- 62, नोएडा- 201307

फोन: 0120-2402551-60, फैक्स-0120-2402569

विषय सूची

क्र.सं.	रचना	लेखक/संकलनकर्ता	पृष्ठ सं.
1	मेडीकल हेल्थकेयर - वायरलेस सेंसर नेटवर्क के द्वारा (लेख)	डॉ. प्रेम चंद जैन	11
2	ई-लर्निंग-भविष्य शिक्षा का! (लेख)	संतोष कुमार, लक्ष्मी कल्याणी, वी.के. शर्मा	15
3	परमाणु तकनीक वरदान या अभिशाप (लेख)	विनोद कुमार शर्मा	19
4	कम्प्यूटर क्या है? (लेख)	अंशु जैन	21
5	आधुनिक मोबाइल ऑपरेटिंग सिस्टम का परिचय (लेख)	विनय जैन	24
6	मेहनत करने वालों की कभी हार नहीं होती (कविता)	कौशल सक्सेना	25
7	बड़े काम की छोटी बातें (लेख)	पूजा शर्मा	26
8	रहट (लघु कथा)	संजय कुमार	28
9	कार्य एवं निजी जीवन में संतुलन की स्थापना (लेख)	नेहा बाजपेयी	29
10	करण (कविता)	राहुल जीनवाल	30
11	ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति माँ (लेख)	उदय सिंह	31
12	कैप्चा (लेख)	सुजीत कुमार	32
13	खूंटी तोड़, मुक्त हो जा ! (लेख)	कृति सरोहा	33
14	कम्प्यूटर लैब (कविता)	उमेश शर्मा	35
15	समस्त उपलब्धियों का मूल है 'मन' (लेख)	राजेश श्रीवास्तव	36
16	खाड़ी में रहने वाले मलयाली लोग (लेख)	आर.के. मेनन	38
17	गर्व है मुझको कि मैने .... (कविता)	अंजुम अवस्थी	40
18	डेटाबेस डिजाईन की दस आम गलतियाँ (लेख)	अभिषेक वर्मा	41
19	चुटकुले	गजेन्द्र सिंह	44
20	मानवता की सीख (कविता)	रेणुका बंसल	45
21	यूनिक आइडेंटिफिकेशन नंबर (लेख)	रामजी गुप्ता	46
22	न्यायपालिका में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (लेख)	मुकेश कुमार सिंह	48
23	मेघा (कविता)	राहुल जीनवाल	50
24	सी-डैक अब 'सी.एम.एम.आई. स्तर 5' (लेख)	विजयगोपालन के.पी.	51

क्र.सं.	रचना	लेखक/संकलनकर्ता	पृष्ठ सं.
25	जिंदगी (कविता)	जितेन्द्र सिंह	52
26	मेरी मां के धारावाहिक (कविता)	प्रीति राज़दान	53
27	जिंदगी के रूप (कविता)	अभय पाल चौहान	54
28	ताजमहल (कविता)	अजय पाल	55
29	अगर आपके कंप्यूटर में हिंदी की सुविधा मौजूद नहीं है (लेख)	चन्द्रिका गौतम	56
30	बड़ा ही महत्व है (लेख)	राम बिलास चौधरी	58
31	आपसे दोस्ती हम यूं ही नहीं कर बैठे (कविता)	कौशल सक्सेना	59
32	वैब सर्वर क्या है? (लेख)	अंशु जैन	60
33	फलों के फायदे (लेख)	प्रिया	62
34	क्लाउड कंप्यूटिंग (लेख)	नितिन कुमार वार्ष्णेय	63
35	सारे जहाँ से अच्छा कहाँ है वो हिन्दोस्तान हमारा (कविता)	मनोज पुरोहित	65
36	ऊँ टैंशनाय नमः (लेख)	चन्द्रिका गौतम	66
37	चुटकुले	विकास बंसल	67
38	दीपों वाली दीपावली (कविता)	पार्थ पी चट्टराज	68
39	एंड्रोयड (लेख)	अमिय मोहंती	69
40	रिमझिम प्यारी बूंदों का मौसम (कविता)	कविन्द्र सिंह बोरा	72
41	आतंकवाद: कारण और निदान	अनिल कुमार	73
42	डेटा बैकअप तकनीक (लेख)	अमित कुमार	75
43	मैं कौन हूँ (कविता)	अजय पाल	77
44	महामारी बनते हृदय रोग (लेख)	रवि कुमार सिंह	78
45	बापू! एक बार फिर तुझे ही धरती पे आना होगा-एक प्रार्थना (कविता)	अभिषेक वर्मा	80
46	टेढ़ी उँगली (कहानी)	डॉ. आरती नूर	81
47	संसदीय राजभाषा समिति द्वारा सी-डैक, नोएडा का राजभाषायी निरीक्षण	जे. सी. सेठी	86

सी-डैक
CDAC

महानिदेशक, सी-डैक का संदेश

यह मेरा सौभाग्य है कि सी-डैक में कार्यग्रहण करते ही मुझे संगठन की गृह पत्रिका 'अभिव्यक्ति' में संदेश देने का अवसर मिला है। गृह पत्रिका 'अभिव्यक्ति' की संकल्पना और इसके अनवरत तीसरे अंक के प्रकाशन के लिए आप बधाई के पात्र हैं। प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर कोई न कोई प्रतिभा छिपी रहती है। इस संगठन के तकनीकीविदों एवं वैज्ञानिकों के अन्दर शुषुप्त अवस्था में विद्यमान उनकी इस लेखन क्षमता को जागृत करने में 'अभिव्यक्ति' अहम भूमिका अदा कर रही है। इस पत्रिका ने कार्मिकों के अन्दर हिन्दी के प्रति जो नया जोश व नव चेतना जागृत की है, वह इस संगठन में हिन्दी के उज्ज्वल भविष्य की ओर एक सुनहरा कदम है।

इस पत्रिका में विविध विधाओं में प्रकाशित लेखों से हिन्दी में मौलिक लेखन को न केवल प्रोत्साहन मिलेगा बल्कि कार्यालय में हिन्दी के प्रति सौहार्दपूर्ण वातावरण भी बनेगा।

मैं गृह पत्रिका 'अभिव्यक्ति' के तीसरे अंक के सफल प्रकाशन हेतु अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

रजत मूना

(प्रो. रजत मूना)
महानिदेशक, सी-डैक

कार्यकारी निदेशक सी-डैक, नोएडा का संदेश

जैसाकि आप जानते हैं कि भारत एक विशाल देश है जहां पर हर कोस पर भाषा बदल जाती है। इसलिए देश को एक सूत्र में बांधने तथा विचारों के आदान-प्रदान के लिए एवं जनसंपर्क की भाषा के रूप में हिन्दी को अपनाने का संविधान निर्माताओं ने निर्णय लिया। अत: अपने कार्यों में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग करना हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य है। इन्हीं प्रयासों को आगे बढ़ाते हुए राजभाषा हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार की दिशा में इस केन्द्र द्वारा गृह पत्रिका 'अभिव्यक्ति' का प्रकाशन किया जा रहा है।

अभिव्यक्ति के तृतीय अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। संगठन के अधिकारियों और कर्मचारियों में सृजनात्मकता की कमी नहीं है। हमारे रचनाकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से बहुमूल्य विचारों एवं सम्प्रेषण क्षमता का सराहनीय प्रदर्शन किया।

आशा है कि यह अंक भी आपको पसंद आएगा और आप अपने बहुमूल्य सुझावों एवं विचारों से हमें अवगत कराएंगे ताकि पत्रिका के आगामी अंकों को सतत् रूप से आपकी आशाओं के अनुरूप बना सकें।

(डॉ. जार्ज वर्की)
कार्यकारी निदेशक

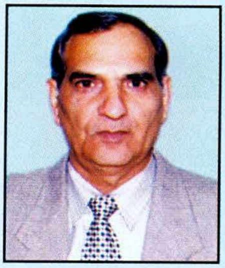

सम्पादकीय

प्रेरणा के पुष्प जो हमें गत दो वर्षों से आपसे प्राप्त हुए हैं, हमें अविरत प्रोत्साहित कर 'अभिव्यक्ति' का तृतीय अंक आपके सम्मुख पेश करने की दृष्टता करवा रहा है, इस आशा से कि यह भी आपको पसंद आएगा। विलंब के लिए क्षमा प्रार्थी भी हैं। अन्य व्यस्तताओं के चलते ही विलंब हुआ है। वादा करते हैं कि भविष्य में ऐसा नहीं होगा।

इस बार अभियंता और अन्य अधिकारी वृंदों की लेखनी में प्रगल्भता के साथ एक चमक भी आई है जिसे आप जरूर महसूस करेंगे। कार्यक्रमों की गति, उनकी जरूरत तथा उन्हें निभाने के संकल्प के साथ उनकी निरंतरता भी एक सुदृढ़ कारण होता है, जिससे सभी जुड़े हुए जीवों में एक नई शक्ति का निर्माण करता है। कुछ ऐसा ही हुआ है हमारे मित्रों के संग जिन्होंने अपना अनूठा योगदान लिखान के रूप में इस पत्रिका में प्रेषित होने हेतु दिया है। अनूठा इसलिए कहेंगे, क्योंकि शायद 'लिटरेचर' की परिभाषा में यह संपूर्ण रूप से न भी माना जाए, परंतु कृतियाँ निष्पक्ष और मन के तारों से झनझनाती हुई ही निकली हैं। यथार्थ में तकनीकी शास्त्रों से जुड़े हुए जीव अक्सर 'ड्राई' कहलाते हैं, किंतु फिर भी पाषाण के जल स्त्रोती झरने के मानिंद उनके विचार, मन, भावनाएं तथा अनुभव लेखनी से पन्नों पर उतर ही आए हैं - उतरे भी हैं। साथ-साथ मातृभाषा से जुड़ने का एक बहाना भी सुखद अनुभव बन गया है।

अक्सर देखा गया है कि मोबाइल के एस.एम.एस. में, या अनौपचारिक ई-मेलों में, लिखा तो अंग्रेजी जा रहा है किंतु बोल और मन हिन्दी के ही हैं। शायद यह व्यक्ति विशेषों के मन में हिन्दी के प्रति लगाव की बेचैनी ही है। ऐसे में हिन्दी लिखान के प्रति बढ़ता हुआ रुझान, पत्रिकाओं का सम्मान भी बढ़ा रहा है।

अत: सभी योगदान देने वालों को और उत्साह बढ़ाने वालों को धन्यवाद देते हुए 'अभिव्यक्ति' का तृतीय अंक आप सभी को समर्पित है।

(वी.एन. शुक्ला)
निदेशक

(जे.सी. सेठी)
हिन्दी अधिकारी

मेडीकल हेल्थकेयर - वायरलेस सेंसर नेटवर्क के द्वारा

सारांश

इलेक्ट्रॉनिक मेडीकल हेल्थकेयर बीमारियों का शुरू में ही पता लगा लेती है। यह तकनीक अस्पतालों व क्लीनिकों में जाकर टेस्ट करवाने के बजाए रोगी की बीमारियों का घर पर ही पता लगा लेती है व रिपोर्ट वायरलेस के द्वारा अस्पताल के मेडिकल सर्वर पर रोगी के नाम में स्टोर हो जाती है, जिसको डॉक्टर अपने लेपटॉप से या मोबाइल फोन (पर्सनल सर्वर) से या टेबलेट से लॉगऑन (logon) करके बिना रोगी से मिले ही उसकी शुरुआती बीमारियों का पता लगा लेता है। अगर जरूरत हो तो डॉक्टर रोगी को फोन करके या एस.एम.एस. करके परामर्श के लिए बुला लेता है या फिर उसे बीमारियों की रोकथाम के लिए सलाह दे देता है। इससे बीमारियों को बढ़ने का मौका नहीं मिलता है। रोगी को जल्दी ही स्वास्थ्य लाभ मिल जाता है। धन भी कम खर्च होता है और वह अस्पताल में आने-जाने की परेशानियों से भी बच जाता है। इससे अस्पतालों में जो रोगियों की भीड़-भाड़ नजर आती है वह भी कम हो जाएगी। इस तकनीक से दिल के दौरे व बुर्जर्गों की असाध्य बीमारियों पर लगातार नज़र रखी जा सकती है।

1. प्रस्तावना

आजकल की जीवन शैली में बदलाव आने की वजह से यानि फास्ट लाइफ के कारण दिल का दौरा पड़ना आम बात होने लगी है। अगर इसका पता कुछ ही मिनटों में लग जाए तो तुरन्त रोगी का इलाज शुरू हो सकता है व रोगी का जीवन बच सकता है। आज के जमाने में बुजुर्गों की संख्या संसार में बढ़ती जा रही है। तीसरे देशों की बुजुर्गों की जनसंख्या जो आज 40 करोड़ है वह बढ़कर सन् 2050 में चार गुणा हो जाएगी।

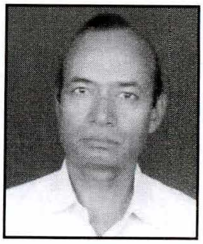

बुजुर्गों कों असाध्य बीमारियां जैसे डायबिटिज होना साधारण बात हो गई है। आजकल युवा वर्ग की खाने पीने की आदतें बदल गयी हैं और अब वह जंक फूड में खर्च करने लगा है। कसरत करने के लिए समय नहीं मिलता व अकेलेपन से जूझने की वजह से दिल का दौरा, डायबिटीज, दमा, ब्लडप्रेशर जैसी बीमारियां होने लगी हैं।

आजकल रोगी ईलाज के लिए डॉक्टर के पास तब जाता है जब बीमारी उसके लिए असहनीय हो जाती है। सालाना चेक-अप भी नहीं करवाता जिससे बीमारियों का शुरू में ही पता लग जाए। इलेक्ट्रॉनिक हेल्थकेयर रोगी की बीमारियों का शुरू में ही पता कर लेती है व बीमारी का इलाज उसी समय चालू कर दिया जाता है जिससे बीमारी आगे न बढ़े। आज के इलाज में रोगी डॉक्टर के पास जाता है। डॉक्टर बहुत सारे टेस्ट लिख देता है व टेस्टों की रिपोर्टों से बीमारी का विश्लेषण करके दवाइयां लिख देता है व इलाज चालू हो जाता है। कुछ दिनों बाद रोगी ठीक हो जाता है। लेकिन कुछ समय बाद वही या दूसरी बीमारी दुबारा हो जाए तो डॉक्टर फिर नए सिरे से सारे टेस्ट दुबारा करवाने को बोलता है व नए तरीके से फिर इलाज चालू कर देता है। इस पद्धति में समय व धन की बहुत

बर्बादी होती है व रोगी इन सारे कामों से परेशान भी हो जाता है। इलेक्ट्रॉनिक हेल्थकेयर सिस्टम बीमारी होने के कारणों को सेन्स करता रहता है, यानि बीमारी का पता लगाता रहता है, निगरानी रखता है, डॉक्टर की तरह विश्लेषण भी करता है, और यह सारा रिकार्ड अस्पताल में मेडीकल सर्वर पर रोगी के नाम पर स्टोर कर देता है। जब डॉक्टर मेडिकल सर्वर पर लॉग-इन करता है तो रोगी के रिकार्ड से सारे लक्षण (सिम्प्टम्स) पता लग जाते हैं व डॉक्टर रोगी को उसी तरह सलाह दे देता है या इलाज करना शुरू कर देता है।

2. इलेक्ट्रॉनिक हेल्थकेयर सिस्टम

इलेक्ट्रॉनिक हेल्थकेयर के लिए रोगी के शरीर पर छोटे-छोटे सेंसर लगा दिए जाते हैं। ये सेंसर जैविक संकेतों (बायोलॉजिकल सिगनल्स) को लगातार नापते रहते हैं। इस सिस्टम में ई.सी.जी. (ECG) नाड़ी की दर (Pulse rate) को ई.एम.जी. (EMG) शरीर की मांसपेशियों की संक्रियता को ई.ई.जी. (EEG) दिमाग की नसों की सक्रियता को, ब्रीथिंग सेंसर सांस की गति को, तापक्रम सेंसर शरीर के तापक्रम को, ब्लड प्रेशर सेंसर रक्त चाप (बी.पी.) को मापता है। एक्सीलेरो मीटर सेंसर बुजुर्गों के गिरने-पड़ने का पता लगाता है। ऊपर लिखे सेंसर आकार में छोटे, वजन में हल्के व बहुत ही कम करंट पर काम करते हैं। इसलिए इनमें लगी बैटरी काफी छोटी होती है जोकि महीने व सालों काम कर सकती है। इससे रोगी को या नर्स को बार-बार बदलने की जरूरत नहीं पड़ती। ये सेंसर या तो शरीर के विभिन्न अंगों पर लगाए जाते हैं या फिर कपड़ों या जूतों में छिपा दिये जाते हैं। ये सारे सेंसर शरीर की सक्रियता मापने के बाद एनालॉग (analog) सिगनल प्रदान करते हैं। जिसको डिजिटल सिगनल में बदलने के बाद माईक्रोकन्ट्रोलर में प्रोसेस करके वायरलेस के द्वारा रोगी के मोबाइल फोन या पर्सनल सर्वर पर भेज दिया जाता है। रोगी सेंसरों से मिले सारे डेटा (Data) को पर्सनल सर्वर पर ग्राफ या टेक्स्ट के रूप में देख सकता है। यह पर्सनल सर्वर सारे आंकड़ों (Data) को अस्पताल के मेडिकल सर्वर पर वायरलेस लोकल एरिया नेटवर्क (WLAN) या सेलुलर वायरलेस नेटवर्क के द्वारा भेज सकता है। सेंसरों से डेटा पर्सनल सर्वर तक वायरलेस पर्सनल एरिया नेटवर्क (WLAN) जिग्बी (ZigBee) नेटवर्क [I] के द्वारा भेजा जाता है। अस्पताल का सर्वर रोगी की सारी हिस्ट्री रखता है जिससे रोगी को बार-बार टेस्ट नहीं कराना पड़ता है। यह मेडिकल सर्वर अस्पताल के सारे मरीजों की शुरू से लेकर आज तक की हिस्ट्री रखता है। डॉक्टर मेडिकल सर्वर से अपने रोगियों के रोगों को जानने के लिए लॉग ऑन कर सकता है व विश्लेषण करके रोगों का पता लगा सकता है व रोगी को सलाह दे सकता है कि आगे इसे क्या सावधानी बरतनी है व कौन सी दवाइयां लेनी है या जरूरत हो तो परामर्श करने के लिए बुला भी सकता है। रोगी खुद अगर जानकार है तो मेडिकल सर्वर को लॉग ऑन करके खुद अपने रोगों का पता लगा सकता है व डॉक्टर से इलाज के लिए परामर्श ले सकता है। सबसे ज्यादा जरूरी बात यह है कि रोगी के डेटा का हर स्तर पर सुरक्षित संचार होना बहुत जरूरी है। जिससे दूसरा अप्राधिकृत व्यक्ति इसकी जानकारी न ले सके व दुरुपयोग न कर सके। बुजुर्गों व असाध्य बीमारियों से पीड़ितों के लिए सेंसर हमेशा मेडिकल सर्वर पर अनवरत डेटा भेजते रहते हैं जिससे कभी भी कोई इमरजेंसी

नजर आती है तो तुरन्त अलार्म बज उठता है व रोगी व डाक्टर दोनों सचेत हो जाते हैं व रोगी को बचाने के लिए तुरन्त इलाज शुरू किया जा सकता है।

3. सेंसर नोड

सेंसर नोड के अंदर बायोलॉजिकल सेंसर, माईक्रोकंट्रोलर, ट्रांसीवर (ट्रांसमिटर व रिसीवर) व एन्टेना होते हैं। इन सबके लिए बैटरी की जरूरत होती है। बैटरी का जीवन लम्बा करने के लिए व आकार कम रखने के लिए सेंसर नोड को हमेशा ऑन नहीं रखा जा सकता है। बल्कि इसे रेगुलरली ऑन-ऑफ करते रहना चाहिए, जिससे जरूरत मंद डेटा भी मिल जाए व बैटरी का करंट भी कम खर्च हो। हर सेंसर नोड को उसके काम के अनुसार प्रोग्राम (Software) कर दिया जाता है।

4. वायरलेस नेटवर्क

वायरलेस सेंसर नेटवर्क में जिग्बी नेटवर्क को काम में लिया जाता है क्योंकि इसकी कीमत भी कम होती है, बैटरी महीनों व सालों चलती रहती है व बहुत सारी सेंसर नोड (65000) इस नेटवर्क में कनेक्ट हो सकती हैं। इस नेटवर्क में नोड काम करना बंद कर दे या नई नोडों को रख दिया जाए, या नोड़ की जगह बदल दी जाए तो भी नेटवर्क को नुकसान नहीं होता क्योंकि जिग्बी नेटवर्क एक तदर्थ (Adhoc) पद्धति पर काम करता है।

5. सोसाइटी को फायदे

इलेक्ट्रॉनिक हेल्थकेयर सिस्टम रोगी व डॉक्टर दोनों के लिए फायदेमंद है क्योंकि रोगी को डॉक्टर के पास जाने की जरूरत नहीं पड़ती न ही डॉक्टर को कन्सल्टेंशन के लिए रोगी के घर पर या अस्पताल में आने की जरूरत पड़ती है जब तक कि कोई इमरजेंसी न पड़ जाए। शरीर में अगर छोटी सी भी कोई बीमारी होती है (जैसे दिल की धड़कन में बदलाव या खून में ऑक्सीजन की कमी) तो शरीर पर लगे सेंसर उसका पता लगा लेते हैं जबकि इंसान इसकी परवाह नहीं करता है। यह डेटा जब डॉक्टर के पास पहुंचता है तो वह तुरन्त इलाज शुरू कर देता है व रोगी की जान का खतरा टल जाता है। आजकल कुछ लोगों को सोते हुए दिल का दौरा पड़ता है जिसका खुद को भी पता नहीं लगता। अगर ऐसे लोगों को ई.सी.जी. सेंसर सिस्टम लगा हुआ हो तो दिल का दौरा पड़ने पर डॉक्टर के पास डेटा पहुंच जाएगा व इमरजेंसी अलार्म भी दोनों रोगी व डॉक्टर के पास बज जायेगा।

हमारे देश में हर साल करीब 27000 विद्यार्थी डॉक्टर बनकर निकलते हैं जिनमें 75 प्रतिशत डॉक्टर शहर में रहकर ही काम करना पसंद करते हैं जबकि भारत की 70 प्रतिशत जनसंख्या गांवों में रहती है। गांवों में डाक्टरों की कमी होने की वजह से रोगियों को जिला अस्पताल में या शहर के बड़े अस्पतालों में जाना पड़ता है। इसलिए अस्तपतालों में हमेशा भीड़ ही नज़र आती है। हमारे देश में हर 30,000 की जनसंख्या पर प्रथम स्वास्थ्य केन्द्र होते हैं व हर 5000 की जनसंख्या पर स्वास्थ्य सब-सेंटर होते हैं। अगर इन स्वास्थ्य केन्द्रों में इलेक्ट्रॉनिक हेल्थकेयर सिस्टम लगा दिए जाएं तो गांव के लोगों का स्वास्थ्य नियमित रूप से चेक किया जा सकता हैं। अगर किसी रोगी की तबीयत ज्यादा खराब हो तो उसके घर पर भी कम कीमत का सिस्टम लगातार निगरानी रखने के लिए लगाया जा सकता है। यह सिस्टम बुजुर्गों की असाध्य

बीमारियों, जैसे दिल का दौरा पड़ना, डायबिटिज, अस्थमा का जल्दी ही पता लगा सकता है व डाक्टर इलाज चालू कर सकता है। यह सिस्टम घरों, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों, फिटनेस केन्द्रों, बुजुर्गों के निवास स्थानों, नर्सिंग होम व क्लीनिक में लगाया जा सकता है।

मार्केट डाइनेमिक्स रिपोर्ट 2008 के अनुसार विश्व में 2012 तक 2500 करोड़ डॉलर हर साल बचाए जा सकते हैं क्योंकि बीमार होने पर ज्यादा लोगों को अस्पताल में जाना पड़ता है। बीमारी बढ़ गई तो अस्पताल में भर्ती होना पड़ता है, व असाध्य बीमारी हो तो महीनों अस्पताल में रहना पड़ता है। इन सबके लिए रोगी को काफी धन खर्च करना पड़ता है, परेशानी भी होती है व काफी समय भी गंवाना पड़ता है।

निष्कर्ष

इलेक्ट्रॉनिक हेल्थ केयर सिस्टम के द्वारा जनता को स्वस्थ रखा जा सकता है। 90 प्रतिशत रोगों को शुरुआत में ही पकड़ कर इलाज चालू किया जा सकता है। इससे पूरा देश रोग मुक्त होकर क्वालिटी ऑफ लाइफ व क्वालिटी ऑफ केयर एक्सेस कर सकता है।

आभार

लेखक डॉ. जार्ज वर्की, कार्यकारी निदेशक व श्री वी.बी. तनेजा, निदेशक (शैक्षणिक) सी-डैक, नोएडा का आभारी है जिन्होंने यह लेख लिखने के लिए प्रेरित किया व समय-समय पर मार्गदर्शन किया। लेखक श्री जे.सी. सेठी, हिन्दी अधिकारी को धन्यवाद देना चाहता है जिन्होंने इस लेख को एडिट करके छपने लायक बनाया।

संदर्भ

1. डॉ. प्रेम चंद जैन, 'जिग्बी नेटवर्क तकनीक व इसकी उपयोगिता' अभिव्यक्ति, प्रथम अंक, 2009 पृष्ठ 11 से 15

- डॉ. प्रेम चंद जैन
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष,
स्कूल ऑफ इलेक्ट्रॉनिक्स

हिन्दी का पौधा दक्षिणवालों ने त्याग से सींचा है।
- शंकरराव कप्पकेरा

ई-लर्निंग - भविष्य शिक्षा का !

1. प्रस्तावना

आज के दौर में परंपरागत माध्यम के अध्यापन के साथ-साथ ई-लर्निंग का प्रयोग भी बहुतायत में हो रहा है। बहुत सारे संस्थान राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी शिक्षण प्रणाली की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए ई-लर्निंग का प्रयोग कर रहे हैं। उदाहरण के लिए दिल्ली विश्वविद्यालय, अमिटी विश्वविद्यालय, भारतीय प्रबंधन संस्थान (IIM), बंगलौर, भारतीय कानून संस्थान, दिल्ली, स्टैन्डफोर्ड विश्वविद्यालय, ब्रिटिश ओपेन विश्वविद्यालय आदि।

ई-लर्निंग एक ऐसी प्रभावशाली शिक्षा है जिसमें शिक्षण सामग्री (ई-लर्निंग कन्टेंट्स) ऑन-लाइन उपलब्ध होती हैं और छात्रों के शिक्षण क्रिया-कलापों का आकस्मिक डेटा संकलित होता है। आज के दौर में ई-लर्निंग के क्षेत्र में बहुत सारी ओपेन सोर्स प्रबंधन प्रणाली शिक्षा (LMS) और पब्लिशिंग टूल्स इंटरनेट पर मुफ्त में उपलब्ध हैं। जिसका उपयोग कर के कोई भी संस्थान ई-लर्निंग प्रणाली को स्थापित कर सकता है। परिणामस्वरूप, आज हमें लगभग हर विषय की शिक्षण सामग्री (ई-लर्निंग कन्टेंटस) इंटरनेट पर मुफ्त या बहुत कम दूरी पर उपलब्ध हो जाएगी। लेकिन इस शिक्षण सामग्री की गुणवत्ता पर आज भी प्रश्न चिन्ह लगा हुआ है।

2. गुणवत्ताशील शिक्षण सामग्री (ई-लर्निंग कन्टेंट्स) की उत्पत्ति

ई-लर्निंग की सफलता प्रमुख रूप से शिक्षण सामग्री (ई-लर्निंग कन्टेंट्स) की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। शिक्षण सामग्री की रूपरेखा इस तरह से तैयार की जानी चाहिए ताकि तैयार की गई शिक्षण सामग्री स्वतः स्पष्ट हो। इसीलिए ई-लर्निंग प्रणाली की सफलता के लिए मानक और उचित प्रतिमान (मॉडल) के उपयोग की बेहद आवश्यकता होती है। आज के दौर में बहुत ही प्रसिद्ध नमूना जिसका नाम चार चतुर्थांश प्रतिमान (Four Quadrant Model) है, का उपयोग बहुत तेजी से हो रहा है। इस प्रतिमान (मॉडल) को वैज्ञानिक गाबी विथौस ने 2009 में विकसित किया था जिसे आगे चित्र द्वारा प्रदर्शित किया गया है।

(I) व्याख्यान	(II) प्रदर्शन
वेब आधारित नोट और सामग्री के वीडियो व्याख्यान	एनिमेशन/विजुअल्स/वीडियो प्रदर्शन/इंटरएक्टिव सिमुलेशन
पूरक पठन, विकी/ शब्दावली, प्रकरण अध्ययन, किसी विषय का ऐतिहासिक विकास	समस्याएं, प्रश्नोत्तरी, एसाइनमेंट और समाधान, चर्चा मंचों के माध्यम से ऑनलाइन प्रतिक्रिया और अक्सर किए गए सवाल
(IV) संदर्भ	(III) परीक्षण

चित्र: 1. चार चतुर्थांश प्रतिमान (Four Quadrant Model)

यह प्रतिमान (मॉडल) प्रदर्शित करता है कि, सभी शिक्षण क्रिया-कलाप एक या एक से अधिक चतुर्थांश के द्वारा व्यक्त किए जा सकते हैं।

प्रथम चतुर्थांश

इस चतुर्थांश के अन्तर्गत शिक्षण सामग्री (ई-लर्निंग कन्टेंट्स) में वेब आधारित नोट और वीडियो

व्याख्यान को सम्मिलित किए जाने पर जोर दिया जाता है। वेब आधारित नोट की सहायता से किसी विषय के शब्दों द्वारा व्याख्या की जाती है, तथा सामग्री के वीडियो व्याख्यान द्वारा प्रवक्ता के व्याख्यान को अभिलिखित (रिकॉर्ड) किया जाता है और उत्पन्न वीडियो फाइल को शिक्षण सामग्री (ई-लर्निंग कन्टेंटस) में सम्मिलित किया जाता है।

द्वितीय चतुर्थांश

इस चतुर्थांश के अन्तर्गत शिक्षण सामग्री (ई-लर्निंग कन्टेंट्स) में एनिमेशन/विजुअल्स/वीडियो प्रदर्शन/इंटरएक्टिव सिमुलेशन को सम्मिलित किए जाने पर जोर दिया जाता है। ये सारी सुविधाएं शिक्षण सामग्री में जीवंतता भर देती हैं।

तृतीय चतुर्थांश

इस चतुर्थांश के अन्तर्गत शिक्षण सामग्री (ई-लर्निंग कन्टेंट्स) में समस्याएं, प्रश्नोत्तरी, एसाइनमेंट और समाधान, चर्चा मंचों के माध्यम से ऑनलाइन प्रतिक्रिया और अक्सर किए गए सवाल (FAQ) को सम्मिलित किए जाने पर जोर दिया जाता है। यह विशेषत: उपयोगकर्ता के ज्ञान की परीक्षा लेने तथा दो या दो से अधिक उपयोगकर्ताओं को आपस में ऑनलाइन प्रतिक्रिया देने में सहायक होता है।

चतुर्थ चतुर्थांश:

इस चतुर्थांश के अन्तर्गत शिक्षण सामग्री (ई-लर्निंग कन्टेंटस) में पूरक पठन, विकी/शब्दावली, प्रकरण अध्ययन, किसी विषय के ऐतिहासिक विकास को सम्मिलित किए जाने पर जोर दिया जाता है। पूरक पठन किसी विषय का सम्पूर्ण विवरण शामिल करने में सहायता करता है। विकी/शब्दावली शिक्षण सामग्री में सम्मिलित किए गए कुछ जरूरी शब्दों का अर्थ बताता है। प्रकरण अध्ययन किसी प्रकरण को शामिल करने की सलाह देता है। यह चतुर्थांश किसी विषय के ऐतिहासिक विकास, मतलब उसकी भूतपूर्व घटनाओं का विवरण प्रस्तुत करता है।

यह बात गौर करने योग्य है कि शिक्षण सामग्री (ई-लर्निंग कन्टेंट्स) का सफल अथवा असफल उत्पादन उसके शुरुआती ढ़ाँचे पर निर्भर करता है। चार चतुर्थांश प्रतिमान (Four Quadrant Model) आधारित, शिक्षण सामग्री (ई-लर्निंग कन्टेंटस) का उदाहरण चित्र द्वारा प्रदर्शित किया गया है।

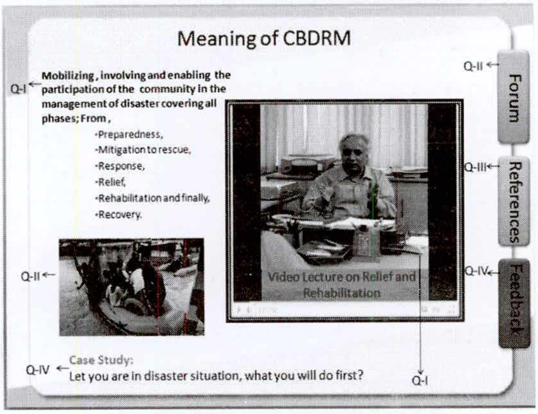

चित्र: 2. चार चतुर्थांश प्रतिमान (Four Quadrant Model) आधारित शिक्षण सामग्री (ई-लर्निंग कन्टेंट्स)

ई-लर्निंग मानक जैसे स्कॉर्म (SCORM) 2.0 अथवा स्कॉर्म (SCORM) 2004 एविएशन इंडस्ट्री सीबीटी कमेटी (AICC), एडवांस्ड डिस्ट्रिब्यूटेड लर्निंग (ADL), इंस्ट्रक्शन मैनेजमेंट सिस्टम (IMS) आदि का प्रयोग शिक्षण सामग्री (ई-लर्निंग कन्टेंटस) के उत्पादन में किया जाता है। इन सबका विवरण संक्षेप में नीचे दिया जा रहा है।

स्कार्म (SCORM):

इस मानक का विकास अमरीकी सरकार ने अपनी

सैन्य सेवा के लिए किया था। लेकिन आजकल यह मानक विश्व भर में लगभग समस्त शैक्षणिक संस्थानों द्वारा उपयोग किया जा रहा है। यह मानक शिक्षण सामग्री (ई-लर्निंग कन्टेंट्स) में ऑनलाइन परीक्षण की सुविधा प्रदान करता है।

एविएशन इंडस्ट्री सीबीटी कमेटी (AICC):

इस मानक का उपयोग हवाई जहाज संचालकों द्वारा निर्देश विकसित करने में किया जाता हैं।

एडवांस्ड डिस्ट्रिब्यूटेड लर्निंग (ADL):

यह अमेरिकी रक्षा मंत्रालय और व्हाइट हाउस के वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी कार्यालय द्वारा विकसित एक प्रोग्राम है। इसका उपयोग उच्च स्तरीय विकास और तीव्र एवं प्रभावी वितरित शिक्षण लागू करने के लिए जरूरी तौर-तरीके विकसित करने में किया जाता है।

इंस्ट्रक्शनल मैनेजमेंट सिस्टम (IMS):

इस मानक की स्थापना 1997 में की गई। शुरुआती दौर में इसका मुख्य उद्देश्य उच्च स्तरीय शिक्षा प्रदान करना था। बाद में इसने अपने उद्देश्य को और विस्तारित किया तथा ई-लर्निंग सर्वर, शिक्षण सामग्री (ई-लर्निंग कन्टेंट्स) इत्यादि के मानक पर ध्यान केंद्रित किया।

3. ई-लर्निंग में आधुनिक विकास:

- वर्चुवल क्लास
- एम-लर्निंग

वर्चुवल क्लास:

यह बहुत सारे आनलाइन यूजर को एक साथ वार्तालाप करने की सुविधा प्रदान कराती है। विशेषत: यह वास्तविक कक्षा जैसा वातावरण तैयार कराती है, इसलिए इसको वर्चुवल क्लास की संज्ञा दी गई है।

एम-लर्निंग (M-Learning)

इस तरीके में ई-लर्निंग कोर्स को मोबाइल उपकरण के जरिए उपलब्ध कराया जाता है। इससे ई-लर्निंग और भी सुविधाजनक बनती है, क्योंकि यह सूचना को किसी भी समय और विशेषत: किसी भी जगह पर उपलब्ध कराने की क्षमता रखता है।

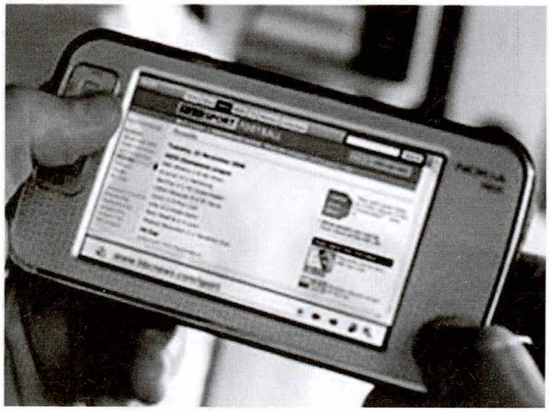

चित्र: 3. एम-लर्निंग का प्रदर्शन

एम-लर्निंग पोर्टेबिलिटी की सुविधा प्रदान कराता है, क्योंकि इसमें भारी वजन की किताबों के बदले छोटी-सी रैम का उपयोग होता है। इस तरीके से सामग्री को बड़ी आसानी से मैसेज के रूप में आपस में भेज सकते हैं। एम-लर्निंग की बहुत सारी विशेषताएं हैं, जैसे मोबाइल का उपयोग संगणक के उपयोग से सस्ता पड़ता है, इसे कहीं भी ले जाया जा सकता है, अर्थात आफिस, घर इत्यादि। मोबाइल के आकार और उसके वजन को ध्यान देते हुए यह साफ है की यह विकलांग व्यक्तियों के लिए बहुत ही उपयोगी है।

वास्तव में, ई-लर्निंग ने शिक्षा जगत में अदभुत बदलाव ला दिया है। इसने परम्परागत शिक्षा को और उन्नत बनाया है। इसकी सहायता से हम आज

किसी भी समय और किसी भी दूरी से शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। इसकी सहायता से ही यह सम्भव हो पाया है कि आज हर क्षेत्र में तथा हर स्तर के उपयोगकर्ता के लिए ई-लर्निंग सामग्री उपलब्ध हो सकी है। यह बात अत्यंत गौर करने योग्य है कि ई-लर्निंग का विकास हर क्षेत्रीय भाषा में बहुत तेजी से हो रहा है।

ई-लर्निंग की दिनोंदिन प्रगति को देखते हुए यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इसका प्रयोग भविष्य में एक जरूरत बन जाएगा।

4. सी-डैक नोएडा में ई-लर्निंग का विकास:

सी-डैक नोएडा, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा अनुदानित परियोजना 'ई-कन्टेंट्स, जेनरेशन एंड ई-स्किल टेस्ट इन स्पेशलाइज्ड एरिया ऑफ इंफोर्मेशन टेक्नोलॉजी के अंतर्गत चार चतुर्थांश नमूना आधारित शिक्षण सामग्री (ई-लर्निंग कन्टेंट्स) विकसित कर रहा है। यह शिक्षण सामग्री, बहुमाध्यम (मल्टीमीडीया) से युक्त होगी जिसके कारण इसकी गुणवत्ता उच्च होगी, इस शिक्षण सामग्री को अत्यधिक प्रभावशाली बनाने के लिए निरंतर चलने वाले वीडियो व्याख्यान का विकास किया जा रहा है।

सी-डैक नोएडा द्वारा संचालित दूसरी परियोजना 'क्रिएशन ऑफ इंफ्रास्ट्रक्चरल फैसिलिटी फॉर वर्चुवल क्लास रूम एट सी-डैक नोएडा' के अंतर्गत वीडियो रिकॉर्डिंग के लिए कमरा बनाया जाएगा जिससे विकसित वीडियो व्याख्यान को शिक्षण सामग्री (ई-लर्निंग कन्टेंट्स) में सम्मिलित किया जाएगा। शुरुआती दौर में इस अभिलिखित (रिकॉर्डेड) शिक्षण सामग्री अथवा जीवंत वीडियो व्याख्यान को सी-डैक नोएडा के छात्रों को उपलब्ध कराया जाएगा और भविष्य में सी-डैक नोएडा के सुदूर केंद्रों पर भी प्रसारित किया जाएगा।

5. उपसंहार

ई-लर्निंग की व्यापकता को देखते हुए, यह कहना अतिश्योक्ति न होगी कि ई-लर्निंग आज के दौर में समस्त शैक्षणिक संस्थानों का अभिन्न अंग बन गया है। इसकी लोकप्रियता का कारण इसकी गुणवत्ता ही नहीं है बल्कि इसमें लागत भी बहुत कम है और इसकी सहायता से शिक्षण सामग्री (ई-लर्निंग कन्टेंट्स) को किसी भी समय उपलब्ध कराया जा सकता है।

चार चतुर्थांश प्रतिमान (Four Quadrant Model) के चुनने से सामग्री के उत्पादन में हमें अत्यधिक सहायता मिली है। उदाहरण के रूप में इसके उपयोग से प्रभावी योजना बनाकर इसमें सभी जरूरी गुणों को शामिल करके उच्च गुणवत्ता की शिक्षण सामग्री (ई-लर्निंग कन्टेंट्स) बनाना संभव हुआ है।

- संतोष कुमार, व्याख्याता
- लक्ष्मी कल्याणी, वरिष्ठ व्याख्याता
- वी. के. शर्मा, सह निदेशक
फिनिशिंग स्कूल

हिन्दी के पौधे को हिन्दू और मुसलमान दोनों ने सींचकर बड़ा किया है।
- जहूरबख़्श

परमाणु तकनीक - वरदान या अभिशाप

परमाणु तकनीक वरदान या अभिशाप

भारत में विद्युत ऊर्जा का परमाणु विकल्प चौथे बड़े ऊर्जा संसाधन के रूप में स्थापित है जिससे प्रतिवर्ष लगभग 5,000 मेगावाट बिजली की आपूर्ति की जाती है। पूरे भारत में इस समय लगभग 20 न्यूक्लीयर रिएक्टर स्थापित किये जा रहे हैं जिनमें छः रिएक्टर कार्यरत हैं, बाकी सभी में निर्माण का काम जारी है। इसमें भारत का परमाणु ऊर्जा उद्योग महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है और भारत सन् 2020 तक 45,000 मेगावाट बिजली के निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त कर लेने में सक्षम होगा।

मार्च 2011 को जापान में आए जबरदस्त भूकंप के बाद सुनामी और क्षतिग्रस्त परमाणु रियक्टरों के द्वारा संक्रमण के बढ़ते खतरे से विश्व के सभी वैज्ञानिक व नेता चिंतित नजर आए। भारत के प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह जी ने भी एक विशेष कमेटी गठित कर भारत के परमाणु संयंत्रों की रक्षा के लिए विशेष रणनीति पर जोर दिया। सभी के चेहरों पर एक ही प्रश्न था कि क्या भारी मात्रा में परमाणु विकिरण के उत्सर्जन को रोका जा सकता है? क्या हमारे यहां भी विकिरण पहुंचेगा? पहुंचेगा तो किस रूप में, समुद्र द्वारा, वायु द्वारा या किसी अन्य रूप में, तब हमको क्या करना होगा? हम किस तरह अपना बचाव करेंगे इत्यादि। जर्मन विशेषज्ञ बेनेर एक्कर्ट कहते हैं कि परमाणु रियक्टरों को बंद करने के बाद भी रेडियो विकिरण प्रक्रिया धीरे-धीरे बंद होती है। उसके भीतर परमाणु विखंडन की प्रक्रिया (चेन रिएक्शन) भी धीरे-धीरे थमती है जिसे एक साथ कभी भी रोका नहीं जा सकता है। जापान से सबक लेते हुए जून माह के प्रथम सप्ताह में जर्मनी ने घोषणा की, कि साल 2022 तक वह देश के 14 परमाणु संयंत्रों को बंद कर देगा। जापान में आये परमाणु संकट के बाद जर्मनी ऐसा पहला देश है जो पूर्णतः परमाणु ऊर्जा को समाप्त कर सकता है।

क्या है रेडियोधर्मी परमाणु विकिरण

परमाणु रेडियोधर्मी विकिरण जिसे हम रेडिएशन (Radiation) कहते हैं, एक अदृश्य किरणें व कण हैं, जो यूरेनियम, प्लूटोनियम जैसे रेडियो धर्मी तत्वों के नाभिकों के टूटने से युक्त होते हैं। इस प्रक्रिया में मुख्य रूप से तीन प्रकार की किरणें पैदा होती हैं- एल्फा, बीटा और गामा। एल्फा किरणें जो ऊपर की त्वचा को भेद पाती हैं, त्वचा कैंसर, थाइराइड, अस्थि कैंसर व ब्लड कैंसर आदि उत्पन्न करती हैं। बीटा किरणें (सेजियम 137, आयोडीन 131 और स्ट्रोन्शिम 90) के विघटन से उत्पन्न होती हैं। गामा किरणें जो वास्तव में विद्युत-चुम्बकीय (Electro-magnetic) विकिरण हैं। हमारे जीनों (Genes) तक को क्षतिग्रस्त कर देती हैं। एक मैगजीन में दी जानकारी के अनुसार यदि किसी व्यक्ति को एक वर्ष में 100 मिली सीवर्ट (SV) Radiation झेलना पड़ जाए तो उससे कैंसर होने की सम्भावना अत्यधिक होती है।

विकिरण की अंतरराष्ट्रीय इकाई (Unit)

रेडियोधर्मी विकिरण (Radiation) को अंतरराष्ट्रीय इकाई सीवर्ट (SV) में मापा जाता है। यह नामकरण

स्वीडन के वैज्ञानिक रोल्फ सीवर्ट के नाम पर किया गया है। एक सीवर्ट 1000 मिली सीवर्ट (m SV) के बराबर होता है।

जापानी सरकार द्वारा फफूशिमा बिजली घर के पास विकिरण (Radiation) की मात्रा 400 मिली सीवर्ट प्रति घंटे मापी गई जो उस मात्रा के बीस गुणा के बराबर है जो परमाणु संयत्र में काम करने वाले व्यक्ति की वर्ष की स्वीकृत मात्रा है। अर्थात रेडिएशन कर्मी को प्रति वर्ष लगभग 20 मिली सीवर्ट रेडिएशन झेलना पड़ता है।

परमाणु विखंडन की जटिल प्रक्रिया

परमाणु रिएक्टर केन्द्र में लगी परमाणु ईंधन की छड़ों, जिनमें यूरेनियम या प्लूटोनियम भरा होता है, पर न्यूट्रॉन कणों की बौछार की जाती है। एक बार शुरू होने के बाद यह क्रिया अपने आप आगे निरंतर चल सकती है जिसमें न्यूट्रॉन कणों की टक्कर से टूटने वाले यूरेनियम, प्लूटोनियम के हर नाभिक (Nuclear) से एक ओर न्यूट्रॉन कण छटके और वह एक ओर नाभिक को टक्कर मारे अगर ऐसा न हो तो परमाणु विखंडन की क्रिया रुक जाती है। लेकिन वास्तव में हर न्यूट्रॉन की टक्कर से यूरेनियम या प्लूटोनियम के हर नाभिक से एक ही नहीं दो या तीन न्यूट्रॉन छटक कर अलग होते हैं। इसलिए इसे नियंत्रित करने के लिए बार-बार बीच में रोकना पड़ता है। इस तरह सुनिश्चित किया जाता है कि रिएक्टर में उतने ही न्यूट्रॉन रहें जितने नियंत्रित सतत क्रिया (Chain reaction) के लिए जरूरी हैं।

घातक बीमारियों की सम्भावना

किसी परमाणु बिजली घर के पास जहां प्रति घंटे 400 मिली सीवर्ट रेडिएशन हो जैसा कि जापान के फुफूशिमा में हुआ। एक घंटे ठहरना मतलब घातक बीमारी जैसे कैंसर आदि का आना लगभग तय माना जाता है। इससे न केवल शरीर की कोशिकाएं नष्ट होती हैं बल्कि कोशिकाओं के जीन भी क्षतिग्रस्त होते हैं और बदल जाते है। एक बार पैदा हुआ रेडियो विकरण (Radiation) समय और दूरी के साथ घटता जाता है। लेकिन विकरण पैदा करने वाले तत्व और परमाणु रिएक्टरों से निकला कचरा हजारों लाखों यहां तक कि करोड़ों वर्षों तक विकिरणधर्मी बना रहता है। उदाहरण के लिए प्लूटोनियम ढाई लाख वर्ष तक विकिरणधर्मी बना रहता है।

बचने के उपाय

रेडियोधर्मी विकिरण से बचने या उसका असर घटाने के उपाय बहुत कम हैं। यदि विकिरण (Radiation) संकट आ ही गया है तो यथा संभव घर के दरवाजे खिड़की बंद करके घर में ही रहना चाहिए। प्रदूषित हवा व धूल कणों को सांस के रास्ते भीतर जाने से रोकने के लिए नकाब पहनना चाहिए और बाहर से आने पर कपड़े बदलना व नहाना चाहिए। कई बार आयोडीन की गोलियां लेने की सलाह दी जाती है लेकिन ऐसा तभी करें जब सरकारी विभागों द्वारा ऐसा कहा गया हो। खतरा विकिरण (Radiation) के बाद भी बना रहता है, वे फल-फूल, हरी सब्जियां जो विकिरण के समय खेतों में थी, प्रदूषित हो जाती हैं। प्रदूषण की तीव्रता के अनुपात में उनसे वही बीमारियां हो सकती हैं जो रेडिएशन के सीधे प्रभाव से होती हैं। इसलिए भोजन के मामले में लम्बे समय तक सावधानी बरतनी चाहिए।

- विनोद कुमार शर्मा
वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी,
स्कूल ऑफ इलेक्टॉनिक्स

कम्प्यूटर क्या है?

आज का युग कम्प्यूटर का युग है। आज कम्प्यूटर किसी न किसी रूप में हमारे जीवन से जुड़ा हुआ है। ऐसे में मस्तिष्क में कई बार यह प्रश्न उठता है कि आखिर कम्प्यूटर है क्या? आइए इसी प्रश्न का उत्तर ढूंढने का प्रयास करते हैं। कम्प्यूटर एक ऐसा यंत्र, औजार या डिवाइस (device) है जो हमारे द्वारा दिए गए आंकड़ों (Data) को ग्रहण कर उस पर हमारे द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुसार काम करता है और हमें इच्छित परिणाम प्रदान करता है। जिन निर्देशों के आधार पर कम्प्यूटर काम करता है उन्हें हम प्रोग्राम (Program) कहते हैं। हिन्दी में कम्प्यूटर को संगणक भी कहा जाता है। कई बार कम्प्यूटर के लिए हम लोग पी.सी. (P.C) शब्द का भी प्रयोग करते हैं। पी.सी. एक अंग्रेजी शब्द है जिसका मतलब होता है पर्सनल कम्प्यूटर यानि व्यक्तिगत कम्प्यूटर। आपने शेयर्ड कम्प्यूटर (Shared Computer) का नाम भी सुना होगा। शेयर्ड कम्प्यूटर वह है जिसे कई भिन्न-भिन्न लोग उपयोग करते हैं। विशेष रूप से इसका तात्पर्य उस कम्प्यूटर से है, जो सार्वजनिक या साझा पहुँच के लिए उपलब्ध हों। जैसे शालाएँ, पुस्तकालय, इंटरनेट और गेमिंग कैफ़ेज़ और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर पाए जाने वाले कम्प्यूटर।

कम्प्यूटर से संबंधित शब्दों से परिचय

कम्प्यूटर के विषय में और अधिक जानने से पहले आइए कम्प्यूटर से संबंधित तकनीकी शब्दावली से परिचित हो लें।

डेटा (Data) क्या है?

आपने डेटा शब्द बहुत बार सुना होगा। इसका शाब्दिक अर्थ है आंकड़े लेकिन कम्प्यूटर के क्षेत्र में यह विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त होता है। इसका अर्थ है कुछ तथ्य, अंक और सांख्यिकी का समूह, जिस पर प्रक्रिया करने से अर्थपूर्ण सूचना प्राप्त होती है। जैसे आप किसी स्थान के पूरे महीने के तापमान के आंकड़े एक जगह रखें तो वह मासिक तापमान का आंकड़ा होगा, यानि टैम्परेचर डेटा। कभी-कभी डेटा को रॉ डेटा (Raw Data) भी कहा जाता है। इसका मतलब ऐसा डेटा जिस पर अभी कोई भी प्रक्रिया नहीं हुई है। लेकिन डेटा शब्द का उपयोग हमेशा गणितीय आंकड़ों के सन्दर्भ में ही हो यह कोई आवश्यक नहीं। अक्सर चित्र (Image), वीडियो फाइल (Video File), फोटो (Photo), डॉक्यूमैंट (Documents) आदि भी डेटा कहे जाते हैं।

प्रक्रिया (Process) क्या है?

डेटा जैसे-अक्षर, अंक, सांख्यिकी या किसी चित्र को सुव्यवस्थित करने या उनकी गणना करने को प्रक्रिया कहते हैं। किसी भी डेटा को अर्थपूर्ण जानकारी में बदलने के लिए, उसी प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। इसके बाद इसे विभिन्न व्यक्ति (जिन्हें सूचना की आवश्यकता है) अपने-अपने कार्य के अनुसार प्रयोग कर सकते हैं। जैसे, यदि हम पिछले उदाहरण के मासिक तापमान के डेटा की बात करें तो इस डेटा पर प्रक्रिया कर यह पता लगा सकते हैं कि इस महीने सबसे अधिक तापमान या सबसे कम तापमान क्या रहा या इस

महीने का औसत तापमन क्या था? प्रक्रिया में निम्नलिखित पदों का समावेश होता है।

गणना: जोड़ना, घटाना, गुणा करना, भाग देना, औसत करना।

तुलना: बराबर, बड़ा, छोटा, शून्य, धनात्मक (Positive), ऋणात्मक (Negative)।

निर्णय लेना (Decision Making) : किसी शर्त या तर्क के आधार पर विभिन्न निर्णय लेना।

तर्क (Logic): आवश्यक परिणाम को प्राप्त करने के लिए पदों का क्रम।

प्रक्रिया केवल संख्याओं (अंकों) की गणना को ही नहीं कहते हैं बल्कि कम्प्यूटर की सहायता से दस्तावेजों में त्रुटियाँ ढूंढ़ना, टैक्स्ट को व्यवस्थित करना ऐसे कई काम भी प्रक्रिया कहलाते हैं।

सूचना (Information) क्या है?

जिस डेटा पर प्रक्रिया हो चुकी हो, वह सूचना कहलाती है। अर्थपूर्ण तथ्य, अंक या सांख्यिकी सूचना होती है। दूसरे शब्दों में डेटा पर प्रक्रिया होने के बाद जो अर्थपूर्ण डेटा प्राप्त होता है, उसे ही सूचना कहते हैं।

सूचना के गुण (Quality of information)

निर्णय लेने के लिए हमें सूचना की आवश्यकता होती है। किसी भी सूचना में अग्रलिखित गुण होने चाहिए:

अर्थपूर्णता: सूचना में कुछ न कुछ अर्थ होना चाहिए।

पूर्व जानकारी से सहमति: सूचना को किसी पूर्व जानकारी का अनुमोदन (Validation) करना चाहिए।

पूर्व जानकारी में सुधार: सूचना को किसी पूर्व जानकारी में कुछ जोड़ना चाहिए या उसे सुधारना चाहिए।

संक्षिप्तता: सूचना संक्षिप्त होनी चाहिए।

शुद्धता या यथार्थता: सूचना सही होनी चाहिए ताकि उसके आधार पर निर्णय लिये जा सकें।

कम्प्यूटरों के प्रकार (Type of Computers)

1. अनुप्रयोग के आधार पर कम्प्यूटरों के प्रकार

यद्यपि कम्प्यूटर के अनेक अनुप्रयोग हैं लेकिन प्रमुख अनुप्रयोगों के आधार पर कम्प्यूटरों के तीन प्रकार होते हैं।

1. एनालॉग कम्प्यूटर
2. डिजिटल कम्प्यूटर
3. हाईब्रिड कम्प्यूटर

2. आकार के आधार पर कम्प्यूटरों के प्रकार

आकार के आधार पर हम कम्प्यूटरों को निम्न श्रेणियाँ प्रदान कर सकते हैं-

1. माइक्रो कम्प्यूटर
2. वर्क स्टेशन
3. मिनी कम्प्यूटर
4. मेनफ्रेम कम्प्यूटर
5. सुपर कम्प्यूटर

पर्सनल कम्प्यूटर ऐसे माइक्रो कम्प्यूटर हैं जो विशेष रूप से व्यक्तिगत अथवा छोटे समूह के द्वारा प्रयोग में लाए जाते हैं। इन कम्प्यूटरों को बनाने में माइक्रोप्रोसेसर मुख्य रूप से सहायक होते है। पर्सनल कम्प्यूटर निर्माण विशेष क्षेत्र तथा कार्य को ध्यान में रखकर किया जाता है उदाहरणार्थ-घरेलू कम्प्यूटर तथा कार्यालय में प्रयोग किये जाने वाले कम्प्यूटर। इसके बारे में विस्तार पूर्वक अलग से चर्चा करेंगे।

पर्सनल कम्प्यूटर के मुख्य कार्यों में गेम-खेलना, इन्टरनेट का प्रयोग, शब्द-प्रक्रिया इत्यादि शामिल हैं। पर्सनल कम्प्यूटर के कुछ व्यवसायिक कार्य निम्नलिखित हैं।

1. डिजाइनिंग करना
2.. सेल्स, इन्वेन्ट्री तथा प्रोडक्शन कन्ट्रोल
3. स्प्रेडशीट कार्य
4. एकाउन्टिंग
5. सॉफ्टवेयर निर्माण
6. वेबसाइट डिजाइनिंग तथा निर्माण

कम्प्यूटर के विभिन्न भाग

कम्प्यूटर के मुख्यतः दो भाग होते हैं।

1. हार्डवेयर (Hardware)
2. सॉफ्टवेयर (Software)

हार्डवेयरः कम्प्यूटर के भौतिक हिस्से जिन्हें हम देख या छू सकते हैं वो हार्डवेयर कहलाते हैं। ये भाग मशीनी (मैकेनिकल), इलेक्ट्रीकल (electrical) या इलेक्ट्रॉनिक (electronic) हो सकते हैं। हर कम्प्यूटर का हार्डवेयर अलग-अलग हो सकता है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि कम्प्यूटर किस उद्देश्य के लिए प्रयोग में लाया जा रहा है और व्यक्ति की आवश्यकता क्या है। एक कम्प्यूटर में विभिन्न तरह के हार्डवेयर होते हैं जिनमें मुख्य हैंः सी.पी.यू. (CPU), हार्ड डिस्क (Hard Disk), रैम (RAM), प्रोसेसर (Processor), मॉनीटर (Monitor), मदर बोर्ड (Mother Board), फ्लॉपी ड्राइव आदि। इनकी हम विस्तार से चर्चा आगे करेंगें। कम्प्यूटर के केबल, पावर सप्लाई यूनिट, की बोर्ड (Keyboard), माउस (Mouse) आदि भी हार्डवेयर के अंतर्गत आते हैं। की बोर्ड, माउस, मॉनीटर, माइक्रोफोन, प्रिंटर आदि को कभी-कभी पेरिफेरल्स (Peripherals) भी कहा जाता है।

सॉफ्टवेयरः कम्प्यूटर हमारी तरह हिन्दी या अंग्रेजी भाषा नहीं समझता। हम कम्प्यूटर को जो निर्देश देते हैं उसकी एक नियत भाषा होती है। इसे मशीन लैंग्वेंज या मशीन की भाषा कहा जाता है। इसी मशीन की भाषा में दिए जाने वाले निर्देशों को प्रोग्राम (Program) कहते हैं। 'सॉफ्टवेयर' उन प्रोग्रामों को कहा जाता है, जिनको हम हार्डवेयर पर चलाते हैं और जिनके द्वारा हमारे सारे काम कराए जाते हैं बिना सॉफ्टवेयर के कम्प्यूटर से कोई भी काम करा पाना असंभव है।

मुख्यतः सॉफ्टवेयर दो प्रकार के होते हैं।

1. सिस्टम सॉफ्टवेयर

'सिस्टम सॉफ्टवेयर' ऐसे प्रोग्रामों को कहा जाता है, जिनका काम सिस्टम अर्थात कम्प्यूटर को चलाना तथा उसे काम करने लायक बनाए रखना है। सिस्टम सॉफ्टवेयर की सहायता से ही हार्डवेयर अपना निध ारित काम करता है। ऑपरेटिंग सिस्टम, कम्पाइलर आदि सिस्टम सॉफ्यवेयर के मुख्य भाग हैं।

2. एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर

'एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर' ऐसे प्रोग्रामों को कहा जाता है, जो हमारे रोजमर्रा के कामों को कम्प्यूटर में अधिक तेजी और सरलता से करने में मदद करते हैं। आवश्यकतानुसार भिन्न-भिन्न उपयोगों के लिए भिन्न-भिन्न एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर होते हैं। जैसे लिखने के लिए, आंकड़े रखने के लिए, गाना रिकॉर्ड करने के लिए, वेतन की गणना, लेन-देन का हिसाब, वस्तुओं का स्टॉक आदि रखने के लिए लिखे गए प्रोग्राम ही एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर कहलाते हैं।

- अंशु जैन
तकनीकी अधिकारी, डेवलपमेंट ग्रुप

आधुनिक मोबाइल ऑपरेटिंग सिस्टम का परिचय

पिछले दशक के दौरान, स्मार्ट फोन के तूफान ने दुनिया को जीत लिया और हाल ही में, टेबलेट्स (TABLETS) ने क्षेत्र में प्रवेश किया है। इन मोबाइल उपकरणों ने हमारे जीवन पर एक महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है। स्मार्ट फोन भी एक पी.सी. (PC) की तरह अलग ऑपरेटिंग सिस्टम (विंडोज, लिनक्स इत्यादि) या एक ही ऑपरेटिंग सिस्टम (विंडोज XP: विंडोज 7) के विभिन्न संस्करणों को चला सकते हैं। सामान्यतः एंड्रोयड फोन पर केवल एंड्रोयड के ही संस्करण चलेंगे जबकि एक i-Phone पर केवल IOS के संस्करण ही चलेंगे।
अब इस श्रेणी में कुछ लोकप्रिय ऑपरेटिंग सिस्टम पर एक नजर डालतें हैं:

1. एप्पल IOS : IOS ऑपरेटिंग सिस्टम को आइपैड टच i-Phone के सभी वेरिएंट में एप्पल द्वारा इस्तेमाल किया गया है। जबकि स्मार्ट फोन 90 के दशक में आ गए थे, यह एप्पल था कि सफलतापूर्वक 2007 में पहले i-Phone IOS के पहले संस्करण की रिलीज के साथ जनता को इनसे परिचित कराया।

IOS की सफलता के लिए बेहतर ग्राफिक्स, i-Tunes तथा Capacitive टच स्क्रीन का योगदान मुख्य है। बेहतर ग्राफिक्स i-Phone को उपयोग में आसान बनाते हैं। i-Tunes को app स्टोर के जरिए डाउनलोड किया जा सकता है।

सन् 2010 में i-Pad की शुरुआत ने IOS की लोकप्रियता में वृद्धि की। इसी के साथ एप्पल बाजार का एक विशाल हिस्सा लिए बैठा है। अपनी सीमित प्रकृति के कारण IOS उन्हीं सुविधाओं को उपलब्ध कराता था जो कि एप्पल को उचित लगें। इसलिए विकास समुदाय ने हस्तक्षेप करने का फैसला किया और Jailbreaking आया, जिससे कि ग्राहक अन्य apps जो कि app स्टोर में नहीं हैं को भी इस्तेमाल कर पाएं।

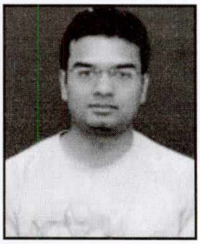

2. एंड्रोयड (Android) : जब एक ऑपरेटिंग सिस्टम Open Source हो तथा लिंक्स, गूगल, HTC, सैमसंग, मोटोरोला इत्यादि के निर्माताओं द्वारा समर्थित हो तो उसका बाजार पर कब्जा करना निश्चित ही है।
शुरू में Android इंक द्वारा विकसित हुआ और 2005 में गूगल द्वारा खरीदा गया। Android कई स्मार्ट फोन पर चलता है। कई नयी रिलीज के साथ हर साल, ऑपरेटिंग सिस्टम लगातार विकसित हो रहा है। वर्तमान में स्मार्ट फोन के लिए नवीनतम संस्करण 2-3-4 जिंजर ब्रैंड है।
आगामी प्रमुख Q3 या Q4 के लिए अनुसूचित रिलीज इस साल की आइसक्रीम सैंडविच कही जाएगी। Android ने IOS को पीट दिया है। यह दुनिया में इस्तेमाल किया जाने वाला स्मार्ट फोन OS बन गया है।

3. सिम्बियन: उपकरणों के निर्माताओं के द्वारा हजारों ऑपरेटिंग सिस्टम दिए गए हैं लेकिन इसकी व्यवसायिक सफलता के बावजूद, यह नोकिया के लिए ठीक नहीं रहा। नोकिया के स्मार्ट फोन किसी भी आलोचक की प्रशंसा प्राप्त करने में विफल हैं।
नोकिया अंततः MeeGo के साथ-साथ सिम्बियन

के चलते अपने स्मार्ट फोन मंच के रूप में है, लेकिन पूरी तरह से इसे छोड़े बिना विंडोज-7 फोन पर स्विच करने का फैसला किया है।

स्मार्ट फोन की दुनिया में सिम्बियन का भविष्य व्यावहारिक रूप से खत्म हो गया है। नोकिया के परित्याग और अधिक से अधिक उपयोगकर्ताओं के Android, IOS और विंडोज 7 फोन के लिए विश्व स्तर पर स्विचिंग के साथ, यह सुरक्षित निष्कर्ष है कि सिम्बियन अब स्मार्ट फोन की दुनिया में नहीं चलेगा।

– विनय जैन
तकनीकी अधिकारी, डेवलपमेंट ग्रुप

मेहनत करने वालों की कभी हार नहीं होती

नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है।
चढ़ती दिवारों पर, सौ बार फिसलती है।
मन का विश्वास, रगों में साहस भरता है।
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है।
आखिर उसकी मेहनत कभी नाकाम नहीं होती।
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।
डुबकियां सिंधु में गोताखोर लगाते हैं।
जा-जा कर खाली हाथ लौट आते हैं।
मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में
बढ़ता दुगना उत्साह इसी हैरानी में।
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती।

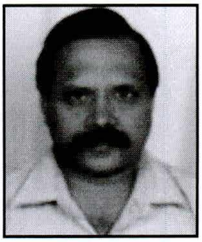

कोशिश करने वालों की कभी
हार नहीं होती।
असफलता एक चुनौती है इसे
स्वीकार करो,
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो,
जब तक न सफल हो, नींद चैन का त्याग करो
संघर्ष का मैदान छोड़कर मत भागो तुम
कुछ किये बिना ही जय जयकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

– **कौशल सक्सेना**
कार्यपालक मानव संसाधन

बड़े काम की छोटी बातें

पेट्रोल/डीजल भरवाने से पहले

पिछले एक साल में पेट्रोल/डीजल की कीमतें जितनी तेजी से बढ़ रही हैं, उतनी तेजी से तो शताब्दी एक्सप्रेस ट्रेन भी नहीं दौड़ती। आजकल के दौर में आम आदमी एक तो बढ़ती हुई महंगाई को नहीं सह पा रहा है और उसके ऊपर पेट्रोल/डीजल के बढ़ते दामों ने तो हम सबकी कमर ही तोड़ दी है। हम पेट्रोल-डीजल के बढ़ते दामों को तो कम नहीं कर सकते लेकिन पेट्रोल/डीजल पम्प से भरवाने से पहले कुछ छोटी-छोटी बातों को ध्यान में रखकर पेट्रोल/डीजल की पूरी मात्रा तो प्राप्त कर ही सकते हैं।

- हम सब इस बात से वाकिफ़ हैं कि पेट्रोल पम्प में पेट्रोल/डीजल को स्टोर करने वाली टंकियां जमीन के अन्दर बनी होती हैं। सुबह के समय जमीन का तापमान कम होता है। जैसे-जैसे तापमान बढ़ता है वैसे-वैसे पेट्रोल व डीजल के अणु फैल जाते हैं। जब तापमान कम होता है तो पेट्रोल/डीजल के कण आपस में सघन हो जाते है। इसलिए हमें अपने वाहन में पेट्रोल/डीजल सदैव सुबह के समय भरवाना चाहिए।
- पेट्रोल/डीजल हवा में बहुत तेजी से वाष्पित होता है। इसलिए हमें अपने वाहन में पेट्रोल/डीजल तभी भरवाना चाहिए जब हमारे वाहन की ईंधन टंकी आधी या उससे थोड़ी ज्यादा भरी हो क्योंकि जितनी ज्यादा टंकी भरी हुई होगी, हवा उतनी ही कम होगी और पेट्रोल/डीजल उतना ही कम वाष्पित होगा।
- जिस समय पेट्रोल/डीजल सप्लाई करने वाला ट्रक या टैम्पो ईंधन की सप्लाई के लिए आए, उस समय हमें यह कोशिश करनी चाहिए कि हम अपने वाहन में ईंधन न भरवाएं। उस समय पेट्रोल/डीजल स्टोर करने वाली टंकी में ईंधन की मात्रा बहुत कम होती है और इस बात की उम्मीद बहुत ज्यादा होती है कि हमारे वाहन में भरे गए ईंधन के साथ कुछ धूल, मिट्टी के कण भी (जो कि पेट्रोल/डीजल स्टोर करने की टंकी के तल में उपस्थित होते हैं) पेट्रोल/डीजल के साथ भरे जाएं।

रोचक बातें हमारे भारत की

- शतरंज के खेल का जन्मदाता हमारा देश भारत है। शतरंज शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा के शब्द 'चतुरंगा' से हुई है जिसका अर्थ है 'सेना के चार सदस्य' जो हाथी, घोड़ा, ऊंट व पैदल सैनिक हैं।
- भारत दुनिया में चाय उत्पन्न करने वाला सबसे बड़ा उत्पादक देश है।
- दुनिया में सबसे ज्यादा ऊँचाई पर बनाया गया क्रिकेट का मैदान चैल, हिमाचल प्रदेश में स्थित है। यह मैदान समुद्र तल से 2444 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है।
- दुनिया भर में सबसे ज्यादा डाक घर भारत में हैं।

- भारत का सबसे बड़ा नियोक्ता भारतीय रेल है। जिसमें दस लाख से ज्यादा कर्मचारी हैं।
- चिकित्सा के क्षेत्र में पैदा होने वाला सबसे बड़ा माध्यम आयुर्वेद है। आयुर्वेद चिकित्सा के पिता चरख ने 2500 वर्ष पूर्व आयुर्वेद का व्याख्यान किया था।
- दुनिया भर में सन् 1986 से पहले भारत देश अकेला ही हीरे का सबसे बड़ा स्रोत था।
- दुनिया भर में सबसे ज्यादा ऊँचाई पर बनाया गया पुल बैली है जो हिमाचल प्रदेश में स्थित है। इस पुल का निर्माण भारतीय सेना ने अगस्त 1982 में द्रास और सुरु नदी के बीच किया।
- भारत दुनिया के 90 देशों में सॉफ्टवेयर का निर्यात करता है।
- मार्शल आर्ट की उत्पत्ति सबसे पहले भारत देश में हुई थी। जिसका प्रसार बाद में बौद्ध भिक्षुओं ने रूस में किया।
- बीजगणित, त्रिकोणमिति और कैल्क्यूलस की उत्पत्ति भारत में हुई।
- दुनिया का सबसे बड़ा प्रजातंत्र भारत में है।
- दुनिया का ग्रेनाइट से बना हुआ सबसे पहला मंदिर तमिलनाडु में स्थित बृहदेश्वर मंदिर है।
- दुनिया का सबसे पहला विश्वविद्यालय तक्षशिला है जिसकी स्थापना भारत में 700 ईसा पूर्व हुई थी।

– पूजा शर्मा, कनिष्ठ कार्यकारिणी
मानव संसाधन प्रभाग

भाषा के जरिए ही हम एक आदर्श समाज की कल्पना कर सकते हैं।
-डॉ. मनमोहन सिंह, भारत के प्रधानमंत्री

रहट

एक बार एक राहगीर खेतों में से निकल रहा था। चलते-चलते उसे बहुत जोर से प्यास लगी। उसे आसपास कहीं पानी दिखाई नहीं दिया। प्यास के मारे उसकी जान निकली जा रही थी। अचानक उसे एक रहट चलता हुआ दिखाई दिया, पर उसे कुछ समझ नहीं आया कि पानी कैसे पिया जाए। उसने पास खड़े एक किसान को अपनी समस्या बताई। किसान ने उसे कहा कि रहट चल रहा है इससे पानी पी लो। तब राहगीर ने कहा कि इसके चलने पर तो बहुत शोर हो रहा है, मैं ऐसे पानी नहीं पी पाउंगा। पहले तुम यह शोर बंद करो फिर मैं पानी पिऊंगा। तब किसान ने उसको बताया कि भाई, अगर पानी पीना है तो इसी शोर के चलते ही पीना पड़ेगा, क्योंकि जब तक शोर है तब तक ही पानी आ रहा है, जैसे ही शोर बंद होगा, रहट का चलना भी बंद हो जाएगा और रहट के बंद होने से भैया पानी आना भी बंद हो जाएगा।

यही हाल हमारे जीवन का है। कुछ लोग कहते हैं कि जब हमारी समस्याएं सुलझ जाएंगी, दुखों और समस्याओं का शोर बंद होगा हम तभी परमात्मा को याद करेंगे। परंतु वे यह भी भूल जाते हैं कि जब तक जीवन है तब तक दुःख-सुख तो चलते रहेंगे, वो बंद होने वाले नहीं हैं। सुख-दुःख रूपी शोर तो जीवन के साथ ही समाप्त होंगे, उससे पहले नहीं। हमें चाहिए कि हम जब तक जीवित हैं, इन्हीं सुखों-दुखों के चलते ही भगवान के नाम रूपी जल से अपने जीवन की प्यास बुझाएं, उसे तृप्त करें।

संजय कुमार
कार्यालय सहायक, प्रशासन

देश को एक सूत्र में पिरोने वाली भाषा हिन्दी ही हो सकती है।
- लाल बहादुर शास्त्री

कार्य एवं निजी जीवन में संतुलन की स्थापना

व्यावसायिक जीवन एवं निजी जीवन एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। वे आपस में जुड़े तथा परस्पर एक दूसरे पर आश्रित हैं। कार्यालय में अधिक समय लगना, ग्राहकों के साथ तालमेल बैठाना तथा कार्य का दवाब, व्यक्तिगत जीवन में हस्तक्षेप कर उसे प्रभावित कर सकता है। कभी-कभी घर के कार्य पूर्ण करना भी असंभव सा हो जाता है। इसके विपरीत यदि किसी व्यक्ति के घर में कोई छोटा बच्चा अथवा वृद्ध माता-पिता हैं, वित्तीय समस्याएं हैं अथवा किसी करीबी रिश्तेदार के जीवन में समस्या है तब भी निजी जीवन तनावपूर्ण हो जाता है। इससे ड्यूटी से अनुपस्थिति, तनाव तथा कार्य की एकाग्रता में कमी की उत्पत्ति होती हैं।

व्यावसायिक जीवन तथा निजी जीवन में सामन्जस्य से संबंधित सर्वेक्षण में यह पाया गया कि 60 प्रतिशत से अधिक उत्तरदाता अपने व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक जीवन के बीच संतुलन बनाने में अक्षम हैं। जब उनके व्यावसायिक जीवन एवं निजी जीवन में संतुलन नहीं आ पाता तो उन्हें कठिन विकल्प अपनाने पड़ते हैं। परम्परागत तौर से व्यावसायिक जीवन तथा निजी जीवन के मध्य संतुलन की उत्पत्ति करना तथा उसे मैनेज करना स्त्री का उत्तरदायित्व माना गया है परन्तु कार्य का बढ़ता हुआ दबाव, ग्लोबलाइजेशन तथा प्रौद्योगिकीय उन्नति ने विश्व भर में सभी उद्योगों एवं सभी क्षेत्रों में पुरुष और महिला पेशेवर-दोनों को ही जिम्मेदार माना हैं। व्यावसायिक जीवन और निजी जीवन में संतुलन की प्राप्ति उतनी सरल नहीं है जितनी मालूम पड़ती है। हम सभी अपने व्यावसायिक जीवन एवं घरेलू जीवन के मध्य एक अच्छा संतुलन चाहते हैं। जब हमें लगता है कि व्यवसाय/ जॉब हमारी घरेलू गतिविधियों में बाधक है अथवा हमारी घरेलू जिन्दगी व्यवसाय/जॉब में समस्याएं उत्पन्न कर रही है, तब हमें पता चलता है कि इससे हमारे जीवन की गुणवत्ता प्रभावित होती है। परन्तु हममें से कितने इस तथ्य को समझते हैं कि हमारे संगठन की भलाई एवं उसके कुशल संचालन के लिए जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अच्छा संतुलन बनाए रखना भी कितना महत्वपूर्ण है।

व्यावसायिक जीवन और निजी जीवन में संतुलन सुनिश्चित करने हेतु कर्मचारियों के फायदे के ऐसे कई उपाय हैं जिन्हें कम्पनियां अपनाती हैं, जैसे- कार्य समय में फ्लैक्सीबिल्टी, शिशु सुरक्षा सुविधाएं (चाइल्ड केयर फैसिलिटीज), वीडियो कॉन्फ्रेंन्सिंग से यात्रा में कमी, बच्चों के विद्यालय में अध्यापक/अध्यापिका से मिलने जाने के लिए महीने में एक आधे दिन की छुट्टी, विद्यालयों में अवकाश के दिनों में कार्यालय के कार्य को समयबद्ध न करना आदि। इनमें व्यावसायिक जीवन व निजी जीवन में संतुलन की नीतियों को लागू करना, संगठन के विजन स्टेटमेंट के प्रति प्रतिबद्धता, एक विशेष कार्य बल की स्थापना, मौजूदा कार्यो की जांच, नीतियों को विकसित करने हेतु कर्मचारियों

के साथ चर्चा करने के लिए बैठकों का आयोजन सम्मिलित है। भारतीय कंपनियों को इस प्रकार की नीतियों को अपनाना होगा जो न केवल उद्योग की प्रकृति, कार्यबल एवं अन्य संबंधित कारकों (फैक्टर्स) के अनुकूल हों, अपितु स्थानीय संस्कृति एवं पर्यावरण से मेल खाती हों।

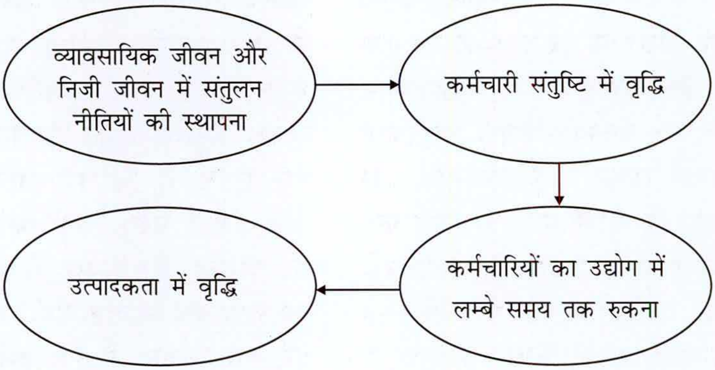

- नेहा बाजपेयी, व्याख्याता
स्कूल ऑफ आई.टी.

करण

शूरवीर वो दानवीर वो, सूतपुत्र कहलाता था,
उसके बाणो की ग़रज़न से, आकाश भी थर्राता था।

रणभूमि में पराक्रम से, छक्के सबके छुड़ा दिए,
अर्जुन जैसे महारथी को, नाको चने चबवा दिए,

कुन्ति पुत्र करण वो एक था,
वचन जो बस निभा पाया,
होती क्या है शील सौम्यता,
मरते दम तक दिखलाया।

- राहुल जीनवाल
कार्यालय सहायक, मानव संसाधन विभाग

हिन्दी भारतीय संस्कृति की आत्मा है।
- कमलापति त्रिपाठी

ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति माँ

माँ का रूप ईश्वरीय प्रतिरूप की अनुभूति दिलाता है। सौन्दर्य, ममता, वात्सल्य, स्नेह जैसे ईश्वरीय गुणों का समन्वित रूप ही माँ है। संपूर्ण विश्व माँ के गुणों से प्रकाशमान है। माँ में इतने अलौकिक गुणों का समावेश है कि सहज मुख से फूट पड़ता है, माँ तेरी सूरत से अलग भगवान की सूरत क्या होगी। 'इहलोक में माँ का पद उत्तम है'। जहां वह है, वहां परोक्षत:, ईश्वर का वास सुनिश्चित हो जाता है। संपूर्ण जगत में नारी को श्रद्धा की प्रतिमूर्ति माना जाता है। क्योंकि उसका माँ रूप सर्वविदित है। वेदव्यास कहते है-'नास्ति मात (समा गति:। नास्ति मात)' समा श्राण, नास्ति मात 'समा प्रिया'। माँ का अन्तर निसर्गत, निर्विकार, निश्छल और नि:स्वार्थ होता है। उसके अन्त:स्थल के स्रावित सदा जीवन को विभोर करती है, कभी भी उन्मन या हताश नहीं होने देती। उसके संग से जीवन यात्रा सुरक्षित और मधुर हो जाती है। यह माँ ही है जो जीवन पराजय का कभी भी अनुभव नहीं देती। माँ की ममता चिर नवीन होती हैं। कभी मुरझाती नहीं उसका आंचल ममता का मंजूषा है, करुणा का क्रोध है जो सौम्य उपलब्ध कराता है। उसकी स्नेहिल छत्र छाया सुकून पहुंचाने वाली होती है। उसके उर की परिधि असीम है जहां निर्मल भावनाओं का अतिरेक होता है। माँ के स्निग्ध, सरल और अनोखे स्वभाव में माधुर्य की आभा होती है जो कौमुदी की भांति सब पर छा जाती है। माँ का त्याग और समर्पण अतुल्य है। नि:संदेह माँ की ममता ईश्वर का प्रतिरूप है। यह माँ वह विशेष शक्ति है जो सदा आगे बढ़ाती है माँ पथ प्रदर्शिका है। जहां माँ काली रूप का विरोध करती है, वहीं यशोदा रूप वात्सल्य की प्रतिमूर्ति है। माँ ममता का मूर्त रूप है, माँ ऊर्जा का स्रोत है। माँ वह अहसास है जो जीवन का सबसे बड़ा सुख है। माँ वसंत है, जाड़े की धूप है। सावन की बरसात है। माँ मरूभूमि में मरूधान है। माँ की इन्हीं विशेषताओं को ध्यान रखते हुए कहा गया है-ईश्वर सर्वत्र नहीं रह सकता इसलिए उसने माँ की रचना की।

- उदय सिंह
परियोजना अभियंता
गुणवत्ता सुधार प्रयोगशाला

स्वस्थ शरीर ही मनुष्य के लिए सर्वोत्तम सुख है तथा शरीर और मन दोनों से स्वस्थ व्यक्ति ही मानव जीवन का सुख भोग सकता है। व्यायाम और योग क्रियाओं द्वारा शरीर और मन दोनों स्वस्थ रखा जा सकता है।

कैप्चा

कैप्चा (Captcha) एक तरह का कंप्यूटर प्रोग्राम होता है जिसका उपयोग स्वचालित अनचाहे कंप्यूटर प्रोग्राम को रोकने के लिए होता है। कैप्चा (Captcha) अर्थात "**C**ompletely **A**utomated **P**ublic **T**uring test to tell **C**omputers and **H**umans **A**part"

कुछ स्वचालित अनचाहे कंप्यूटर प्रोग्राम आपके द्वारा प्रदान की जाने वाली सुविधा की क्वालिटी ऑफ सर्विस (QoS) को नुकसान पहुंचाते हैं जिसके कारण कभी कभी हम सुविधा का उपयोग भी नहीं कर पाते हैं। उदाहरण के लिए आजकल हम जब भी किसी वेबसाइट पर अपना यूज़र अकाउंट (User Account) बनाते हैं तब सबसे अंत में हमें नीचे दर्शाए गए चिन्हों (चिन्ह हर बार बदल जाते हैं) को पहचान कर, उन अंक या अक्षर को फॉर्म पर दी गयी जगह पर टाइप करना पड़ता है, और जब तक हम चिन्हों की पहचान सही नहीं करते हमारा यूज़र अकाउंट (User Account) नहीं बनता है।

ऐसा इसलिए करना पड़ता है क्योंकि कुछ वर्ष पूर्व तक स्वचालित प्रोग्राम हर मिनट लाखों अनचाहे यूज़र अकाउंट बना देते थे, जिसके कारण जरुरत मंद व्यक्ति को अपना यूज़र अकाउंट बनाने में दिक्कत होती थी या फिर वह अपना यूज़र अकाउंट बना ही नहीं पाता था।

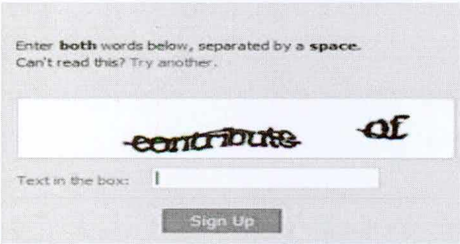

कैप्चा (Captcha) के उपयोग से स्वचालित अनचाहे कंप्यूटर प्रोग्राम दिए गए चिन्हों को नहीं पढ़ पाते हैं जिसके कारण अनचाहे यूज़र अकाउंट की एक हद तक रोकथाम हो जाती है।

इसके अतिरिक्त कैप्चा (Captcha) के और भी उपयोग हैं जैसे:

1. ब्लॉग (Blog) में स्वचालित प्रतिक्रियाओं की प्रविष्टि।
2. डिक्शनरी अटैक (Dictionary Attack) की रोकथाम के लिए।
3. स्पाममेल्स रोकने के लिए।

हालांकि आजकल कैप्चा (Captcha) सौ प्रतिशत रोकथाम कारगर नहीं है परन्तु कैप्चा (Captcha) के उपयोग से स्वचालित अनचाहे कंप्यूटर प्रोग्राम और स्पैमर्स (Spammers) को कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

सुजीत कुमार
वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, डिजाईन

हिन्दी सरल, सुबोध और व्याकरण सम्मत भाषा है।

खूंटी तोड़, मुक्त हो जा !

क्या आप जानते हैं कि सर्कस वाले अपने हाथी को भागने से कैसे रोक पाते हैं? वे शक्तिशाली हाथी के पैर के चारों ओर एक कॉलन बांधते हैं जिसकी बेड़िया जमीन में गढ़े एक छोटे लकड़ी के खूंटे से बंधी होती है। यह 10 फुट लम्बा, 5000 किलो का विशाल (भीमकाय) जीव बहुत सरलता से इन बेड़ियों को तोड़कर, लकड़ी की खूंटी को उखाड़ सकता है और स्वतंत्र हो सकता है। लेकिन वह ऐसा नहीं करता है। वास्तव में वह ऐसी कोशिश भी नहीं करता है। दुनिया का सबसे शक्तिशाली जानवर, जो एक पेड़ को बहुत आसानी से ऐसे उखाड़ सकता है जैसे कि हम और आप एक दांतखोदनी (टूथ-पिक) तोड़ सकते हैं, एक छोटी से खूंटी और जंजीर से बंधा रहता है। कैसे?

क्योंकि जब यह हाथी एक बच्चा था, उसके प्रशिक्षकों ने वास्तव में ऐसे ही तरीकों का इस्तेमाल (प्रयोग) किया। वह अपने पैरों के चारों ओर एक जंजीर से बंधा हुआ था और उस जंजीर का दूसरा छोर ज़मीन में गढ़े हुए एक धातु के खंभ से बंधा था। वह जंजीर और खूंटी बच्चे के लिए काफी मज़बूत थे। जब उसने उन्हें तोड़ने की कोशिश की होगी तो बेड़ियों ने उसे वापस खींचा होगा। कभी-कभी दूर की दुनिया से प्रलोभित होकर हाथी ने जोर से भी खींचा होगा। पर लोहे की मज़बूत बेड़ियां पैर को काटती-छीलतीं, त्वचा में गड़ गई होंगी, खून भी बहा होगा और एक घाव किया होगा जिसकी चोट हाथी के बच्चे के लिए सह पाना कठिन होगा। जल्द ही, हाथी के बच्चे को यह एहसास हो गया कि भागने की कोशिश करना व्यर्थ था। सो, उसने कोशिश बंद कर दी।

और जब बड़ा-विशाल सर्कस का हाथी अपने पैर के चारों ओर एक बेड़ी से बंधा हुआ है, उसे एक बच्चे के रूप में महसूस किया हुआ दर्द याद है। और वह भागने के लिए जंजीर तोड़ने की कोशिश नहीं करता। तो भले ही यह सिर्फ एक बेड़ी है और छोटे से लकड़ी के खूंटे से बंधी है, हाथी अभी भी अचल शान्त खड़ा है। उसे अपनी सीमाएं याद हैं और जानता है कि वह केवल उतनी ही दूर तक चल कर जा सकता है जितना उसे बेड़िया अनुमति देंगी। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि धातु की खूंटी की जगह अब एक लकड़ी की खूंटी ने ले ली है। इससे भी कोई फर्क नहीं पड़ता कि 100 किलो का बच्चा अब एक 5000 किलो का शक्तिगृह बन गया है। तथापि हाथी का विश्वास वही है।

यदि आप इसके बारे में विचार करें तो हम सभी सर्कस के हाथी की तरह ही हैं। हम सभी के अंदर अविश्वसनीय शक्ति है। हम सक्षम हैं दुनिया को मुट्ठी में कर लेने के लिए। और हां, निःसन्देह, हम सभी के अपने खूंटे और जंजीरे हैं। हमारा आत्मक सीमित विश्वास ही है जो हमें पीछे खींचता है या बांधे रखता है। कभी यह बचपन का कोई दुखद अनुभव है तो कभी एक शुरुआती (प्रारंभिक) मिली विफलता है। कभी-कभी यह ऐसा कुछ है जो हम से कहा गया था, जब हम छोटे थे। और फिर यही हमारी बेड़ी और खूंटी बन

जाते हैं, हमें रोक लेते हैं वह करने से जिसे कर पाने में हम सक्षम हैं। रोक लेते वह पाने से जिसे पाने की शक्ति हमेशा से हमारे भीतर रही है। तो अब समय है प्रश्न पूछने के लिए: क्या तुम्हें रोके हुए है? यही समय है पहचानने के लिए: हमारी खूंटी और बेड़ियां क्या हैं?

जब हम छोटे होते हैं तो हम में कई ऐसे अहसास पर बड़े होते है (अक्सर ये सुनते हैं) कि ऐसा मत करो, 'तुम यह नहीं कर सकते' या 'तुम अच्छा नहीं कर रहे हो।' और हम खुद को उच्च लक्ष्य के लिए प्रयत्न करने से रोक लेते हैं। हम कहते हैं 'मैं यह नहीं कर सकता क्योंकि ....' और अपना पसंदीदा (मनपसंद) बहाना कर देते हैं। क्यूंकि 'मैं अंग्रेजी में अच्छी तरह से बात नहीं कर पाता', क्यूंकि 'मैंने एक प्रमुख बी-स्कूल में अध्ययन नहीं किया है।' क्यूंकि 'मैं एक गरीब परिवार से हूँ।' समय के साथ हमारी सीमाओं के बारे में ये मान्यताएं मज़बूत और मज़बूत हो जाती है। ये प्रतिबंधित आत्मविश्वास ही हमारी बेड़ियां बन जाता है जो हमें कोशिश करने से रोक देता है। हालात बदलते हैं, धातु के खंभ के स्थान पर लकड़ी के खूंटे आ जाते हैं- पर हम उसे पहचान ही नहीं पाते हैं। हम कोशिश करना बंद कर देते हैं। हम कोशिश किए बिना ही हार जाते हैं।

और जीवन में, हम अक्सर हाथी के प्रशिक्षक की भूमिका भी निभाते हैं- कभी अभिभावकों, शिक्षकों, सहयोगियों या दोस्तों के रूप में। जब भी ऐसा हो, अपने नन्हे कोमल हाथी को अच्छी तरह देखभाल करना, संभालना याद रखें। क्या यह पीढ़ी महत्वपूर्ण नहीं है। बहुत ज्यादा आलोचनात्मक न बनें। उनकी अवज्ञा मत करो। उन्हें बेड़ियों से एक खूंटी से मत बांधो।

याद रखें, हम सभी में एक हाथी की ताकत है। इसलिए, एक मात्र बेड़ी और खूंटी से तुम मत रुको। यह एक अच्छा विचार है कि कोशिश करो यह पहचानने कि क्या है जो तुम्हें रोके हुए है और अपने स्वयं सीमित विश्वासों की जंजीरों को तोड़ दो। यह दुख की बात है कि जब हम जीवन में हमारी उपलब्धियों को निर्धारित करने के लिए अपनी ताकत और अपनी शक्तियों का नहीं बल्कि हमारी सीमित मान्यताओं का प्रयोग करते हैं।

अब समय है, मुक्त होने के लिए। बेड़ियां तोड़ो। खूंटी निकालो। अपनी क्षमताओं को पहचानो, स्वयं सीमित विश्वास से निकलो, आत्म-विश्वास जगाओ। अपने-आप को आज़ाद करो। आज ही।

भीतर के हाथी को उन्मुक्त करो।

(यह लेख 'कैरियर-360' नामक अंग्रेजी पत्रिका में 'Smash the peg. Set yourself free' नामक शीर्षक से प्रकाशित लेख का हिन्दी अनुवाद है जिसके मूल लेखक श्री प्रकाश अय्यर हैं। मैं श्री प्रकाश अय्यर का आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने मुझे इस लेख का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत करने की अनुमति दी है।

- कृति सरोहा
सहायक प्रोफेसर, स्कूल ऑफ आई.टी.

स्वयं का गुरू बनकर स्वयं को उपदेश देने वाला व्यक्ति लक्ष्य प्राप्त कर लेता है।

कम्प्यूटर लैब

कम्प्यूटर लैब का वह दिन
जब कभी थ्योरी की तरह याद आता है
मेरा दिल रूपी प्रोग्राम
अपने आप कम्पाइल कर जाता है।

सही स्पीड धड़कन की
प्रोसेसर भी नहीं बतलाता है
और उसके चेहरे का कंट्रोल
मेरे दिल की मेमोरी में समा जाता है।

बहारों के वो दिन कुछ इस तरह छा गए थे
कि उस हसीना को देखकर
मेरे सारे प्रेक्टिकल
रिजल्ट समेत आ गए थे

उसकी आंखों का मोनिटर
जब मेरे दिल के की-बोर्ड से टकराया

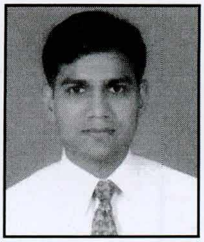

सच कहता हुँ दोस्तो, एक भी
सिगनल
वापिस नहीं जा पाया।
परफेक्ट सिस्टम का इससे
अच्छा उदाहरण
और क्या हो सकता है,
मेरा दिल सुपर कम्प्यूटर को हरा सकता है।

जाकर यह उदाहरण जब मैने अपने शिक्षक को
बतलाया
न जाने किस स्पीड से उन्होंने मेरे गाल पर झापड़
लगाया
कि निशान आज भी नज़र आता है
और जानने वालों को असेंबली लेंग्युज में लिखा
कोई प्रोग्राम नजर आता है।

- उमेश शर्मा
तकनीकी अधिकारी, डिजाइन

भाषा के जरिए ही हम एक आदर्श समाज की कल्पना कर सकते हैं।
-डॉ. मनमोहन सिंह, भारत के प्रधानमंत्री

समस्त उपलब्धियों का मूल है 'मन'

जब तक हमारा जीवन है। हमें कोई न कोई काम करना ही पड़ता है। अत: बेहतर यही होगा कि हम अपनी आत्म संतुष्टि एवं सामाजिक मान्यताओं को ध्यान में रखते हुए ही अपने कार्यों को निर्धारित करें क्योंकि मनुष्य का जीवन ही ऐसा है। जिसमें वो काफी हद तक अपनी इच्छानुसार कर्म करने के लिए आजाद है। व्यक्ति के कर्म के उपरान्त उसे जो सफलताएं या असफलताएं मिलती हैं। उन्हीं के आधार पर हमारा मूल्यांकन एक सफल और असफल व्यक्ति के रूप में होता है।

हम कौन से कर्म करें और कौन से कर्म न करें? यह हमारे मन, बुद्धि और शरीर तीनों के संतुलन पर निर्भर करता है। सर्वप्रथम हमारे मन में कुछ इच्छाएं या विचार आते हैं। उसके बाद उसे कार्य रूप देने के लिए बुद्धि उसकी पूर्ति हेतु हर संभावित सम्भावना पर विचार करते हुए यह तय करती है कि इस इच्छापूर्ति के लिए जो कार्य करेंगे वो कैसे करेंगे? और इसका परिणाम क्या होगा? तत्पश्चात 'शरीर' उपरोक्त योजना पर अमल करते हुए उसे वास्तविक रूप देने के लिए काम करता है।

अत: सफलता के लिए मन, बुद्धि और शरीर तीनों का स्वस्थ होना और संतुलित रूप से कार्य करना आवश्यक है। जिनमें से मन के बारे में सभी जानते हैं कि यह बहुत चंचल होता है। मन की चंचलता के कारण हम अपना कार्य पूरी क्षमता के साथ नहीं कर पाते हैं। हम अक्सर यह अनुभव करते हैं कि जहां हम होते है। वहां हमारा मन नहीं होता है, कहीं और खोया रहता है। कभी भविष्य की कल्पनाओं में उड़ाने भर रहा होता है तो कभी अतीत की घटनाओं को सींचता रहता है और इस प्रकार हम वर्तमान को खो देते है और हमारा

व्यक्तित्व बिखरने लगता है। परिणामस्वरूप, एकाग्रता भंग होने लगती है, और हमारे मन में शान्ति नहीं रहती। अत: सर्वप्रथम हमें मन में शान्ति लाने वाले गुणों को अपनाना चाहिए क्योंकि मन में शान्ति लाने वाले गुण व्यक्तिगत भेद के कारण अलग-अलग हो सकते हैं। लेकिन कुछ विचार ऐसे होते हैं जो प्राय: सभी के मन को शान्त करके अत्मोन्नति में सहायक होते हैं। जैसे-

- अपनी गलती मान लेना शर्म की बात नहीं होती है।
- क्षमा कर देना कायरता की बात नहीं होती है।
- सहनशील होने का मतलब मजबूर होना नहीं है।
- धैर्य धारण करना अकर्मण्यता की बात नहीं होती आदि।

इस प्रकार हमें सर्वप्रथम मन की शान्ति के उपाय एवं मन की चंचलता को रोकने के लिए उद्देश्यपूर्ण जीवन-शैली अपनानी चाहिए। साथ ही साथ शरीर के स्वास्थ्य पर भी ध्यान देना अति आवश्यक है। क्योंकि स्वस्थ्य शरीर में स्वस्थ मन का निवास होता है। शरीर की थोड़ी सी भी पीड़ा मन को प्रभावित किए बिना नहीं रह सकती, जिसमें हमारा

मन किसी भी कार्य को करने की शक्ति और साहस खो बैठता है और उत्साहित नहीं होता है। अत: शरीर को स्वस्थ्य रखना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है, जिसके लिए संतुलित भोजन, संतुलित श्रम एवं संतुलित विश्राम आवश्यक है।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि हमारी सभी सफलताओं का मूल है-'मन'। हर व्यक्ति के मन में बहुत सारी इच्छाएं होती है, इन्हीं इच्छाओं के आधार पर हमारी जीवन-शैली और उद्देश्य का निर्धारण होता है। जब किसी वस्तु या लक्ष्य की इच्छा हमारे मन में जागृत होती है तो हम उस वस्तु से संबंध जोड़ने लगते हैं। जितनी तीव्र इच्छा वस्तु को प्राप्त करने की होगी और जितने कम समय में उस वस्तु को पाना चाहेंगे उतनी ही जल्दी हम उसको पाने में सक्षम हो जाते हैं। यदि लक्ष्य हमारी योग्यता और क्षमताओं से काफी अधिक होता है तो हम अपनी योग्यताओं और क्षमताओं को बढ़ाने का प्रयत्न करके उसे प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। इस प्रकार उद्देश्य पूर्ण जिन्दगी या लक्ष्य प्राप्ति की इच्छा हमारी शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक तथा अन्य क्षमताओं और योग्यताओं को बढ़ाती है, क्योंकि जब हम खुद को उद्देश्यानुसार ढाल लेते हैं। अर्थात उसी के लिए सोचना, योजना बनाना, उसी के लिए शक्ति, ऊर्जा और आत्मा सहित काम में लग जाना और उद्देश्य पूर्ण होने तक लगातार कार्य करते रहना और मन की शान्ति व एकाग्रता, बनाए रखने के उपायों को अपनाना और शारीरिक स्वास्थ्य पर भी ध्यान रखना ही सफलता का मूल मंत्र है।

– राजेश श्रीवास्तव,
ई.आर.पी. विश्लेषक, एस.ए.पी.

आधुनिक भाषाओं के हार की मध्यमणि हिन्दी भारत भारती होकर विराजती रहे।
-गुरूदेव रवींद्रनाथ टैगोर

खाड़ी में रहने वाले मलयाली लोग

केरल मनीआर्डर अर्थव्यवस्था के रूप में जाना जाता है क्योंकि यहां भारत के अन्य स्थानों और विदेशों में काम करने वाले मलयालियों (केरल वासियों) द्वारा धन का प्रवाह होता है। केरल में शायद ही कोई उद्योग या बड़ा व्यापार है जो सभी मलयालियों को रोजगार दिला सकता है। यह कोई मज़ाक नहीं है कि यदि बाहर काम कर रहे सभी मलयाली केरल में एक दिन लौटकर आ गए, तो उन्हें खड़े होने के लिए भी कोई जगह यहां नहीं होगी।

वर्ष सत्तरों के दौरान जब से तेल पाया गया तब से मलयालियों का एक अच्छा प्रतिशत खाड़ी देशों में काम कर रहा है। उन्होंने निश्चय ही केरल की अर्थव्यवस्था में एक बड़ा योगदान दिया है। लेकिन हम में से कितने लोग खाड़ी मलयालियों के दुखों के बारे में जानते हैं?

वर्ष नब्बों के दौरान मुझे दुबई में काम करने का एक मौका मिला था। एक बार मेरी त्रिवेन्द्रम से दुबई यात्रा के दौरान एयर इंडिया ने घोषणा की कि विमान में तकनीकी समस्या के कारण विमान वापस त्रिवेन्द्रम में उतर रहा है। एयरलाइंस ने यात्रियों को त्रिवेन्द्रम के स्टार होटल में उस दिन ठहराने का प्रबंध किया और मैं एक खाड़ी कामगार राम (असली नाम नहीं, जो कोल्लम से थे), के साथ एक ही कमरे में ठहरा।

प्रारंभिक परिचय के बाद उन्होंने अपनी जीवन की कहानी सुनाई। वे दुबई में पिछले पंद्रह साल से काम कर रहे थे और जैसे कोई भी खाड़ी आदमी का सपना होता है उनके पास एक घर, गाड़ी और निवास टेलीफोन (जो कि नब्बों में भोग विलास की वस्तु मानी जाती थी) था और उन्होंने अपने दोनों बेटों को शिक्षित भी किया।

उनका बड़ा पुत्र प्रथम श्रेणी में विज्ञान विषय में स्नातक था और उन्होंने उसे स्नातकोत्तर के लिए कोल्लम के एक प्रमुख कॉलेज में भेज दिया। किंतु उनका बेटा बुरी संगत में पड़ गया और वह एक छात्र संघ का नेता भी था। छात्रों के बीच के झगड़े शत्रुता में बदल गए और एक दिन शत्रुओं ने आकर उसके घर की कांच की खिड़कियां तोड़ डालीं। किन्तु वह चुप नहीं बैठा। उसने और उसके दोस्तों ने मिलकर शत्रुओं के घर की कांच की खिड़कियों को तोड़कर बदला लिया। किन्तु दूसरे संघ का उनका शत्रु एक प्रभावशाली राजनीतिज्ञ का बेटा था और उसके खिलाफ पुलिस मुकदमा दायर किया और वारंट जारी किया गया। वह घर पर नहीं रह सकता था। दुबई में उनके पिताजी को खबर भेजी गई और उन्होंने तुरंत अपने बेटे के लिए वीजा की व्यवस्था की और उसे दुबई ले गए। दुबई में उसकी शिक्षा को जारी रखना असंभव था क्योंकि उन दिनों वहां इसकी ऐसी कोई सुविधा नहीं थी।

अपनी सीमित प्रभाव से जितना हो सकता था उससे राम ने अपने बेटे के लिए वहां एक छोटे से कामगार की नौकरी की व्यवस्था की। लेकिन बेटा, एक स्नातक और साथ ही केरल में एक खाड़ी पिता के बेटे होने की जीवन शैली का आनंद लेने

के बाद कोई भी शारीरिक श्रम करने के तैयार नहीं था और न ही वह गिरफ्तारी के डर से गांव लौट सकता था। राम एक चिंताग्रस्त व्यक्ति था और उनके पास इस समस्याओं का कोई तात्कालिक हल भी नहीं था।

राम का मामला एक अकेला मामला नहीं है। खाड़ी में काम कर रहे कई कामगार कठिन मेहनत करके और अपनी मेहनत का पैसा इस उम्मीद के साथ उनके परिवार को भेजते हैं कि वे वहां एक अच्छा जीवन का आनंद ले रहे हैं। लेकिन इसका अक्सर दुरुपयोग किया जाता है और माताएं जो आम तौर पर गृहिणी होती हैं, अक्सर पिता की अनुपस्थिति में वयस्क बेटे को नियंत्रित नहीं कर पाती हैं। वे अपने बच्चों की बाहर की गतिविधियों के बारे में भी अंधेरे में होती हैं।

देर रात हो गई थी और हम सो गए थे। मुझे एक पुराने कहावत याद आ गई:

'यदि धन खोया तो कुछ नहीं खोया
यदि स्वास्थ्य खोया तो कुछ खो दिया है
यदि चरित्र खोया तो सब कुछ खो दिया है।'

जाहिर है, जब लोग धन के पीछे पागल हो जाते हैं, वे शायद ही कभी चरित्र को प्राथमिकता देते हैं, वह वर्तमान दुनिया के लिए एक बड़ा अभिशाप है।

– आर.के. मेनन, प्रधान कार्मिक
सी-डैक, तिरुवनंतपुरम

अगर हमें हिन्दुस्तान को एक राष्ट्र बनाना है तो राष्ट्रभाषा हिन्दी ही हो सकती है।

-महात्मा गांधी

गर्व है मुझको कि मैने .....

सूरज ढला,
देखे वो चला,
उदास चेहरा बेहाल है,
लड़खड़ाई सी चाल है,

नंगे पांव,
और पथ कंटको से भरा,
हाय, उस टूटी कमर पर,
देखो, कितना बोझ धरा,
मरने की उसे आस नहीं,
और जीवन की प्यास नहीं,
फिर भी देखो चला जा रहा,
धरती की गोद में पला जा रहा,
अंत में मैंने पूछा उससे,
झण भंगुर इस जीवन से तूने क्या पाया है,
इतना परिश्रम करके भी,
क्या तूने कमाया है।
सुन कर मेरी इस पुकार को,
बोला तान वह अहंकार को
माना कि दुख अपनी सीमा, लांघ कर आया है,
पर गर्व है मुझको कि मैंने,
हाथ नहीं फैलाया है,
रूखा-सूखा, जो भी है, परिश्रम से कमाया है,
पर गर्व है मुझको कि मैंने,
हाथ नहीं फैलाया है।

- अंजुम अवस्थी
इंजीनियर आई.टी., स्कूल ऑफ इलेक्ट्रॉनिक्स

डेटाबेस डिजाईन की दस आम गलतियाँ

गलतियों की कोई सूची कभी भी संपूर्ण नहीं हो सकती। बस समय पर काम पूरा करने के लिए लोग बहुत बेवकूफी वाला काम करते हैं। निम्न सूची मेरे द्वारा देखी गयी और शायद करी भी गयी। आम दस गलतियाँ दर्शाती हैं:

1. खराब डिजाईन और प्लानिंग
2. नार्मलाईज़ेशन की अनदेखी
3. नेमिंग स्टेंडर्ड की अनदेखी
4. डॉक्युमेंटेशन का अभाव
5. एक टेबल में सारी डोमेन वैल्यूस रखना
6. सिर्फ GUID कॉलम को ही कुन्जी बनाना
7. डेटा अखंडता के लिए एस.क्यू.एल. (SQL) सुविधाओं का उपयोग न करना
8. डेटा एक्सेस के लिए, स्टोर्ड प्रोसीजर को काम में नहीं लाना
9. टी.एस.क्यू.एल. द्वारा बहुत ज्यादा जेनेरिक ओब्जेक्टस बनाने की कोशिश करना
10. आवश्यक टेस्टिंग की कमी

1. खराब डिजाईन और प्लानिंग

चूंकि डेटाबेस हर व्यवसाय परियोजना की आधारशिला है, अगर आप शुरू से ही ये नहीं सोचेंगे की आपके प्रोजेक्ट की ज़रूरतें क्या हैं और आपका डिजाईन उन ज़रूरतों को कैसे पूरा करेगा, तो आप निश्चित ही सफल नहीं हो पाएंगे। अपितु प्रोजेक्ट की लाइफ-साइकिल के साथ-साथ आपकी ज़िन्दगी (बतौर डी बी ए) बद से बदतर होती जाएगी। अंग्रेजी की कहावत है "if you fail to plan & you plan to fail". आपका सोचा समझा डिजाइन ही, आपके प्रोजेक्ट को बदलाव के लिए फ्लेक्सिबल और सहनशील बनाता है। जो कि बहुत-बहुत ज़रूरी है।

1. नार्मलाइजेशन की अनदेखी

नार्मलाइजेशन एक तरीका है आपकी टेबल्स को ऐसे मैनेज करने का कि वो सिर्फ एक और केवल एक ही तरह के डेटा को स्टोर करे। ये नार्मलाइजेशन करीब तीस सालों से काम में लायी जा रही है। आम तौर पर आपका डेटाबेस कम से कम तीसरे फॉर्म तक नार्मलाइजेशन होनी चाहिये। पर बहुत बड़े डेटाबेस में नार्मलाइज से स्पीड में बहुत फायदा मिलता है। जिसे बहुत सोच समझकर लॉक करना चाहिये।

2. नेमिंग स्टेंडर्ड की अनदेखी

नाम, एक निजी पसंद है, जबकि अपने आवेदन के लिए दस्तावेज का पहला और सबसे महत्वपूर्ण है। ये बहुत ज़रूरी है की नेमिंग स्टेंडर्ड में कंसिस्टेंसी रखी जाये। नामों का चयन केवल ऑब्जेक्ट को पहचानने के लिए ही नहीं किया जाता। अपितु फ्यूचर में आने वाले प्रोग्रामर्स और रीसोर्स को ये समझाने में मदद करता है की डेटाबेस का कौन सा हिस्सा किस डेटा के लिए बनाया गया है। कोई भी प्रोग्रामर 500 पेज का डॉक्युमेंट नहीं पढ़ना चाहेगा सिर्फ एक ऑब्जेक्ट का नाम और इस्तेमाल समझने के लिए।

4. डॉक्युमेंटेशन का अभाव

ध्यान से अपनी वस्तुओं का नामकरण करके, आप यह स्पष्ट कर सकते हैं कि डेटाबेस मॉडलिंग से

आपने क्या मॉडल किया है। बहरहाल, यह केवल एक प्रलेखन लड़ाई में एक कदम है, पर दुर्भाग्यपूर्ण सच्चाई है। हालांकि, कि 'कदम एक' अक्सर एक ही कदम होता है। न केवल एक अच्छी तरह से डिजाइन डेटा मॉडल एक ठोस नामकरण मानक का पालन करना चाहिये अपितु इसमें आपकी सारी टेबल्स, कंसट्रेन्टस, और रिलेशनशिप्स की डेफिनेशन्स भी होनी चाहिये। इसमें डिफाल्ट वैल्यूस और चेक कंसट्रेनट्स भी होने चाहिये, जिससे यह बिलकुल साफ़ हो जाये कि कौन सा ऑब्जेक्ट किस लिए है। आपका लक्ष्य यह होना चाहिए कि जब आपका डेटाबेस जब मेन्टेनेन्स में जाये तो मेन्टेनेन्स इंजीनियर छोटे बदलाव खुद ही कर सकें।

5. एक टेबल में सारी डोमेन वैल्यूस रखना

रिलेशनल डेटाबेस का मौलिक विचार है कि हर वस्तु एक और केवल एक ही बात का प्रतिनिधित्व करती है। एक बड़ी सोच आर्किटेक्टस की ये है कि अगर ज्यादा टेबल्स हों तो डिजाईन काम्प्लेक्स होता है-पर ये धारणा मिथ्या है।

6. सिर्फ GUID कौलम को ही कुंजी बनाना

प्रथम नॉर्मल फॉर्म यह कहती है कि किसी भी तालिका (Table) में सभी पंक्तियों (Rows) को विशिष्ट रूप से पहचान योग्य होना चाहिए, जिसके लिए एक 'प्राइमरी कुंजी' होनी चाहिए। बहुत से आर्किटेक्टस एक 'सरोगेट कुंजी' यूज़ करते हैं जैसे:

Part Id पार्ट आईडी	Part Name पार्ट का नाम	Description
1	XXXXXXX	This is X part
2	XXXXXXX	This is X part
3	YYYYYYY	This is Y part

यहाँ तालिका में पार्ट आई-डी 'सरोगेट की (Key) का काम कर रही है। यहाँ कितनी पंक्तियाँ हैं। देखने में लगेगा की तीन हैं, पर उसमें से दो समान (Duplicate) हैं। समान्यत: यह माना जाता है की अगर एक इंसान 'सरोगेट की' के बिना युनिक्ली (Uniquely) नहीं बता सकता कि कौन सी पंक्ति तालिका से चाहते हैं, तो आपको अपने डिजाइन पर पुनर्विचार की जरूरत है। इसीलिए टेबल में एक ऐसी 'की' ज़रूर होनी चाहिए जिससे पंक्तियों की युनिक्ली पहचान करी जा सके। हमारे उदाहरण में ऐसी 'की' 'पार्ट नंबर' है। अत: 'पार्ट नंबर' को ही 'प्राइमरी की' होना चाहिए, न की 'पार्ट आई-डी' को। इससे हमारी बताई गयी समस्या पूरी तरह सुलझ जायेगी।

7. डेटा अखंडता के लिए एसक्यूएल (SQL) सुविधाओं का उपयोग न करना

सभी मौलिक, गैर बदलते व्यापार के नियमों (Business Rules) संबंध परक इंजन (Relational Engine) द्वारा लागू किया जाना चाहिए। आधार नियमों (Base Rules) जैसे "nullability" के नियमों, 'स्ट्रिंग' की लंबाई, फौरेन (Foreign) की के काम, इत्यादि, सभी को डेटाबेस में परिभाषित किया जाना चाहिए।

डेटाबेस में डेटा आयात (Import) करने के कई अलग-अलग तरीके हैं यदि आप अपने आधार नियमों को डेटाबेस में परिभाषित कर रहे हैं, तो आप गारंटी से कह सकते हैं कि वे नजरअंदाज कभी नहीं होंगे और आप बिना किसी चिंता के अपनी 'एसक्यूएल' लिख सकते हैं। आपको कभी चिंता करने की ज़रुरत नहीं है कि क्या आपके द्वारा दिखाया गया डेटा-डेटाबेस के आधार व्यापार

नियमों का पालन कर रहा है या नहीं। दूसरी तरफ ऑप्शनल नियमों को बिज़नेस लेयर (Business Layer) पर रखा जा सकता है।

8. डेटा एक्सेस के लिए, स्टोर्ड प्रोसीजर को यूज़ न करना

जब भी संभव हो, एक विधि के रूप में डेटाबेस परत को - डेटा के उपयोगकर्ताओं से बचाने के लिए, उनका प्रयोग करें।

- इनके द्वारा maintainability बहुत बढ़ जाती है,
- डेटा को encapsulate किया जा सकता है,
- डेटा की security गारंटी की जा सकती है,
- performance सुधारी जा सकती है।

9. टी एक्स.क्यू.एल. द्वारा बहुत ज़यादा जेनेरिक ओब्जेक्टस बनाने की कोशिश करना

Vh SQL वस्तुओं 'जेनेरिक' आसानी से नहीं करते हैं, मुख्यत: क्योंकि SQL सर्वर में डिजाइन प्लान को reuse किया जा सकता है, code को नहीं। SQL सर्वर सर्वोत्तम काम करता है जब इससे unnkowns minimum मिले, जिससे की ये सर्वोत्तम execution प्लान' उत्पन्न कर सकें। जितना ज्यादा generalize प्लान करना पड़ेगा, उतना ही कम प्लान optimize होगा। इसकी जगह आप dynamic sql का प्रयोग procedures और functions से काम कर सकते हैं।

10. आवश्यक टेस्टिंग की कमी

जैसा की सारे डी.बी.ए (DBA) जानते हैं, जब भी सॉफ्टवेयर (Software) स्लो चल रहा होता है - पहला दोष हमेशा डेटाबेस पर लगाया जाता है, क्यों?

पहला, क्योंकि डेटाबेस किसी भी सॉफ्टवेर का सबसे मुख्य भाग होता है, और दूसरा ज्यादातर ये सच भी होता है।

हम इस कथन को झुठला सकते हैं-सॉफ्टवेर की पूरी जानकारी और अच्छी एवं पूर्ण टेस्टिंग से।

पर यह भी सत्य है की जब भी deadlines नज़दीक आने लगती हैं, आपके पी.एम.पी (PMP) में टेस्टिंग टाइम घटने लगता है और टेस्टिंग का प्रोसेस सिर्फ inputs और एक्सपेक्टेड outputs को देखने का रह जाता है। असल में यह नहीं देखा जाता की डिजाईन के अनुरूप कोडिंग हुई भी है या नहीं परिणामस्वरूप, paxsl मैनेजमेंट बहुत मुश्किल हो जाता है। अत: डेटाबेस डेवलपमेंट में सख्त टेस्टिंग प्लान को भी पर्याप्त स्थान देना चाहिये।

- अभिषेक वर्मा
तकनीकी अधिकारी, डिजाइन

सबको हिन्दी सीखनी चाहिए। इसके द्वारा भाव विनिमय में सारे भारत को सुविधा होगी।
-चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

चुटकुले

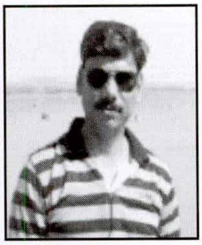

अध्यापक : राजू तुम स्कूल क्यों आते हो?
राजू : सर विद्या के लिए।
अध्यापक : तो सो क्यूं रहे हो?
राजू : आज विद्या नहीं आई है सर।

लड़का : कल मैं तुम्हारे घर गया था, लगता है हमारी शादी नही होगी
लड़की : क्यू? पापा से मिले थे क्या?
लड़का : नहीं तुम्हारी बहन से मिला था

संता का बेटा : सर जी, जब आप पढ़ाते हो, तो मुझे मेरे पिताजी की याद आती है।
सर जी : अच्छी बात है, किस लिए उनकी याद आती है
संता का बेटा : उनको भी आप ही की तरह पढ़ाना नहीं आता है।

संता : सब लोग क्यू भाग रहे हैं?
बंता : ये रेस है, जो जीतेगा उसे इनाम मिलेगा
संता : अगर सिर्फ जीतने वाले को ही इनाम मिलेगा तो इतने लोग क्यू भाग रहे हैं।

– गजेन्द्र सिंह
कार्यालय सहायक, डेटा सेंटर

हिन्दी एक जीवंत भाषा है। इसमें बड़ी सुरम्यता और उदारता है।
-के. आर. नारायणन, भारत के पूर्व राष्ट्रपति

मानवता की सीख

यह मानव का देश है, तो मानव बनकर रहा करो
अन्याय करो न कभी किसी पर, न अन्याय सहा करो ....
इसको गांधी ने, नेहरू ने, अपने लहू से सींचा है
धधक रहा था ज्वाला में, अपने हाथ से खींचा है
ज्वाला में झुलसे हाथों का तुम तो मरहम बना करो
यह मानव ...
क्यूं अमरीका विश्व विजय का स्वप्न आंख में बोता है
क्यूं करता है बमबारी जब सारा जग सोता है
संयुक्त राष्ट्र संघ के नियमों की कुछ तो हाय शरम करो
यह मानव ...
कभी किसी ने क्या सोचा है, क्यू विष फैला बातों में
किसने कलम छीनकर पकड़ा दी बंदूकें हाथों में
कोई तो हल ढूंढो इसका, कोई तो यह पहल करो
यह मानव ...
तन पर एक लंगोटी बांधी, जिसने दीनों की खातिर
उसकी इतनी बड़ी तपस्या व्यर्थ कर रहे तुम क्यूं कर
हिंसा लालच और बदले की अग्नि में ना जला करो
यह मानव ...
शान्ति और अहिंसा का जो पाठ पढ़ाया गौतम ने
उसको ढूंढो गीता में कुछ खोजो तुम बाईबल में
कुछ कहना सुनना हो जब तो ऐसी बातें कहा करो
यह मानव ...
विश्व शांति और मानवता का सन्देश सुनाती हूँ
सुख से वैभव से रहने का मंत्र तुम्हें बतलाती हूँ
प्रेम, दया, करुणा और ममता इस पूंजी को जमा करो
यह मानव का ...

– रेणुका बंसल
इंजीनियर आई.टी., फिनिशिंग स्कूल

यूनिक आइडेंटिफिकेशन नंबर

UID योजना, भारत सरकार की एक बहुत ही महत्वाकांक्षी योजना है। इस योजना के लिए योजना आयोग के तहत UID अथॉरिटी ऑफ इंडिया (UIDAI) का गठन हुआ है। ये संगठन सुनिश्चित करेगा कि इसका फायदा किसी भी तरह से गैर-सामाजिक तत्व न उठा पाएं। UID योजना के तहत देश के हर नागरिक को एक अद्वितीय नंबर दिया जाएगा।

भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण (Unique Identification Authority of India) सन 2009 में गठित भारत सरकार का एक प्राधिकरण है जो, विशिष्ट पहचान पत्र के निर्माण से सम्बन्धित सभी पहलुओं पर काम करेगा। श्री नंदन निलेकणी इसके प्रथम अध्यक्ष बनाये गये हैं। हालांकि, 25 नवंबर, 2010 के रूप में, केवल 1,53,791 UIDs उपलब्ध थे। नंदन नीलेकणि के नेतृत्व मे यूआईडीएआई ने दावा किया है कि 10 करोड़ UIDs मार्च, 2014 तक वितरित किये जायेंगे।

भारत में मौजूदा पहचान डेटाबेस धोखाधड़ी और डुप्लिकेट या भूत लाभार्थियों की समस्याओं से भरा है। डेटाबेस में रिसाव से इन समस्याओं को रोकने के लिए, यूआईडीएआई उनके जनसांख्यिकीय और बॉयोमीट्रिक जानकारी के उचित सत्यापन के साथ अपने डेटाबेस में नामांकन निवासियों की एक डाटाबेस तैयार कर रहा है। यह

प्राधिकरण एक डाटाबेस तैयार करेगा और प्रत्येक निवासी के लिए एक विशिष्ट पहचान संख्या प्रदान करेगा। इस नंबर के आधार पर उस नागरिक की पूरी जानकारी सरकार के पास उपलब्ध होगी। भारत सरकार देश के हर नागरिक को एक यूनिक आइडेंटिफिकेशन नंबर देने की प्रक्रिया में जोर-शोर से जुट गई है। सरकार की योजना के मुताबिक 2011 तक सभी नागरिकों को यूनिक आइडेंटिफिकेशन संख्या जारी कर दी जाएगी।

एक व्यक्ति की तस्वीर और फिंगरप्रिंट छवियाँ संकुचित (सभी 10 उंगलियों के) डेटा स्टोर करने के लिए लगभग पाँच मेगाबाइट की आवश्यकता होगी, तो संपूर्ण डेटाबेस का आकार कम से कम छह हजार टेराबाइट होगा।

हर ज़रूरत के लिए सिर्फ 'एक कार्ड'

इसके जरिए देश की आंतरिक सुरक्षा से जुड़ी चिंताओं के समाधान के अलावा वस्तुओं और सेवाओं के सार्वजनिक बंटवारे के लिए एक व्यवस्थित तंत्र भी विकसित किया जा सकेगा। शुरुआत में UID नंबर राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर या मतदाता सूची के आधार पर आवंटित की जाएगी। व्यक्ति की पहचान पर जालसाजी की

संभावना खत्म करने के लिए इसमें तस्वीर और बायोमेट्रिक आंकड़े जोड़े जाएंगे। साथ ही, लोगों के फायदे के लिए इसके आसान पंजीकरण और जानकारियों में बदलाव की प्रक्रिया को आसान बनाने के तरीकों पर भी विचार किया जा रहा है।

प्रस्तावित आइडेंटिटी कार्ड ऐसे स्मार्ट कार्ड होंगे जिनपर व्यक्ति की पूरी जानकारी मिलेगी। शख्स के उंगलियों के निशान और तस्वीर। ऐसा नहीं है कि ये यूनिक आइडेंटिटी कार्ड वयस्कों को ही मिलेंगे। बल्कि ये उन्हें भी दिए जाएंगे जो 18 साल से कम उम्र के हैं। इसका लक्ष्य विभिन्न सरकारी विभागों के बीच पहचान के लिए प्रचलित अलग-अलग व्यवस्थाओं को खत्म करना है। इन स्मार्ट कार्ड पर सरकार 6 अरब डॉलर की रकम खर्च करेगी।

कौन से दस्तावेज ले जाएं

अगर आप एनरोलमेंट करवाने के लिए सेंटर पर जा रहे हैं तो अपना एक पासपोर्ट साइज फोटोग्राफ और रेजिडेंट्स प्रूफ (वोटर कार्ड, राशन कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस) कुछ भी ले जा सकते हैं। यहां से एनरोलमेंट के बाद फॉर्म बेंगलुरु भेजे जाएंगे। वहां फॉर्म क्लियर होने के बाद 6 से 8 सप्ताह के बीच डाक से यूआईडी आधार नंबर संबंधित व्यक्ति के घर पर पहुंच जाएगा।

कहां काम आएगा यूआईडी

बैंक में खाता खुलवाते समय, जहां भी आपको पहचान या रेजिडेंटस प्रूफ की आवश्यकता होगी वहां पर आधार यूआईडी नंबर काम आएगा।

यूआईडी मे क्या है?	यूआईडी में क्या नहीं है?
एक बारह अंकों का नंबर	दूसरे कार्ड
पहचान सक्षम	नागरिकता की स्थापना
स्वेच्छापूर्ण	अनिवार्य
बच्चे सहित हर व्यक्ति के लिए	प्रति परिवार
व्यक्ति की विशिष्टता को स्थापित करने के लिए जनसांख्यिकीय और बॉयोमीट्रिक सूचना एकत्रित करेगा	रूपरेखा जानकारी जैसे जाति, धर्म, भाषा एकत्रित करेगा

- रामजी गुप्ता
इंजीनियर (आईटी) IV, डेवलपमेंट ग्रुप

हिन्दी भारत की अधिकांश जनता द्वारा बोली और समझी जाने वाली भाषा है।

न्यायपालिका में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी

सारांश

भारतीय संविधान न्यायपालिका को सर्वोच्च मानता है। संविधान के अंतर्गत सभी भारतीयों को न्याय का समान अधिकार है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार देश में कुल 3 करोड़ से भी अधिक मामले (Cases) भारतीय न्यायालयों में लंबित हैं। देश के एक लाख लोगों के लिए केवल 15 न्यायधीश उपलब्ध हैं तथा लगातार मुकदमों की संख्या बढ़ती जा रही है। जो वर्तमान भारतीय न्याय प्रणाली पर कई गुना बोझ बढ़ रहा है। इन मामलों के निपटारे में वर्तमान प्रणाली द्वारा 100 वर्षों से भी ज्यादा का समय लग जाएगा। दूसरी ओर यदि इस न्याय प्रक्रिया के दौरान विभिन्न विभागों जैसे पुलिस, फोरेसिंक प्रयोगशाला तथा अस्पतालों की भागीदारी देखें तो न्याय की प्रक्रिया और जटिल तथा लम्बी हो जाती है। इन विभागों के पदाधिकारियों की सहभागिता मुकदमों में अनिवार्य रहती है। साथ ही कोर्ट परिसर में गवाहों, मुकदमों से जुड़े पदाधिकारियों तथा आरोपी को लाना, ले जाना काफी जोखिम भरा होता है।

भारत में सूचना एवं संचार क्रांति देश के विकास में अग्रणी भूमिका निभा रही है। इसलिए न्यायपालिका में भी सूचना एवं संचार क्रांति लाने की जरूरत है। इसी जरूरत ने e-Court (ई-न्यायालय) के रूप में जन्म लिया। इस प्रणाली द्वारा न्यायालयों में लंबित मामलों को कम समय तथा कम लागत द्वारा सरल तरीके से निपटाया जा सकता है।

प्रस्तावना

तीव्र गति से मामलों का बढ़ना, तथा धीमी गति से उसका निपटारा होना भारतीय न्याय प्रक्रिया पर काफी बोझ बढ़ गया है। न्यायालयों में मामले से संबंधित दस्तावेजों (रिकार्ड) को लंबे समय तक संग्रह तथा संरक्षित नहीं किया जा सकता

साथ ही पुराने दस्तावेजों को भी आसानी से नहीं खोया जा सकता है। दस्तावेजों के फटने, सड़ने, तथा गलने के कारण ज्यादा दिन तक सुरक्षित नहीं रखा जा सकता। मामले लंबे समय के लिए न्यायालयों में लंबित रहते हैं और इस दौरान मामले अलग-अलग न्यायधीशों के अधीन सुनवाई के लिए जाते हैं। इस दौरान गवाह तथा आरोपी अपने बयान बदलते रहते हैं। जिसके कारण न्यायधीशों को पुराने दस्तावेज़ों को पढ़ने तथा समझने में समय लगता है। साथ ही गवाह तथा आरोपी के पुराने बयान दर्ज करने के दौरान की मनोस्थिति को पूरी तरह समझा जा सकता है। इस कारण भी कई मामलों में समय ज्यादा लगता है। कुख्यात अपराधियों को सुरक्षित खेल परिसर में पेश करना, पुलिस तथा प्रशासन के लिए चिंता का विषय है। इस कारण लाने, ले जाने में समय तथा धन का खर्च बढ़ जाता है। इसी प्रकार मुकदमों में अस्पतालों तथा फोरेंसिक प्रयोगशाला के विशेषज्ञों को अदालत के सामने जांच रिपोर्ट पेश करने में गंभीर कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इसलिए न्यायालयों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) की आवश्यकता है। इस प्रणाली के द्वारा न्यायालयों में ऑडियो (Audio) तथा दृश्य रिकार्डिंग (Video Recording)

से न्यालयों में मामलों के निपटारे में तेजी आएगी।

प्रणाली सुविधाएं (System Features)

इस प्रणाली में अदालतों में उच्च क्षमता (High Resolution) के कैमरे का प्रयोग कर अदालत की कार्यवाही की रिकार्डिंग की जाती है। रिकार्डिंग की पुरानी प्रक्रिया का नियंत्रण न्यायधीश के पास स्क्रीन पर होता है। वह अपने अनुसार अदालत की कार्यवाही को चालू या बंद कर सकता है। साथ ही कोर्ट में सबूत के तौर पर पेश किए गए चाकू, बंदूक इत्यादि को Visualizer के माध्यम से स्कैन कर इसे संरक्षित रखा जा सकता है तथा अन्य कागजी दस्तावेजों जैसे सम्मन, चार्ज शीट, आर्डर की प्रति इत्यादि को स्कैन करके संरक्षित रखा जाता है। गवाहों के बयान को डिजीटल (Digital) रूप में दर्ज कर इसके विडियो रिकार्डिंग (Video Recording) के साथ समाहित किया जाता है। जिससे कि गवाहों के बयान के दौरान उनकी मनोस्थिति को समझा जा सके। इन रिकार्डो को डेटा इन्क्रीप्शन (Data Encryption) तथा डिजीटल हस्ताक्षर (Digital Signature) के माध्यम से सुरक्षित रखा जाता है जिससे कि इसकी मूल प्रति को बदला नहीं जा सके। इस प्रणाली द्वारा न्यायधीश जब चाहे पुराने दस्तावेजों को मुकदमों के दौरान किसी भी समय पर अपने स्क्रीन पर देख सकता है। इस प्रणाली में विडियो कॉन्फ्रेंसिंग (Video Conferencing) भी समाहित है। जिससे किसी अन्य स्थानों से गवाहों तथा मुकदमों से संबंधित अफसरों (पुलिस, जेल, फोरेंसिंक लैब FSL तथा अस्पताल) को ब्रांडब्रैंड अथवा आई.एस.डी.एन. ISDN के माध्यम से बयान दर्ज किया जाता है। इससे उनके कीमती समय तथा लागत को भी कम किया जा सकता है।

इस प्रणाली की विशेषताएं

1. स्कैन (Scan) फाइलों तथा साक्ष्यों (Evidence) को उसके मेटा-डाटा के साथ अपलोड करना।
2. मुकदमों के फाइलों को तारीख तथा उसके क्रम के अनुसार समाहित करना।
3. न्यायधीशों को मुकदमों की समीक्षा के लिए कार्यवाही के रिकार्डिंग को उपलब्ध करना जिससे पिछली सुनवाई की कड़ी को जोड़ा जा सके।
4. मुकदमों से जुड़ी ज्ञान और जानकारी ऑनलाइन उपलब्ध।
5. मुकदमों के दस्तावेज़ों तथा रिकार्ड फाइलों को खोजने की उचित व्यवस्था।
6. अधिकृत व्यक्तियों को मुकदमों से जुड़ी सीडी तथा डीवीडी उपलब्ध कराना।
7. अदालत में पत्रकारों को मुकदमों की कार्यवाही का पुनर्राहति की व्यवस्था।
8. वेब पोर्टल के माध्मय से मामले की कार्यवाही को अधिकृत व्यक्तियों को लाइव देखने का अधिकार।

ई-न्यायालय के लाभ

1. इस प्रणाली से सबूतों और दस्तावेजों का रख-रखाव तथा विभिन्न अदालतों को जानकारी ऑनलाइन उपलब्ध।
2. कागजी दस्तावेज़ों की कम आवश्यकता।
3. दस्तावेजों की अखंडता के लिए डिजीटल हस्ताक्षर और इन्क्रीप्शन Encryption का उपयोग।

4. न्यायायिक अधिकारियों और अदालत के कर्मियों के प्रशिक्षण में उपयोगी।

5. न्यायालय, अस्पताल, फोरेंसिक लैब तथा जेल के अफसरों का एक साथ एक सुरक्षित मोड़ में अपने दस्तावेजों या प्रस्तुती को समझना।

6. उच्च गोपनीय जानकारियां जो विभाग अपने परिसर के बाहर नहीं ले जा सकते लेकिन इन जानकारियों को साझा करने की आवश्यकता हो तो इस प्रणाली द्वारा उन विषयों पर चर्चा करना।

7. डॉक्टर को प्रत्यक्ष रूप से अभियुक्त या अपराधी के सामने खड़ा होकर बयान देने की जरूरत नहीं, अपितु विडियों कॉन्फ्रेंसिंग (Video Conferencing) के द्वारा अपने विचार आसानी से प्रकट करना।

8. संबंधित अधिकारी द्वारा बहुत आराम से तथा अपने अनुकूल वातावरण में अपने बयान दर्ज कराना।

9. संबंधित अधिकारियों को आने जाने वाले खर्च को भी कम या खत्म करना।

- मुकेश कुमार सिंह
वरिष्ठ तकनीकी सहायक, इम्पलीमैंटेशन

मेघा

गरज गरज कर घिर आए मेघा,
कड़क-कड़क बिजली चमकाते,
कोई काला तो कोई उजियारा,
गजब गजब के रंग जमाते।

बढ़े चले हैं एक डगर पर
सब धरती की प्यास बुझाने,
ठुमक ठुमक कर अकड़ अकड़ कर,
मानो झूम रहे दीवाने।

जंग में फैल रहा अंधियारा,
चले बूंदों की एक लड़ी बनाते,
अकड़ रहे कुछ यूं ठाठ बाठ से,
घूम रहे मानो मोती बरसाते।

- राहुल जीनवाल
कार्यालय सहायक, मानव संसाधन विभाग

सी-डैक अब सी.एम.एम.आई. स्तर 5 है?

जंगल में बारह साल बिताने के बाद पांडवों ने राजा विराट की राजधानी में निर्वासन का तेरहवां वर्ष अज्ञातवास में बिताया था। पांडवों की पत्नी द्रोपदी का नाम बदल दिया गया। वह सैरंध्री बन गई और रानी की नौकरानी के रूप में रानी के महल में रहने लगी। रानी का एक भाई था उसका नाम कीचक था। कीचक शक्तिशाली और लम्पट था। वह सैरंध्री के यौवन और उसकी सुंदरता की ओर आकर्षित हो गया। एक दिन वह सैरंध्री के कमरे में गया लेकिन, सौभाग्य से सैरंध्री वहां नहीं थी। कमरे में कीचक ने एक दर्पण देखा। सौरंध्री इसी दर्पण में देखा करती थी। कीचक को सैरंध्री से बहुत प्यार था। इसलिए उसे सैरंध्री की चीज़ों से भी बहुत प्यार था। इस दर्पण की ओर भी वह बहुत आकर्षित हुआ।

वह दर्पण को लेकर अपने निजी कमरे में लौट आया और उसने दर्पण में सौरंध्री का मुंह देखना चाहा। लेकिन नहीं देख पाया, उसको विश्वास था कि वह उसका मुंह दर्पण में देखेगा। किन्तु जो रूप कीचक ने दर्पण में देखा काफी अलग था। उसने एक लम्बे और मोटे राजसी आदमी का रूप दर्पण में देखा। उसे यह रूप देखकर बहुत आश्चर्य हुआ। उसको इस व्यक्ति की पहचान नहीं हुई। यह व्यक्ति कौन है। यह जानने के लिए वह उत्सुक हुआ। कुछ पूछताछ के बाद मालूम हुआ कि यह लम्बा एवं मोटा व्यक्ति द्वितीय पांडव भीम है। अब कीचक को जानना था कि भीम का रूप दर्पण में कैसे आया।

दर्पण की विशेषता और गुण का परीक्षण करने के लिए उसने दर्पण को प्रांत के परीक्षण और गुणवत्ता विभाग में सौंप दिया। गहन परीक्षण के बाद परीक्षण टीम ने अपनी रिपोर्ट दी। रिपोर्ट से पता चला कि यह एक जादुई दर्पण है।

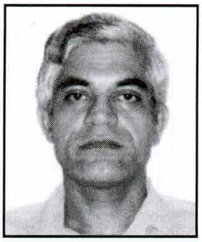

परीक्षण में पाया कि जब हम इस दर्पण में देखते हैं तब हमें दर्पण की मालकिन जिसे प्यार करती है उस व्यक्ति को दिखाता है। कीचक ने समझा कि सैरंध्री, दर्पण की मालकिन भीम से प्यार करती है।

जब पांडव अपने बनवास से बाहर आए तब दुर्योधन उनको प्रांत देने में असहमत था। इसके कारण पांडवों और कौरवों के बीच महाभारत में भयंकर लड़ाई हुई। पांडवों ने कौरवों को हराया। बहुत लोग मारे गए। प्रांत टूट गए और कई चीजें नष्ट हो गई और साथ ही यह जादुई दर्पण।

साल बीते, सदियां बीत गई। मिट्टी में खोए दर्पण के जादुई गुणों में भी कई परिवर्तन हुए। समय के साथ महाभारत एक कहानी बन गई।

सहस्राब्दी बीत जाने तक इलेक्ट्रॉनिक और आई.टी. मानव जाति की उपजीविका बन गई। नए भारत में सी-डैक स्थापित किया गया और उसकी एक शाखा नोएडा में भी स्थापित हुई। द्रौपदी के दर्पण में कई परिवर्तन हुए थे। डॉ. राजीव नाग को भूमि से यह खोया दर्पण मिला। अब दर्पण के मालिक डॉ. नाग हैं। सी-डैक के कार्यकारी निदेशक डॉ. जार्ज वर्की के कहने पर डॉ. राजीव नाग ने सी-डैक कर्मचारियों को देखने के लिए इस दर्पण

को सी-डैक नोएडा में स्थापित किया। नए लोग इस दर्पण को सी.एम.एम.आई. स्तर 5 नाम दिया।

हर दिन कर्मचारी अपने काम शुरू करने के पहले और काम बन्द करने के बाद इस नए आइने में देखा। लेकिन किसी भी व्यक्ति ने इस आइने में डॉ. नाग की प्रेमिका को नहीं देखा क्योंकि दर्पण की विशेषताएं और गुण बदल गए थे। कर्मचारियों ने आइने में अपने ग्राहकों के चेहरों को देखा, ग्राहकों के मुंह आइने में प्रतिबिंबित हुए। प्रतिबिम्ब कर्मचारियों को चुस्त और जागरूक बनाया। उन्होंने निष्ठापूर्वक अपना काम किया। सी-डैक के उत्पादों और सेवाओं की गुणवत्ता में वृद्धि हुई और मात्रा में भी।

इसी आइने रूपी सी.एम.एम.आई. स्तर 5 के कारण सी-डैक नोएडा को समय पर गुणवत्ता के साथ उत्पाद और सेवाएं मिली।

- विजयगोपालन के.पी.,
संयुक्त निदेशक, इम्बेडिड सिस्टम

जिंदगी

जो हम हैं,
और जो होना चाहते हैं।
जैसे हम हैं,
और समाज में जैसा दिखना चाहते हैं।
दोनों के बीच
जम्हाई लेता एक अंतराल है।
जिसको भरने की कवायद भर,
बनकर रह गई है जिंदगी हमारी।
यह रात दिन की भागदौड़,
यह सुबह-शाम की चिंता लाचारी।
तोहफे, तमगे पाने की तख्तियां लगाने की
मन में खुदी लालसाएं भारी
आफिस, घर अथवा क्लब के
नेपथ्य में
चुपके चुपके
खेलती अत्मविज्ञप्ति अतिचारी

कारीगर कला के या प्रतिष्ठा के पुजारी
औरों की दृष्टि से खुद को देखने की बिमारी
यही, सब यही बची है जिंदगी हमारी
कुइयां की ठंडक, सागर की खारी जिंदगी हमारी।

- जितेन्द्र सिंह
प्रमुख तकनीकी अधिकारी, इम्पलीमैंटेशन

धैर्य एक कड़वे पौधे की तरह होता है लेकिन इससे मिलने वाला फल बहुत मीठा होता है।

मेरी माँ के धारावाहिक

सुबह से लेकर रात तक माँ का एक ही है काम,
कभी इस चैनल कभी उस चैनल ज़रा न दे वो टी.वी. को आराम।
कोई भी ऐसा धारावाहिक नहीं जिसे वह देखना जाए भूल,
उनकी लिस्ट है लम्बी - गीत, उतरन, ससुराल गेन्दा फूल।
पिछले महीने एक धारावाहिक में हुई परिवार में लड़ाई।
मैंने की जो ज़रा सी शैतानी हो गई मेरी भी जम के पिटाई।
देखकर किसी धारावाहिक में कोई पार्टी या शादी,
वैसे ही कपड़े लाकर माँ कर देती है पैसे की बर्बादी।
कल एक धारावाहिक में पति जो अपनी पत्नी पर भड़का,
रात के खाने में माँ ने लगा दिया तेज मिर्च का तड़का।
अब तो बाबा हम सब को घर जाने से लगता है डर बड़ा,
पता नहीं माँ का कैसा हो मूड-अच्छा या सड़ा।
करती हूँ विनती - हे भगवान कलयुग में दिखाइये अपने चमत्कार की कला।
गायब कर दीजिए सदा के लिए मेरे घर से यह टी.वी. की बला।

- प्रीति राज़दान
संयुक्त निदेशक, टेस्टिंग

अपने विचारों की अभिव्यक्ति मनुष्य का स्वाभाविक गुण है। यह साहित्य की किसी भी विधा, अर्थात् कहानी, कविता, लेख अथवा व्यंग्य द्वारा अपने भावों व मनोभावों को प्रकट करके की जा सकती है और हमारी हिन्दी सभी किस्म की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है तथा इसके अपनत्व को अनुभव किया जा सकता है।

जिंदगी के रूप

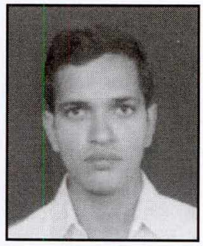

जाने क्या-क्या रंग दिखलाती है ज़िंदगी,
पल में गम, पल में खुशी दे जाती है ज़िंदगी,
गुजरती रहती है अविरत सरिता की तरह,
ना एक पल भी ठहराव दिखलाती है जिंदगी।
हर एक पल कटता है यूं सदियों की तरह,
जब एक पल भी किसी को तड़पाती है ज़िंदगी,
इसी समय धारा में बहती जाती हैं जिंदगी।
अपनों के साथ जन्नत बन जाती है ज़िंदगी,
वरना तो दोखज से भी भयानक है ज़िंदगी,
लोग प्यार करके जाने क्यूं साथ छोड़ देते हैं इसका,
प्यार का ही तो दूसरा नाम हैं ज़िंदगी।

अभय पाल चौहान
तकनीकी अधिकारी, सूचना सेवाएं

धैर्य एक कड़वे पौधे की तरह होता है लेकिन इससे मिलने वाला फल बहुत मीठा होता है।

ताजमहल

मैं वक्त की दहलीज़ पर ठहरा हुआ पल हूँ।
कुछ और नहीं यारों मैं ताजमहल हूँ।

भूला है और न भूलेगा कभी मुझको जमाना
जिन्दा हैं, मेरे दम से मुहब्बत का फसाना,
जो दिल में उतर जाए मैं वो हंसी गज़ल हूँ।
मैं वक्त की दहलीज़ पर ठहरा हुआ पल हूँ।

मैं अमन का पैगाम हूँ, मुहब्बत की निशानी
वो हुस्न हूँ, ढ़लती ही नहीं जिसकी जवानी
ये किसने कहा तुमसे, कि मैं गुज़रा पल हूँ।
मैं वक्त की दहलीज़ पर ठहरा हुआ पल हूँ।

पत्थर की इमारत हूँ, मगर मोम का दिल है।
पूनम की हँसी चांद मेरे गाल का तिल है।

मुमताज़ की चाहत का खिला
कमल हूँ।
मैं वक्त की दहलीज़ पर ठहरा
हुआ पल हूँ।

कब मैंने कहा मुझको निगाहों
में बसा लो,
मुमकिन है, तो जहरीली हवाओं से बचा लो,
वो चाहने वालों की तमन्नाओं का फल हूँ।
मैं वक्त की दहलीज़ पर ठहरा हुआ पल हूँ।

- अजय पाल
वरिष्ठ सहायक, वित्त विभाग

सबको हिन्दी सीखनी चाहिए। इसके द्वारा भाव विनिमय में सारे भारत को सुविधा होगी।
-चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

अगर आपके कंप्यूटर में हिंदी की सुविधा मौजूद नहीं है

अगर आपके कंप्यूटर में हिंदी की सुविधा मौजूद नहीं है, तब भी आप इंटरनेट पर मौजूद सुविधाओं का इस्तेमाल करते हुए हिंदी में काम कर सकते हैं। ईमेल भेजने से लेकर ब्लॉग बनाने तक और यहां तक कि लेख लिखने का काम भी ऑनलाइन हिंदी टूल्स (Tools) की मदद से किया जा सकता है। इसके लिए न तो आपको सॉफ्टवेयर डाउनलोड करने की जरूरत है और न ही इंस्टॉलेशन का कोई झंझट।

हिंदी यूजर्स को टाइपिंग की सुविधा मुहैया कराने के लिए कई कंपनियों, संस्थानों और तकनीकी स्वयंसेवकों ने पहल की है। नेट पर मौजूद इन सुविधाओं का इस्तेमाल करने के लिए कंप्यूटर में फॉन्ट (Font) डाउनलोड करने की भी जरूरत नहीं होती। बस वेबसाइट खोलिए और टाइपिंग शुरू कर दीजिए। जैसा कि हिंदी में होता आया है, ऑनलाइन टूल्स पर भी कई तरह के कीबोर्ड लेआउट हैं। हालांकि इन पर ट्रांसलिटरेशन (रोमन में टाइप करते हुए हिंदी में टेक्स्ट (Text) देखना) कीबोर्ड ज्यादा लोकप्रिय है, क्योंकि ऑनलाइन टाइपिंग सुविधा का इस्तेमाल करने वाले ज्यादातर लोग वही हैं, जिनके कंप्यूटर में हिंदी की बुनियादी सुविधाएं नहीं हैं और जो हिंदी में मानक तरीके से टाइपिंग करना नहीं जानते। ऐसे लोगों के लिए की (Key) बोर्ड पर छपे अंग्रेजी अक्षरों को देखते हुए रोमन में टाइप करना आसान होता है। ऑनलाइन ठिकानों पर टाइप किए गए हिंदी टेक्स्ट को कॉपी कर जरूरत के लिहाज से कहीं भी पेस्ट किया जा सकता है।

क्विलपैड (Quil Pad)

चेन्नै की टेकियोन टेक्नॉलजीज का यह ऑनलाइन ऐप्लिकेशन हिंदी में काम करने के इच्छुक लोगों के बीच लोकप्रिय है। इसके छोटे रूप आपको कई हिंदी वेबसाइटों पर दिख जाएंगे, जिनका इस्तेमाल हिंदी में यूजर रेस्पॉन्स पाने के लिए किया जाता है। यह ट्रांसलिटरेशन पद्धति पर आधारित है। क्विलपैड का दावा है कि यह यूजर्स के टाइपिंग पैटर्न का अध्ययन करते हुए उन्हें अपने डेटाबेस में डालता जाता है। बाद में जब दूसरे यूजर उन्हीं शब्दों को टाइप करना चाहते हैं तो पिछले पैटर्न को उपलब्ध करा देता है। इसे यूं समझा जा सकता है। हिंदी शब्द 'भारत' लिखने के लिए रोमन में bhaarat भी टाइप किया जा सकता है और bharat भी। इसी तरह हिंदी शब्द 'श्री' लिखने के लिए रोमन में तीन शब्द टाइप किए जा सकते हैं और तीनों का हिंदी में एक ही ढंग से कन्वर्जन होगा। ये रोमन शब्द हैं shree, shri और sri ऐसा इसलिए मुमकिन हुआ क्योंकि क्विलपैड ने लोगों के टाइपिंग पैटर्न पर नजर रखते हुए उन्हें अपने डेटाबेस में शामिल कर लिया।

क्विलपैड ने अब एक ऑनलाइन एडिटर भी उपलब्ध कराया है, जिससे नई फाइलें बनाना और उन्हें उसकी वेबसाइट पर ही सहेज लेना आसान हो गया है। यानी टाइप किए गए टेक्स्ट को कट-पेस्ट कर अपने पास रखने की समस्या से छुटकारा। टाइप किए गए टेक्स्ट को वेबसाइट से

ही दूसरे लोगों को ईमेल भी किया जा सकता है। वेबसाइट है: http://www.quillpad.in

यूनिनागरी (Uni-Nagri)

अमेरिका में रहने वाले वरिष्ठ हिंदी ब्लॉगर रमन कौल ने कुछ साल पहले यूनिनागरी के नाम से सरल ऑनलाइन टाइपिंग ऐप्लिकेशन उपलब्ध कराया था। समय बीतने के साथ उसके फीचर्स बढ़ते गए और अब यह वेबसाइट हिंदी में चार तरीके से टाइपिंग करने की सुविधा देती है। सेमी-फोनेटिक (सीमित ट्रांसलिटरेशन), इनस्क्रिप्ट (भारत का मानक कीबोर्ड लेआउट), रेमिंगटन (पुराने ढंग से टाइप करने का तरीका) और सुज़ा (एक खास फॉन्ट जो रोमन में लिखते हुए हिंदी टाइपिंग की सुविधा देता है। इसका अपना रोमन-देवनागरी कन्वर्जन फॉर्म्युला है)।

यूनिनागरी पर हिंदी के अलावा गुजराती, बांग्ला, गुरमुखी, कन्नड़, तमिल, तेलुगू, मलयालम और उर्दू में टाइप करने की सुविधा भी है। यूनिनागरी में इस्तेमाल होने वाले कीबोर्ड का चित्र भी साइट पर है, जिससे टाइपिंग के समय मदद ली जा सकती है।

लिपिक इन

यह ऑनलाइन ऐप्लिकेशन आईआईटी कानपुर के पूर्व छात्र अमित जैन ने बनाया है जो फिलहाल लंदन में रहते हैं। यह भी बुनियादी तौर पर यूनिनागरी की ही तर्ज पर काम करता है लेकिन इसमें आर्टिफिशल इन्टेलिजेंस का भी इस्तेमाल हुआ है। किसी भी शब्द का पहला अक्षर टाइप करते ही यह आगे के अक्षरों का अनुमान लगाकर उन्हें सुझाता है। अगर आप सुझाए गए शब्दों में से ही कोई शब्द टाइप करना चाहते हैं, तो उन पर क्लिक कर दीजिए, आगे के अक्षर टाइप करने की जरूरत नहीं रहेगी। इस ऐप्लिकेशन में दिए गए ऑनलाइन कीबोर्ड पर माउस से क्लिक करते हुए भी टाइप किया जा सकता है। लिपिक में हिंदी के तीन कीबोर्ड मौजूद हैं। इनस्क्रिप्ट, रेमिंगटन और एंग्लो-नागरी। इनमें से एंग्लो-नागरी लगभग वैसा ही है, जैसा यूनिनागरी का सेमी-फोनेटिक कीबोर्ड है। लेकिन शब्दों को सुझाने की क्षमता इसे खास बनाती है। यह ऐप्लिकेशन सात भारतीय भाषाओं में काम करने में सक्षम है और अंग्रेजी, चीनी (मंदारिन), वियतनामी और फारसी में भी टाइपिंग की सुविधा देता है। लिपिक के जरिए हिंदी में टाइप करने के लिए यहां जाएं: lipik.in/hindi.html

ई-कलम

हिंदी सर्च इंजन 'रफ्तार' ने ई-कलम के नाम से ऑनलाइन टाइपिंग की सुविधा मुहैया कराई है। हालांकि यहां यूनिकोड हिंदी में टाइप करने के लिए सिर्फ इनस्क्रिप्ट कीबोर्ड लेआउट ही इस्तेमाल होता है। कुछ दूसरे लोकप्रिय फॉन्टस में भी टाइप करने की सुविधा यहां मौजूद है, जैसे कृति, सुज़ा, चाणक्य आदि। लेकिन इनमें टेक्स्ट टाइप करते समय आपको उस फॉन्ट में टाइप करने के मूल तरीके की जानकारी होनी चाहिए। इस वेबसाइट पर फॉन्ट कन्वर्जन की सुविधा भी दी गई है। ई-कलम यहां है: ekalam.raftaar.in

हिंदी कलम

ट्रांसलिटरेशन पद्धति पर आधारित इस ऐप्लिकेशन में स्क्रीन को रोमन और देवनागरी दो भागों में बांटा गया है। स्क्रीन के बायीं ओर बॉक्स में पूरा रोमन शब्द टाइप होते ही दायीं ओर उसका देवनागरी रूप अपने आप आ जाता है। यूजर की मदद के

लिए हिंदी अक्षरों को टाइप करने के लिए रोमन के कॉम्बिनेशंस का ब्यौरा भी इसी पेज पर है। ऑटो सजेस्ट की सुविधा भी है जो यूजर को पूरा शब्द टाइप होने से पहले ही अनुमानित शब्द सुझा देती है। साइट स्पेलिंग चेक करने की भी सुविधा मुहैया कराती है।

चन्द्रिका गौतम
इंजीनियर आई.टी., डेवलपमेंट ग्रुप

बड़ा ही महत्व है

नदियों में नीर का, दूध में पनीर का,
भोजन में खीर का, बड़ा ही महत्व है।

गणित में जीरो का, युद्ध में वीरों का,
राज में वजीरों का, बड़ा ही महत्व है।

रामायण में राम का, महाभारत में श्याम का,
फलों में आम का, बड़ा ही महत्व है।

पशुओं में गाय का, सर्दियों में चाय का,
चुनाव में राय का, बड़ा ही महत्व है।

वाहनों में तेल का, समाज में मेल का,
शिक्षा में खेल का, बड़ा ही महत्व है।

राम बिलास चौधरी
कनिष्ठ सहायक, सामग्री प्रबंधन

हिन्दी भारत की अधिकांश जनता द्वारा बोली और समझी जाने वाली भाषा है।

आपसे दोस्ती हम यूं ही नहीं कर बैठे

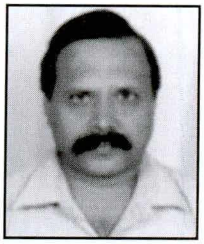

आपसे दोस्ती हम यूं ही नहीं कर बैठे,
क्या करें हमारी पसंद ही कुछ 'खास' है
चिरागों से अगर अंधेरा दूर होता,
तो चाँद की चाहत किसे होती,
कट सकती अगर अकेले जिन्दगी,
तो दोस्ती नाम की चीज ही न होती,
कभी किसी से जीकर ऐ जुदाई मत करना,
इस दोस्त से कभी रुसवाई मत करना,
जब दिल ऊब जाए हमसे तो बता देना,
न बताकर बेवफाई मत करना,
दोस्ती सच्ची हो तो वक्त रुक जाता है
आस्मां लाख ऊँचा हो मगर झुक जाता है,
दोस्ती में दुनिया लाख बने रुकावट,
अगर दोस्त सच्चा हो तो खुदा भी झुक जाता है,
दोस्ती वो एहसास है जो मिटता नहीं,
दोस्ती पर्वत है वह, झुकता नहीं,
इसकी कीमत क्या है पूछो हमसे,
यह वो 'अनमोल' मोती है जो बिकता नहीं
सच्ची है दोस्ती आजमा के देखो
आपसे दोस्ती हम यूं नही कर बैठे

– कौशल सक्सेना
कार्यपालक मानव संसाधन

वैब सर्वर क्या है?

वैब सर्वर (Web Server) क्या है?

वैब सर्वर वह कम्प्यूटर प्रोग्राम है जो अपने क्लाइंट से एच.टी.टी.पी. (HTTP) निर्देश ग्रहण करता है और उन निर्देशों पर प्रक्रिया कर बदले में उन्हें एच.टी.टी.पी. (HTTP) के अनुसार वैब पेज भेजता है। वैबसर्वर के क्लाइंटस को हम वैब ब्राउजर भी कहते हैं। वैब सर्वर सॉफ्टवेयर वह सॉफ्टवेयर है जो वैब पेज सर्व करता है अर्थात ऐसा सॉफ्टवेयर जो वैब पेजों को आप तक पहुंचाता है। सामान्यत: वे वैब पेज HTTP प्रोटोकॉल द्वारा आप तक पहुंचाये जाते हैं। किसी भी कंप्यूटर में आप वैब सर्वर का सॉफ्टवेयर स्थापित कर और उसे इंटरनैट से जोड़ कर आप उसे अंतरजाल (Internet) पर वैब पेज प्रदान करने वाले वैब सर्वर में बदल सकते हैं। हम जो भी वैब पेज अंतरजाल पर देखते हैं वे हमारे पास किसी ना किसी वैब सर्वर के द्वारा ही पहुंचाये जाते हैं। यदि हम अपने कंप्यूटर पर केवल साफ्टवेयर स्थापित करें और उसे इंटरनैट से न जोड़ें तो भी वो पूरा वैब सर्वर है जो कि केवल स्थानीय रूप से (Locally) आप के लिये काम करेगा।

वैब सर्वर को हम दो भागों में बांट सकते हैं।

1. वह मशीन जिस पर वैबसर्वर को स्थापित किया जाता है।
2. वह सॉफ्टवेयर जो वैब सर्वर की तरह काम करता है।

वैब सर्वर के प्रमुख लक्षण

एच.टी.टी.पी. (HTTP): हर वैब सर्वर अपने क्लाइंट से एच.टी.टी.पी. (HTTP) निर्देश लेता है और एच.टी.टी.पी. (HTTP) निर्देश वापस देता है। एच.टी.टी.पी. (HTTP) एक तरह का प्रोटोकॉल है। इसका पूरा नाम है हाइपर टैक्स्ट ट्रांस्फर प्रोटोकॉल (Hyper Text Transfer Protocol)। मुख्यत: वैब सर्वर जो निर्देश लौटाता है वह (HTML) में होते हैं लेकिन इसके अलावा वैब सर्वर डॉक्यूमैंट, चित्र, फोटो, वीडियो आदि भी भेज सकता है। यदि क्लाइंट ने कुछ ऐसी चीज की मांग कि जो वैब सर्वर के पास नहीं है तो वैब सर्वर अपने क्लाइंट को एक त्रुटि-संदेश (Error Message) भेजेगा।

लॉगिंग (Logging): हर वैब सर्वर अपने हर क्लाइंट से संबंधित जानकारी अपने वैब लॉग में रखता है। जिसमें क्लाइंट का आई.पी. (IP) , उसके द्वारा मांगी गयी जानकारी आदि होती है। यह आंकड़े वैब सर्वर के मालिक (वैब मास्टर) के लिये बहुत काम के होते हैं।

ऊपर वाले दो लक्षण किसी भी वैब सर्वर में होने आवश्यक हैं लेकिन इसके अलावा भी वैब सर्वर में कुछ और विशेषताऐं होती है जो लगभग सभी वैब सर्वर में पायी जाती हैं लेकिन उनका प्रयोग करने का तरीका हर सर्वर में अलग अलग हो सकता है।

एच.टी.टी.पी.एस. (HTTPS) : सामान्यत: कोई भी वैब सर्वर क्लाइंट को अपने पोर्ट 80 में ही कनेक्ट करने की अनुमति देता है। लेकिन सुरक्षा के लिये वैब सर्वर में एस.एस.एल. या टी.एस.एल

सपोर्ट होता है जो क्लाइंट को वैब सर्वर के पोर्ट 443 में कनेक्ट करता है।

सत्यापन (Authentication): आप वैब सर्वर के द्वारा अपने क्लाइंट को सत्यापित भी कर सकते हैं अर्थात आप उन्ही क्लाइंट के निर्देश ले सकते हैं या उन्हे दे सकते हैं जिन्हे आपने किसी भी सत्यापन विधि से सत्यापित कर लिया है। जैसे कि यूजर-नेम और पासवर्ड। आप चाहें तो आप अपने वैब सर्वर की केवल चुनिंदा सामग्री या फिर पूरी सामग्री के लिए भी ऐसा कर सकते हैं।

कंप्रेशन (Compression): कभी कभी आपके क्लाइंट आपके वैब सर्वर पर रखी कुछ ऐसी सामग्री मांगते हैं जिसका आकार (साइज) काफी ज्यादा होता है तो ऐसी स्थिति में बैंडविथ बचाने के लिये वैब सर्वर उस सामग्री को कंप्रेस कर उसे छोटे आकार में परिवर्तित कर देता है।

वर्चुअल होस्टिंग (Virtual Hosting): अधिकतर वैब सर्वर वर्चुअल होस्टिंग की सुविधा देते हैं। वर्चुअल होस्टिंग वह है जिसमें एक ही आई.पी एड्रेस के द्वारा एक से अधिक साइट्स को वैब सर्वर पर स्थापित किया जाता है।

अधिकतर वैब सर्वर स्टैटिक (Static) सामग्री और डायनामिक सामग्री दोनों को भेजने में सक्षम होते हैं। स्टैटिक सामग्री वह सामग्री है जो कि पूर्व निर्धारित है जैसे किसी कंपनी के बारे में जानकारी या कोई डॉक्यूमेंट। डायनामिक सामग्री वह सामग्री है जो क्लाइंट के अनुसार, समय के अनुसार या फिर किसी और आधार पर बदलती रहती है, जैसे यदि मैं अपने शहर के ही समाचार देखना चाहूं तो मुझे केवल अपने शहर के समाचार ही दिखेंगे।

वैब सर्वर के लिये आजकल बहुत से सॉफ्टवेयर उपलब्ध हैं जैसे माइक्रोसॉफ्ट का आई.आई.एस. (Microsoft IIS) अपाची (Apache) गूगल का जी.एफ.ई. (GFE by Google), नैटस्केप (Netscape) आदि। इनमे से कुछ कॉमर्शियल सॉफ्टवेयर हैं तो कुछ मुफ्त। अपाची मुफ्त और मुक्त सॉफ्टवेयर है और अंतरजाल (Internet) पर उपस्थित बहुत सी साइट्स इसी पर स्थापित हैं।

नैटक्राफ्ट द्वारा अप्रैल 2008 में कराए गए सर्वे के अनुसार अपाची और आई.आई.एस. में ही मिलकर करीब 85 प्रतिशत वैब साइट चल रही हैं जिसमें अपाची का प्रतिशत करीब 50 प्रतिशत है।

कंपनी (Vendor)	उत्पाद (Product)	कुल वैब साइट (Web Sites)	प्रतिशत
अपाची (Apache)	अपाची (Apache)	83,206,564	50.22 %
माइक्रोसॉफ्ट (Microsoft)	आई.आई.एस. (IIS)	58,540,275	35.33 %
गूगल (Google)	जी.एफ.ई. (GFE)	10,075,991	6.08

- अंशु जैन
तकनीकी अधिकारी, डेवलपमेंट ग्रुप

हिन्दी स्वतंत्रता आंदोलन की भाषा रही है।

फलों के फायदे

शारीरिक विकास और स्वास्थ्य के लिए पौष्टिक तत्वों से भरपूर फलों में कई खूबियां हैं। इनका सेवन अत्यंत आवश्यक है। क्योंकि इनकी कमी होने से शरीर का समुचित विकास रुक जाता है और सेहत बिगड़ने लगती है। पौष्टिकता से भरपूर भोजन वही है, जिसमें उचित मात्रा में प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेट, विटामिन, खनिज लवण और पानी पर्याप्त मात्रा में रहें। यह सब फल में पाया जाता है। इसलिए यह कहा गया है कि प्रतिदिन हर स्वस्थ व्यक्ति को कोई भी एक फल अवश्य खाना चाहिए।

आम, केला, पपीता, नाशपाती, अंगूर, खजूर, अमरूद, बेल, लीची, मौसमी, संतरा, सेब, गाजर आदि फल का सेवन भोजन के साथ अवश्य किया जाना चाहिए। इनमें केला एक ऐसा फल है जो अत्यधिक मात्रा में सभी स्थानों पर मिलता है। इसमें पाए जाने वाले पर्याप्त पोषक तत्वों से स्वास्थ्यवर्द्धन होने के साथ-साथ मधुमेह, दस्त, प्रवाहिका, प्रदर, गठिया वाय इत्यादि में भी फायदा होता है। इसी के साथ मौसम के अनुकूल आने वाले फलों का सेवन फायदेमंद होता है। जिसमें कुछ फल स्मरण शक्ति और आयु बढ़ाने वाले, बालों, नेत्र व पेट संबंधी रोगों के लिए उपयोगी होते हैं, तो कुछ के सेवन से सेहत के साथ-साथ सौन्दर्य की भी वृद्धि होती है। अमरूद स्वास्थ्यवर्धक और रोचक फल है। जिससे मल संबंधी कुछ शिकायतें दूर होती हैं। अमरूद में पाया जाने वाला कैल्शियम, फासफोरस, शर्करा आदि तत्व पाए जाते है और यह सर्वत्र आसानी से उपलब्ध है। इसी तरह नींबू में विटामिन सी, कैल्शियम, जल और अम्ल की पर्याप्त मात्रा से पेट संबंधी विकार, उल्टी, दस्त, अपच, अरुचि, पित्त विकार आदि में लाभकारी प्रभाव मिलता है। गर्मी में नींबू का शरबत राहत देने वाला है। गर्मी के मौसम में पाए जाने वाले फलों में आम, बेल, तरबूज, खरबूजा, ककड़ी, जामुन है तो सर्दी में अंगूर, अमरूद, सेब, गाजर, अनार, संतरा आदि खूब मिलते हैं। इसमें जामुन शरीर में रक्त की कमी को दूर करता है तथा ज्वर को दूर करता है। यह पेट को भी साफ करता है।

फलों के संदर्भ में वैज्ञानिक शोध करते रहे हैं। ताजा शोध के मुताबिक नारंगी और अंगूर हड्डियों को मजबूत बनाते हैं। वाशिंगटन स्थित टेक्सास ए एंड एम विश्वविद्यालय में सब्जी और फल अध्ययन केन्द्र के शोधकर्ताओं का मानना है कि नारंगी और अंगूर के रस का नियमित सेवन करने से हड्डियां मजबूत होती हैं। उन्हें खोखला होने से बचाया जा सकता है। शोध कर्ताओं में भारतीय मूल के वैज्ञानिक भी हैं।

इसके अतिरिक्त फल का इस्तेमाल शाकाहार का एक अभिन्न अंग रहा है। बदलते हुए रहन-सहन के मुताबिक अपनाए गए भोजन को संतुलित बनाने में फलों की अहम भूमिका हो सकती है। यदि इसे सही तरीके से सेवन किया जाए। सुबह नाश्ते में ताजे मौसमी फल, दूध, दही, पनीर, मक्खन और अंकुरित चना या दूसरे खाद्य पदार्थों की तरह पौष्टिक होते हैं इससे रोग निरोधक क्षमता बढ़ती है।

– प्रिया

कार्यालय सहायक, परीक्षा नियंत्रण कार्यालय

क्लाउड कंप्यूटिंग

अगर आप सोच रहे हैं कि क्लाउड कंप्यूटिंग बादलों से संबंधित है, तो आप एकदम सही सोच रहे हैं। बस इतना याद रखिए कि इन बादलों में पानी नहीं, बल्कि डिजिटल डाटा तरह-तरह की जानकारियां तथा उनसे संबंधित अन्य सामग्री भरी होती है। और ये बादल आकाश में नहीं, बल्कि काफी विशालकाय कंप्यूटरों पर पाए जाते हैं, जिन्हें सर्वर कहते हैं। क्लाउड कंप्यूटिंग की बात आजकल कुछ ज्यादा हो रही है, पर यह कोई नयी चीज नहीं है। अगर आप इंटरनेट पर गए हैं, तो जाने अनजाने आपने भी इसका इस्तेमाल किया होगा

विश्वास नहीं होता तो ई-मेल जैसी साधारण सी इंटरनेट सेवा का उदाहरण लें। ज्यादातर लोग ई-मेल अपने कंप्यूटर पर डाउनलोड नहीं करते, बल्कि इंटरनेट पर देख कर वहीं छोड़ देते हैं। आखिर कौन अपने कंप्यूटर के हार्ड ड्राईव को ई-मेल से भरना चाहता है? पर आपने कभी यह सोचा कि यह ई-मेल जो आपने इंटरनेट या वेब पर छोड़ रखी है, आखिर कहां सहेज कर रखी जाती है, ताकि आप जब चाहें तब अपने ई-मेल अकाउंट में जाकर उसे देख लें। जवाब सीधा सा है-क्लाउड पर।

आप अपने कंप्यूटर के जरिए डेटा प्राप्त करते हैं क्योंकि आप उन्हें वहां स्टोर करते हैं लेकिन क्लाउड कंप्यूटिंग में इसकी बजाय कंप्यूटर नेटवर्क के द्वारा डेटा, म्यूजिक, चित्र वगैरह प्राप्त किए जाते हैं यानि कहीं दूर रखे कंप्यूटर में ये सभी स्टोर कर सकते हैं और जब चाहा तब उन्हें प्राप्त कर सकते है। क्लाउड कंप्यूटिंग से आप अपने कंप्यूटर को अपग्रेड करने या उसमें लोड बढ़ने की समस्या से छुटकारा पा सकते हैं। उनके वायरस संक्रमित होने का खतरा भी नहीं रहता है।

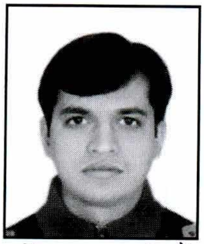

कई कंपनियां अब इस व्यवसाय में उतर चुकी हैं। वे अपने ग्राहकों के डेटा वगैरह सुरक्षित रखती हैं ग्राहक उन्हें जब चाहे एक्सेस कर सकता है। क्लाउड कंप्यूटिंग को बहुत आसान ढंग से समझना चाहें तो यह ऐसा चलता हुआ बादल है जिसकी मदद से आप जब चाहें अपने मन मर्जी से डेटा की बरसात करा सकते हैं। यह बादल आपको कभी भी कहीं भी किसी भी तर्ज पर अपने कंप्यूटर या लैपटॉप या विंडो मोबाइल पर आपकी सेवा में हाजिर रहता है। इसका श्रेय उस कंपनी को जाता है जो आपको अपने क्लाउड आधारित सर्वर पर अपने डेटा स्टोर करने का अवसर प्रदान करती है। इसका सबसे बढ़िया उदाहरण गूगल एप्स है, जो बिज़नेस एप्लीकेशन ऑनलाईन मुहैया करता है। इन्टरनेट पर सर्वरों में जानकारियाँ सदा सर्वदा के लिए भंडारित रहती हैं और ये उपभोक्ता के लैपटॉप, डेस्कटॉप, गेमिंग कंसोल पर आवश्यकतानुसार अस्थायी रूप से संग्रहीत रहती हैं।

आमतौर पर हम कंप्यूटर पर दस्तावेज बनाने के लिए माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस नाम के सॉफ्टवेयर का इस्तेमाल करते हैं जिसे हमें कंप्यूटर पर डालना पड़ता है और जिससे बनी फाइलें और सामग्री हमें आमतौर पर कंप्यूटर पर ही छोड़नी पड़ती हैं। अब देखिए, गूगल के गूगल डॉक्स को, जो पूरी तरह

इंटरनेट पर चलता है और आपको लगभग वही सुविधाएं देता है जो आपको माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस से मिलती हैं, डाउनलोड करने की कोई जरूरत नहीं है। इससे बनी फाइलें और दस्तावेज इंटरनेट पर ही रहेंगे, जिन्हें आप किसी भी कंप्यूटर या सेलफोन पर देख सकते हैं।

क्लाउड कंप्यूटिंग के लाभ

कम लागत-किसी उद्यम को कम या लगभग शून्य लागत पर आरम्भ किया जा सकता है। चलाने का खर्च भी कम है। क्लाउड कम्प्यूटिंग की सुविधाएँ एपीआई (api) के माध्यम से प्राप्त की जाती हैं। प्रयोक्ता की स्थिति एवं उसके द्वारा प्रयुक्त युक्ति (डिवाइस) कुछ भी होने पर भी इसका उपयोग किया जा सकता है, क्योंकि यह ब्राउजर पर आधारित है।

विश्वसनीयता- चूंकि यह बड़ी एवं विश्वसनीय कम्पिनयों द्वारा प्रदत्त सेवा है (जैसे अमेजन डॉट काम) - यह बहुत विश्वसनीय है।

आवश्यकता के अनुसार आप कम क्षमता किराये पर ले सकते हैं और जैसे ही आपको लगे कि आपको अधिक क्षमता की आवश्यकता है, अधिक क्षमता खरीद लीज़िये। यह बदलाव एक घंटे से भी कम समय में किया जा सकता है।

क्लाउड कम्प्यूटिंग में आमतौर पर निम्नलिखित संयोजन शामिल किये जाते हैं:

एक सेवा के रूप में बुनियादी संरचना (IaaS)

एक सेवा के रूप में प्लेटफोर्म (PaaS)

एक सेवा के रूप में सॉफ्टवेयर (SaaS)

क्लाउड कम्प्यूटिंग सेवाएं अक्सर सामान्य वाणिज्यिक अनुप्रयोगों को ऑनलाइन उपलब्ध कराती हैं और एक वेब ब्राउजर से उपलब्ध होती हैं, जबकि सॉफ्टवेयर और डेटासर्वर पर संग्रहित होते हैं।

साइबर मीडिया रिसर्च इंडिया ने एक अध्ययन के आधार पर कहा है कि घरेलू क्लाउड कंप्यूटिंग उद्योग का कारोबार 2014 तक बढ़कर 2,434 करोड़ रुपये तक पहुंच जाएगा।

अध्ययन के अनुसार 2102 में क्लाउड कंप्यूटिंग क्षेत्र की मांग में 6.8 फीसदी की वृद्धि होगी, जबकि इससे पिछले साल 2010 में इसकी वृद्धि दर चार फीसदी थी। क्लाउड कम्प्यूटिंग के तहत कंपनियों के विभिन्न प्रकार के आंकड़ों और सूचनाओं को ऑनलाइन स्टोर करने की सुविधा उपलब्ध कराई जाती है।

नितिन कुमार वार्ष्णेय
तकनीकी अधिकारी, डेवलपमेंट ग्रुप

हिन्दी भारत संघ की राजभाषा है।

सारे जहाँ से अच्छा कहाँ है वो हिन्दोस्तान हमारा।

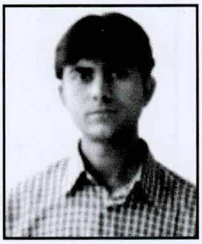

कहाँ हैं बुलबुले और कहाँ हैं वो गुलसितां हमारा ।
घुर्बत मे हो या फुर्सत में, कब रहता है दिल वतन में ।
कौन कहता है कि देश ही दिल है और जहाँ हमारा ।।1।।

परबत ही है वो सब से ऊंचा हमसाय है जो आसमाँ का ।
वो ही है संतरी इस देश का, बाकी और कौन रक्षक है हमारा ।।2।।

गोदी मे खेलती थी जिसकी हजारों नदियां।
अब सूखी और मैली पड़ी हुई है वो सारी नदियाँ
गुलशन था जिनके दम से रशक-ए-जना हमारा ।।3।।

मझहब नही सिखाता आपस में बैर रखना ।
फिर भी हम सीख जातें है क्यूँ आपस में बैर करना
जातियों में बंट गए हैं सब और शून्य हो गया है हिन्दोस्तान हमारा ।।4।।

युनान-ओ-मिस्र-आ-रोमा सब मिट गए जहाँ से ।
कौड़ियों के मोल बिक रहे हैं इमानोधर्म
अब कहाँ बचा है बांकी नामो-निशां हमारा ।।5।।

कुछ बात थी हममें कि हस्ती मिटती नहीं थी हमारी ।
सदियों रहा था दुश्मन दौर ए जमां हमारा
खुद ही के दुश्मन बन गए हैं हम इस तरह से,
और क्या-क्या बिगाड़ेगा जमाना हमारा ।।6।।

नया अभी भी अमरीका और पुराना हो गया अब हिन्दोस्तान हमारा।

- मनोज पुरोहित
तकनीकी अधिकारी, इम्प्लीमैंटेशन

ऊँ टैंशनाय नम:

शब्दकोश का सबसे अधिक प्रचलित, परिचित एवं लोक-अप्रिय शब्द आज टैंशन है। सुबह बिस्तर पर आंख खुलते ही खोपड़ी में खिंचाव महसूस होता है, यह टैंशन है। रात में बिस्तर पर जाते समय भी मन मनहूस बना रहता है और मस्तिष्क में भारीपन, चिंताएं रहती हैं, यह भी टैंशन है। रात में सोते समय जो सपने आते हैं, उनमें भी टैंशन भरा होता है। सपना देखते-देखते जब आंख खुल जाती है हम उठ बैठते हैं तो दिमाग में टैंशन आ जाता है।

आज आदमी का सारा जीवन, जीवन का प्रत्येक दिन, सुबह से अगली सुबह तक टैंशन भरा होता है। अब इससे छुटकारा पाने का यह मंत्र जाप भी फेल हो जाता है- ऊँ टैंशनाय नम:। टैंशन किस आदमी के जीवन में नहीं होते? टैंशन रहित किसी की खोपड़ी नहीं। आदमी हो या औरत, नेता हो या अभिनेता, नौकरीपेशा हो या व्यवसायी, छात्र हो या टीचर, कर्मचारी हो या अफ़सर ...।

टैंशन तेरे रूप अनेक। टैंशन अनंत टैंशन कथा अनंता। आम आदमी की दिनचर्या वस्तुत: दिनचर्या नहीं, टैंशनचर्या हो गई है। सुबह से रात और रात से सुबह तक पल-पल, हर पल। हर व्यक्ति के टैंशन अलग-अलग किस्म, रूप या प्रकार के होते हैं। वास्तव में हम स्वयं अवांछित स्थितियों को आमंत्रित करते हैं और तनाव मोल लेते हैं। इन समस्या रूपी पौधों को पनपने नहीं देना चाहिए। इसके लिए कुछ जरूरी बातों को ध्यान में रख कर चलें तो बहुत कुछ टैंशन से दूर रह सकते हैं:

1. समस्याओं को आपस में मिलाने के बजाय एक-एक करके सुलझाएं।

2. यदि बहुत सारे कार्य करने हैं तो घबराना नहीं चाहिए। कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर एक सूची बना लें और एक-एक करके निपटाएं।
3. कभी भी स्वयं को निर्बल न समझें। डर, असुरक्षा, भय और चिंता के भाव को त्याग दें।
4. निंदा से बचें, कड़वाहट से बचें, प्यार बांटें, काम करना सीखें तथा सबकी सेवा सहायता करें।
5. सकारात्मक सोच के साथ अपना जीवन संवार कर दूसरों को जीवन जीने की कला सिखाएं।
6. ईश्वर में आस्था रखकर कर्म करें संयम रखें सफलता मिलेगी यही सोच बनाकर चलें।
7. क्रोध करने से किसी और का नुकसान हो या न हो क्रोध करने वाले व्यक्ति को अवश्य होता है। इसलिए क्रोध को कभी भी अपने मन में स्थान नहीं देना चाहिए।
8. दूसरों को खुशी देने से स्वयं को कई गुना खुशी प्राप्त होती है। दूसरों को प्यार व आदर देने से आदर अवश्य मिलता है। अत: देने में ही लेना समाया हुआ है ऐसा सोचकर चलना चाहिए।
9. जो हमारे वश में नहीं है उसके बारे में सोच-सोच कर चिन्तित होने की बजाए जो वश में है उसे करने में लग जाना ही समझदारी है।

10. इन सब के अतिरिक्त जीवन में तनाव की अपेक्षा प्रसन्नता प्रदान करने वाले क्षणों को खोजते रहना चाहिए।

इन सब बातों पर थोड़ा ध्यान दिया जाए तो आदमी कुछ तो टैंशन फ्री हो ही सकता है।

– चन्द्रिका गौतम
इंजीनियर आई.टी., डेवपलमेंट ग्रुप

चुटकुले

एक शराबी एक बार अपनी आंखे डोनेट करने गया।
काउंटर क्लर्क शराबी से-कुछ कहना चाहते हो क्या?
शराबी-हां, जिसको भी मेरी आंखें लगाओ, उसे बता देना कि ये दो पैग पीने के बाद ही खुलती हैं।

मालिक ने अपनी सेक्रेटरी से डांटकर पूछा-मिस रेनू, तुम आफिस देर से क्यों आई?
रेनू-जी, एक नौजवान मेरा पीछा कर रहा था।
मालिक-यह भी कोई वजह है?
रेनू-हां बॉस, वह बहुत धीरे-धीरे चल रहा था।

डॉक्टर-तुम तो मामूली सा पीठ दर्द बता रहे थे, लेकिन तुम्हारा तो ब्लड प्रेसर काफी बढ़ा हुआ है।

मरीज़-जी डॉक्टर साहब, धड़कन तो दीवार पर लिखी आपकी फीस देखकर बढ़ी है।
मरीज-डॉक्टर साहब, आपने नर्स बहुत अच्छी रखी है, नर्स का हाथ लगते ही में ठीक हो गया।
डॉक्टर-जानता हूँ, थप्पड़ की आवाज।

बुद्धिमान कौन

गणितज्ञ	:	5 के बीच में 4 कैसे लिखेंगे?
चीनी	:	क्या यह मजाक है?
जापानी	:	असंभव !
अमेरिकी	:	सवाल ही गलत है !
अंग्रेज	:	इंटरनेट पर नहीं मिला।
भारतीय	:	F(IV)E

– विकास बंसल
तकनीकी अधिकारी, डिजाइन

सबको हिन्दी सीखनी चाहिए। इसके द्वारा भाव विनिमय में सारे भारत को सुविधा होगी।
-चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

दीपों वाली दीपावली

दीपों वाली दीपावली, दीपों वाली दीपावली
खुशियों का वातावरण बनाने वाली
सुख समृद्धि देने वाली
दीपों वाली दीपावली, दीपों वाली दीपावली

दीपों वाली दीपावली, दीपों वाली दीपावली
दीपक की ज्योति से, ज्योति जलाने वाली
अन्धकारों में रोशनी, देने वाली
दीपों वाली दीपावली, दीपों वाली दीपावली

दीपों वाली दीपावली, दीपों वाली दीपावली
कहां है आप, दीपक वाली दीपावली
अन्धकार में उजाला देने वाली
खुशियों का वातावरण बनाने वाली
ऊंच-नीच का भेदभाव न रखने वाली
दीपों वाली दीपावली, दीपों वाली दीपावली

दीपों वाली दीपावली, दीपों वाली दीपावली
अधर्म से धर्म की ज्योति जलाने वाली
अन्याय से न्याय का समर्थन देने वाली
असत्य से सत्य की दिशा दिखाने वाली
दीपों वाली दीपावली, दीपों वाली दीपावली

दीपों वाली दीपावली, दीपों वाली दीपावली
दूर देश से सन्तन का घर आने के पल का अहसास दिलाने वाली
अपने माता-पिता के मन में क्षण भर में खुशियां जगाने वाली
दीपों वाली दीपावली, दीपों वाली दीपावली

दीपों वाली दीपावली, दीपों वाली दीपावली
शत्रु को भी मित्र के बंधन में बांधने वाली
अशान्ति से, सुख, समृद्धि, शान्ति की ज्योति जलाने वाली
कोटि-कोटि वर्ष तक 'सत्यमेव जयते' की ज्योति को जलाकर रखने वाली
दीपों वाली दीपावली, दीपों वाली दीपावली

- पार्थ पी चट्टराज
तकनीकी अधिकारी, डेवलपमेंट ग्रुप

एंड्रोयड

एंड्रोयड मोबाइल के लिए एक सॉफ्टवेयर का मंच है जिसमें ऑपरेटिंग सिस्टम (OS), मिडिलवेयर और कुछ बेसिक एप्लिकेशन हैं। एंड्रोयड मौजूदा बाजार में सबसे ज्यादा बिकने वाला स्मार्ट फ़ोन मोबाइल प्लेटफॉर्म है। एंड्रोयड ऑपरेटिंग सिस्टम लीनेक्स (Linux) कर्नल पर आधारित है। गूगल ने एंड्रोयड इंक को खरीदा था जोकि इस ऑपरेटिंग सिस्टम के विकासक थे।

इस लेख में एंड्रोयड ओएस (OS) की वर्तमान परिस्थितियों का अध्ययन करने का प्रयास और एंड्रोयड के लिए भविष्य की बाजार संभावनाओं का खुलासा किया गया है। कई अनुसंधान फर्मों के परिणाम के आधार पर, मौजूदा बाजार का उपयोग सांख्यिकी, डेवलपर्स, और अंत उपयोगकर्ताओं के बीच लोकप्रियता एंड्रोयड के परिचय हैं। ओपन सोर्स मोबाइल ऑपरेटिंग (OS) सिस्टम, गूगल एंड्रोयड के आगमन के बाद सभी महंगे iphones और Blackberrys का उत्साह कम हो गया है।

एंड्रोयड की कहानी

ओपन हैंडसेट एलायंस एक संघ (OHA) है। जिसमें कि 50 टेलीकॉम, मोबाइल, हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर कंपनियां हैं, जो कि गूगल की अध्यक्षता में 5 नवम्बर, 2007 को बनाया गया था। संघ का लक्ष्य मोबाइल उपकरणों के लिए विकसित मानदण्ड बनाना है। एंड्रोयड का एक ओपन सोर्स मोबाइल ओएस मंच है, जो विश्व रूप से लिनक्स ऑपरेटिंग सिस्टम, अपाचे सद्भाव, और डालविक आभासी मशीन पर आधारित है और पहले गूगल, बाद में ओपन हैंडसेट एलायंस के द्वारा विकसित किया गया है। एंड्रोयड के बारे में एक सरल और आकर्षक बात, यह है कि यह जावा (Java) की लाइब्रेरी पर आधारित है। हाल ही में, गूगल ने एंड्रोयड के लिए पहली बार नेटिव डेवलपमेंट किट (NDK) बनाई है जो कि प्रोग्रामर को प्रोग्राम और एप्लिकेशन बनाने में सहायता करता है।

इतना अलग एंड्रोयड क्या है?

एंड्रोयड उपभोक्ताओं और डेवलपर्स दोनों के लिए अच्छी खबर है। जबकि उपभोक्ता कम कीमत पर स्मार्टफोन का मजा ले सकते हैं जो एंड्रोयड से चल रहा है, डेवलपर्स इसे विशिष्ट रूप से कस्टमाइज कर सकते हैं। डेवलपर्स के नजरिए से एंड्रोयड के कई फायदे हैं, जो कि नीचे सूचीबद्ध हैं:

- कुछ कॉम्पोनेन्ट की सहायता से पूरे एप्लिकेशन फ्रेमवर्क को दोबारा इस्तेमाल किया जा सकता है।
- डालविक वर्चुयल मशीन पॉवर मैंनेजमेंट सिस्टम को बढ़ावा देता है।
- 2-डी और 3-डी ग्राफिक्स के लिए समर्थन (OpenGL ES 1.0) मिलता है। तो एनीमेशन डेवलपर्स के लिए रोजगार के बहुत अवसर हैं।
- QLite के उपयोग से विश्वसनीय और परिष्कृत

डेटा भंडारण बना है।

- डेवलपर्स इसको उपयोग करके कॉमन मीडिया फॉर्मेट के एप्लिकेशन बना सकते हैं। (MPEG-1, MPEG-2, MPEG-4, H.264, AAC, AMR, JPG, PNG, GIF और अधिक)
- जीएसएमए EDGE, 3-जी (3-G), HSCSD, Wi-Fi नेटवर्क अनुप्रयोगों का समर्थन करता है।
- ओपन सोर्स वेब इंजन पर आधारित किट वेब ब्राउज़र।
- जीपीएस (GPS), नेवीगेशन कम्पास, टच अनलॉक, और एक्सेलरोमीटर अनुप्रयोगों का समर्थन करता है।
- Eclipse IDE plug-in, debugger, device emulator एंड्रोयडस पर्यावरण में शामिल है।

डालविक वर्चुयल मशीन के लाभ

डालविक वर्चुयल मशीन सरल जावाइंटरप्रेटर मशीन है, जो पूरी तरह से एंड्रोयड के लिए अनुकूलित मंच है जो कम मेमोरी के मोबाइल उपकरणों पर चलाने के लिए विकसित की गई है। एप्लिकेशन फोर्मेन्स को विकसित करने के लिए डालविक वास्तव में फायदेमंद है। डालविक एक जावा मशीन नहीं है, क्योंकि डालविक जावा कोड नहीं पढ़ सकता है, लेकिन इसके पास अपना स्वयं का बाइट कोड 'डेक्स' (dex) है। गूगल ने कहा है कि एंड्रोयड की सफलता के लिए डालविक वर्चुयल मशीन ही हकदार है। क्योंकि इस तरह की वर्चुयल मशीन अलग-अलग चरणों में अच्छा प्रदर्शन करती है जैसे कि लंबे समय में इस्तेमाल होने वाले एप्लिकेशन में यह पॉवर तथा बैटरी की बचत करती है।

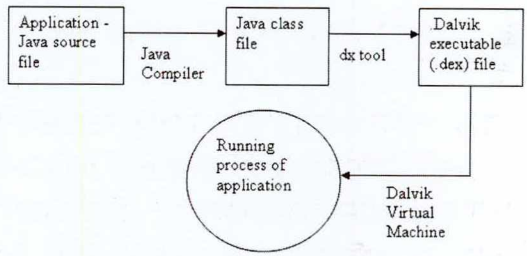

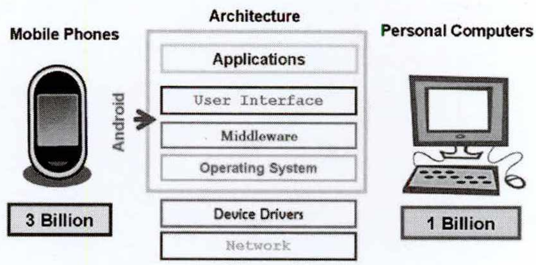

बाजार भविष्यवाणियाँ

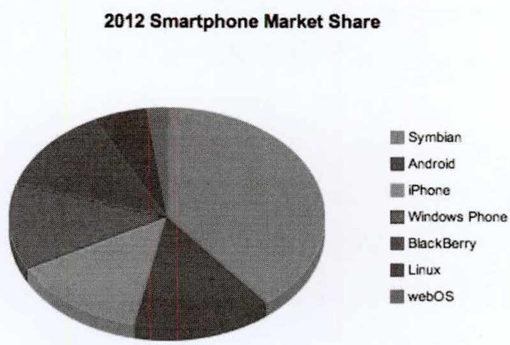

एंड्रोयड के बारे में भविष्यवाणी यह है कि यह पूरी दुनिया में फैलेगा। एंड्रोयड उपभोक्ता पहुँच के हिसाब से बड़ा बनना चाह रहा है अपने प्रतिद्वंदी आईफ़ोन से। क्योंकि यह विकसित किया गया है OHA के सभी 50 सदस्यों द्वारा, जो गूगल, सैमसंग, एच.टी.सी., सोनी एरिक्सन, टी मोबाइल, मोटोरोला, वोडाफोन, स्प्रिंट, चीन मोबाइल इत्यादि। गूगल की सहायता से इस इंटरनेट युग में सब कुछ

संभव है, लेकिन अब तक उन्होंने एंड्रोयड आधारित गतिविधियों से पैसे बनाना शुरू नहीं किया। दूसरी तरफ 2012 तक सिबियन और आईफ़ोन अपने व्यापारिक विकास के लिए ब्लैकबैरी से कड़ी प्रतिस्पर्धा करेंगे। लेकिन एंड्रोयड आम बाजार के लिए पूरी तरह से बनाया गया है। व्यापारिक दृष्टि से यह सबसे सस्ता और सुविधाजनक है।

अंतिम टिप्पणियाँ:

हम एंड्रोयड की बहुत सफलता के बारे में बात नहीं कर रहे हैं, क्योंकि इसमें अभी भी बहुत कुछ विकसित किया जाना बाकी है। जबकि एंड्रोयड में अभी तक मोबाइल ऑपरेटिंग सिस्टम ब्राउज़र, मिडिल वेयर, एप्लिकेशन एंवॉयर्मेंट सम्मिलित हैं। गूगल के अलावा, एप्लिकेशन डेवलपर्स और वेंडर्स और आम जनता को इससे बहुत फायदा होगा।

– अमिय मोहंती
इंजीनियर आई.टी., एन.एल.पी.

राष्ट्रभाषा का प्रचार करना मैं राष्ट्रीयता का एक अंग मानता हूँ।
–डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

रिमझिम प्यारी बूंदों का मौसम

आया सावन का मौसम, लेकर काले-नीले बादलों के संग।
इधर दौड़ती उधर दौड़ती हवाओं का मौसम।
आया रिमझिम प्यारी बूंदों का मौसम।

कभी मोटी, कभी छोटी, कभी ओलों के रूप में बरसती।
यही है बच्चे बन जाने का मौसम और भीग जाने और भिगो देने का मौसम।
आया रिमझिम प्यारी बूंदों का मौसम।

आया यारों से मिलने और साथ घूमने का मौसम।
हर किसी को हंसने और हंसाने का मौसम।
अपनों को खुशियां देने का मौसम और चाय-पकौड़े खाने का मौसम।
आया रिमझिम प्यारी बूंदों का मौसम।

हर मन को, हर तन को शीतल बनाने का मौसम।
प्रकृति से प्यार, लगाव और उस में रखे जाने का मौसम।
पेड़, पक्षी, नर, नारी, धरती और कण-कण को भिगोने का मौसम।
आया रिमझिम प्यारी बूंदों का मौसम।

- कविन्द्र सिंह बोरा
सहायक, प्रशासन

हिन्दी केवल राजभाषा नहीं है, बल्कि विश्व भाषा बन रही है।
-राजीव गांधी

आतंकवादः कारण और निदान

आज संपूर्ण मानवता आतंक के साये में जीने को बाध्य है। समाचार-माध्यम आतंकवाद और उग्रवाद से संबंधित घटनाओं से भरे रहते हैं। मानव ही मानव का शत्रु बन गया है। अपनी बात को मनवाने का यह कैसा तरीका है, जिसमें आदमी जान लेने और देने पर तुल जाता है! उन्माद का यह कैसा रूप है जहां मानव स्वेच्छा से आत्मघाती बम के रूप में परिवर्तित होकर अपने ही साथियों की जान केवल इसलिए लेना चाहता है कि वे उसके चिंतन के अनुरूप कार्य नहीं करते! प्रस्तुत लेख में उन कारणों को खोजने का प्रयास किया गया है, जो मनुष्य को आतंक के रास्ते पर ढकेलने के लिए उत्तरदायी हैं।

आतंकवाद क्या है?

अपनी उचित अथवा अनुचित बात को मनवाने के लिए जब कोई व्यक्ति अथवा संगठन अवांछित साधनों, बल-प्रयोग, शस्त्रों, हिंसा आदि का प्रयोग करता है तब उसे आतंकवादी घटना कहते हैं। अपनी बात को मनवाने के वैधानिक एवं लोकतंत्रीय साधनों में आतंकवादियों की आस्था नहीं होती। वे हथियारों और हिंसा का सहारा लेकर अपने उद्देश्य की पूर्ति करने का प्रयत्न करते हैं।

आतंकवाद के लिए उत्तरदायी कारक

1. झुँझलाहट और क्रोध- आतंकवाद के मूल में क्रोध की अतिशयता रहती है। जब हमारे मन के मुताबिक व्यवहार हमें नहीं मिलता तो हमें झुँझलाहट होती है। सामान्यतः ऐसा सबके साथ ही होता है और समय के साथ यह झुँझलाहट समाप्त हो जाती है। लेकिन कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो इस स्थिति से नहीं निकल पाते। क्रोध और झुँझलाहट उनके मन में इकट्ठे होते रहते हैं। धीरे-धीरे वे एक किस्म के मानसिक रोग का शिकार हो जाते हैं। क्रोध की अग्नि इतनी तीव्र हो जाती है कि वे हर बात का समाधान हिंसा और बल-प्रयोग से ही कर लेना चाहते हैं। अनेक असामाजिक एवं अवांछित तत्व उनकी इसी कमज़ोरी का लाभ उठा कर उन्हें आतंकवाद के दलदल में घसीट लेते हैं।

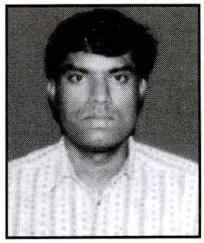

2. सामाजिक परिवेश का मन पर असर- कभी-कभी हमें सार्वजनिक रूप से अपमान अथवा अन्यायपूर्ण व्यवहार का सामना करना पड़ता है। अनेक लोग विपरीत एवं अपमानजनक सामाजिक परिस्थितियों में घुटने टेक देते हैं। ऐसी परिस्थितियों के निराकरण के लिए वे हिंसा और आतंकवादी गतिविधियों में संलिप्त हो जाते हैं। दस्यु-बाला फूलनदेवी के जीवन में कुछ ऐसी घटनाएं हुई कि वह डाकू बन बैठी। भारत में नक्सलवाद भी इसी प्रकार का उदाहरण है।

3. महत्वाकांक्षा- आज हर आदमी एक ही क्षण में करोड़पति बन जाना चाहता है। बिना परिश्रम के सफलता नहीं मिलती। यह बात आधुनिक समय में अधिक महत्व नहीं रखती। जब हम देखते हैं कि अमुक व्यक्ति को किसी फ़िल्म में काम करने का अवसर मिला और वह रातों-रात सड़क से महल में पहुंच गया, तब हममें से कुछ इस बात को पचा नहीं पाते। वे सोचते हैं कि यह अवसर उन्हें भी तो

मिल सकता था! पैसों और संसाधनों का असमान वितरण, अवसरों का सबके लिए उपलब्ध न होना आदि तथा अनेक लोगों को अवांछित गतिविधियों में लिप्त कर देने के लिए पर्याप्त होते हैं। ऐसे लोग आरंभ में शीघ्रता से धन कमाने के लिए अपहरण, जबरन वसूली जैसे गैरकानूनी धंधों का सहारा लेते हैं। धीरे-धीरे ऐसे लोग किसी आतंकवादी संगठन का सहारा लेकर अपनी शक्ति को और अधिक बढ़ाने का प्रयत्न करते हैं। डी. कंपनी के लिए काम करने वाले अनेक लोग इसी श्रेणी में आते हैं। यही महत्वाकांक्षा कभी-कभी राजनैतिक रंग भी ले लेती है। महत्वाकांक्षी व्यक्तियों एवं संगठनों को ऊंचे-ऊंचे सपने दिखाकर राजनीति से जुडे लोग उनसे अनेक अवांछित कार्य करवाने का प्रयत्न करते हैं। इस प्रकार ऐसे लोगों को राजनैतिक संरक्षण मिल जाता है और उनकी शक्ति में वृद्धि होती रहती है। महत्वाकांक्षा का नशा बहुत शक्तिशाली होता है। इस नशे के आदी मनुष्य राजसत्ता पर भी कब्जा करना चाहते हैं। इसके लिए वे हथियारों की तस्करी, नशे का कारोबार तथा राजनेताओं को अपनी ओर करने का प्रयत्न करते रहते हैं। अपनी शक्ति में वृद्धि करने के लिए वे मानसिक स्तर पर कमज़ोर लोगों की तलाश में रहते हैं। जहां उन्हें ऐसे लोग दिखाई देते हैं, वे तुरंत उन्हें अपने जाल में फँसा लेते हैं।

4. महत्वाकांक्षा का राजसी रूप- जो महत्वाकांक्षा मनुष्यों में होती है और उन्हें आतंकवाद के रास्ते पर ले जाती है, वही कभी-कभी सरकारों में भी देखी जाती है। अपने राज्य की उन्नति और पड़ोसी राज्य की अवनति के लिए भी आतंकवाद को एक माध्यम के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। पाकिस्तान की ओर से भारत में आतंकवाद का प्रसार इसी बात का उदाहरण है। पाक सेना आतंकवाद को युद्ध की एक नीति के रूप में प्रयुक्त करती है। कभी धर्म के नाम पर और कभी ऐसे ही किसी और बहाने से, भारत के विरुद्ध लोगों को भड़का कर आतंकवादी घटनाओं को अंजाम दिया जाता है।

5. धार्मिक कट्टरपंथ- यद्यपि धर्म मानव के नैतिक विकास का माध्यम है, तथापि कभी-कभी निहित स्वार्थ इसे आतंकवादी तैयार करने के लिए भी प्रयुक्त करते हैं। तथाकथित इस्लामिक जेहाद की दुहाई देकर भोले-भाले धर्म-सहिष्णु लोगों को आतंकवाद के रास्ते पर धकेल दिया जाता है।

निराकरण

आतंकवाद के निराकरण के लिए सर्वप्रथम शिक्षा के क्षेत्र में हमें ऐसे परिवर्तन करने होंगे, जिससे छात्रों का संपूर्ण मानसिक एवं नैतिक उत्थान हो सके। इस प्रकार, वे क्रोध और झुँझलाहट के वशीभूत होकर आतंकवादी नहीं बनेंगे। नैतिक विकास द्वारा वे सही तथा गलत के बीच का अंतर समझेंगे और सही निर्णय लेने में सक्षम होंगे। शिक्षा के प्रचार-प्रसार से सभी मनुष्यों तक ज्ञान का प्रकाश फैलेगा। इससे सीधे-सादे लोगों को बहला-फुसलाकर अवांछित कार्यों के लिए प्रेरित नहीं किया जा सकेगा।

इसके अतिरिक्त, हमें संसाधनों के न्यायपूर्ण एवं समान वितरण पर भी ध्यान देना होगा। यह भी समाज एवं प्रशासन का दायित्व है कि जाति, धर्म, वर्ग आदि के आधार पर कभी किसी को अन्याय और अपमान न सहना पड़े। स्वतंत्रता, समानता एवं बंधुत्व की भावना के विकास से आतंकवाद को समूल नष्ट किया जा सकता है।

- अनिल कुमार
सचिव, प्रशासन

डेटा बैकअप तकनीक

क्या होगा आपके कम्प्यूटर में स्टोर्ड (Stored) डेटा डिलीट हो जाये या वायरस के कारण आपका डेटा क्रप्ट हो जाये या आपके कम्प्यूटर की हार्डडिस्क ही खराब हो जाए। लेकिन अब आपको निराश होने की जरूरत नहीं है। अब आपको न तो फाइल के डिलीट होने से डरना है, न वायरस से होने वाले नुकसान से और न ही हार्डडिस्क के खराब होने से। आपको अपने कम्प्यूटर के किसी सॉफ्टवेयर को इंस्टॉल करने की जरूरत भी नहीं है। क्योंकि विंडो से वैकअप का इनबिल्ट फीचर होता है और डेटा का बैकअप लेने के लिए बस आपको बैकअप तकनीक की जानकारी होनी चाहिए।

सबसे पहले हम बात करेंगे की आर्किव साइन (Archive Sign) की। इसका इस्तेमाल कम्प्यूटर द्वारा इस बात को समझने के लिए किया जाता है कि किसी फाइल का बैकअप लिया गया है अथवा नहीं। इस साइन को आप स्वयं भी चेक कर सकते हैं। इसके लिए आपको फाइल की प्रोपर्टीज में जाना होगा वहां आपको आर्किव साइन के नाम से चेकबॉक्स मिलेगा।

जहां हम कोई नई फाइल बनाते हैं या किसी पुरानी फाइल में कुछ बदलाव करते हैं तो बाई डिफॉल्ट (By Default) आर्किव साइन इनेबल होता है। अब आप सोच रहे होंगे कि फाइल से आर्किव साइन के इनेबल या डिसेबल होने में क्या फर्क पड़ सकता है? तो इसके लिए आप और हमको सबसे पहले बैकअप के प्रकार जानना चाहिए इसका पहला प्रकार है नार्मल बैकअप।

नार्मल बैकअप का इस्तेमाल आप तब कर सकते हैं जब आपको यह ज्ञात न हो कि इससे पहले फाइल (डेटा) का बैकअप हुआ है या नहीं, अथवा आप अपनी तरफ से पहली बार फोल्डर का बैकअप ले रहे हैं तो आपको नार्मल बैकअप का प्रयोग करना चाहिए। क्योंकि नार्मल बैकअप उन सभी फाइलों का बैकअप लेगा जिनका बैकअप पहले हुआ हो या न हुआ हो। बैकअप के बाद फाइलों का आर्किव साइन डिसेबल हो जाएगा।

बैकअप का दूसरा प्रकार 'कापी बैकअप' है। यह भी नार्मल बैकअप की तरह है लेकिन यह बैकअप भी सभी फाइलों का बैकअप होगा। फिर चाहे फाइल का आर्किव साइन इनेबल हो या डिसेबल और बैकअप लेने के बाद यह फाइल के आर्किव साइन में किसी प्रकार का बदलाव नहीं करता।

अगर आप रोज बनाई गई फाईल का रोज बैकअप लेना चाहते हैं तो आपके लिए बैकअप का प्रकार जिसे हम 'डेली बैकअप' के नाम से जानते हैं। इस बैकअप का इस्तेमाल करते हुए आप सिर्फ उन फाइलों का बैकअप ले सकते हैं जो करंट (Current) डेट पर बनाई गयी हैं। यानि आप उस फोल्डर को सलेक्ट कीजिए जिसमें आप अपनी फाइलों को सेव करते हों। बैकअप के समय डेली बैकअप ऑप्शन का इस्तेमाल कीजिए अब चाहे उस फोल्डर में कई सारी फाइल हों पर यह बैकअप सिर्फ उन्हीं फाइलों का लेगा जो उस दिन बनाई गई हैं।

अब हम बैकअप के अगले प्रकार के बारे में

जानना चाहेंगे जिसे 'इक्रीमेंटल (Incremental) बैकअप' के नाम से जानते हैं। मान लीजिए कि आपको एक फोल्डर का बैकअप लेना है। जिसमें कई सारी फाइलों का आर्किव साइन इनेबल है और कुछ का डिसेबल है तो पहली बार आप उसका नार्मल बैकअप लेंगे क्योंकि यह फोल्डर की उपलब्ध सभी फाइलों का बैकअप लेगा। अब कुछ समय पश्चात आप उस फोल्डर में कुछ और नई फाइल स्टोर करेंगे जो नई फाइल होगी उनका आर्किव साइन इनेबल होगा।

अब आप इसका इंक्रीमेंटल बैकअप लीजिए यह बैकअप सिर्फ उन्हीं फाइलों का बैकअप लेगा जिनका आर्किव साइन इनेबल होगा। यानी कि आपके द्वारा बनाई गई नई फाइलों का बैकअप ही लिया जाएगा। लेकिन हां, अगर आप उस बैकअप को रिस्टोर करेंगे तो आप को सभी बैकअप फाइल को बारी-बारी से रिस्टोर करना होगा। इंक्रीमेंटल बैकअप और बैकअप की तरह 'डिफरेंशियल बैकअप' भी सिर्फ उन्हीं फाइलों का बैकअप लेता है जिनका बैकअप पहले न हुआ हो। इस बात का पता लगाना हो कि फाइल का बैकअप पहले हुआ है या नहीं, सिस्टम में फाइल के आर्किव साइन के स्टेटस से पता लगाया जा सकता है। जैसा कि हम आपको शुरुआत में ही यह बता चुके हैं। डिफरेंशियल बैकअप, बैकअप फाइल के बीच में क्रम श्रृंखला तैयार करता है। जिससे आपको इसे रिस्टोर करने में आसानी होती है।

इस बात को हम उदाहरण द्वारा समझते हैं। आप अपनी फाइल्स को एक फोल्डर में रखते हैं। सबसे पहली बार आप उसका नार्मल बैकअप लेंगे, आगे आप जब भी उसमें नई फाइल रखते हैं तो आप उसका डिफरेंशियल बैकअप लेंगे। अगर आपकी कोई फाइल किसी कारणवश आपकी पहुंच से दूर हो जाती है। तब तक अगर आपने उस फोल्डर का जिसमें फाइल थी, दस बार डिफरेंशियल बैकअप लिया था, तो लास्ट फाइल को दोबारा प्राप्त करने के लिए आपको अपने नार्मल एवं आखिरी डिफरेंशियल बैकअप को रिस्टोर (Restore) करना होगा। आपका बाकी सारा बैकअप स्वत: ही रिस्टोर हो जायेगा।

अगर आप ऊपर बताये किसी भी प्रकार का बैकअप इस्तेमाल करते हैं तो बैकअप फाइल का एक्सटेंशन (BKF) होगा। बैकअप लेते समय आपको यह ध्यान रखना चाहिए की बैकअप फाइल को कभी भी सेम मीडिया पर सेट न करें क्योंकि हार्डडिस्क खराब होने की स्थिति में आपका डेटा एवं बैकअप डेटा दोनों का नुकसान हो जाएगा। इसलिए बैकअप को आप पेनड्राइव, एक्सटर्नल ड्राइव या नेटवर्क में किसी दूसरे कम्प्यूटर पर सेव (Save) करें। उपरोक्त वर्णित बैकअप को इस्तेमाल करने के लिए आप रन (Run) में जाकर नेट बैकअप (Netback up) कमांड (Command) दे सकते हैं।

अब हम आपको एक्स-पी (XP) ऑपरेटिंग सिस्टम (OS) का बैकअप, ऑटोमैटिक सिस्टम रिकवरी (ASR) बैकअप के बारे में बताएंगे।

बस आपको अपने कम्प्यूटर में एक बार में सब कुछ इंस्टॉल करने के बाद (ASR) ए.एस.आर. बैकअप लेना है और जब आपका XP किसी कारणवश काम करना बंद कर दे तो यह बैकअप स्वत: आपके बैकअप फाइल द्वारा (OS) को रि-स्टोर (Restore) कर देगा। इस बैकअप को इस्तेमाल करने के लिए आपको कम्प्यूटर पर फ्लॉपी ड्राइव एवं आपके पास हार्डड्राइव में बैकअप

रखने के लिए पर्याप्त जगह भी होनी चाहिए। अब आप रन (Run) में जाकर एन.टी. (NT) बैकअप चलाइये एवं वहां पर ऑटोमेटिक सिस्टम रिकवरी बैकअप ऑप्शन का चुनाव करें फिर अगले स्क्रीन पर बैकअप फाइल का नाम एवं लोकेशन चयनित करें कुछ समय पश्चात यह आपसे फ्लापी इंसर्ट करने का मैसेज देगा अब आप इस फ्लापी को सुरक्षित रखें। जब आपका ऑपरेटिंग सिस्टम (OS) खराब हो जाये तो ऑपरेटिंग सिस्टम की सीडी से कम्प्यूटर बूट करें और फ्लापी ड्राइव में फ्लापी इंसर्ट कर दें आपका सारा बैकअप स्वत: ही स्टोर हो जायेगा।

- अमित कुमार
इंजीनियर आई.टी.-III, डेवलपमेंट ग्रुप

मैं कौन हूँ

क्या बताऊँ तुम्हें मैं कौन हूँ, क्या चाहता हूँ।
दीप हूँ बुझता हुआ और जलना चाहता हूँ।
जिंदगी के नाम पर जिन्दा हूँ, जलता हुआ
क्या पता वो मंजिल कहां, बढ़ता हूँ मैं गिरता हुआ
जी नहीं सकता, मगर मैं और जीना चाहता हूँ।

राह में तुझको मिले कांटे हज़ारों बार-बार
नैन प्यासे ही रहे आंसू बहाये जार-जार
अश्क आंखों में नहीं और मैं पीना चाहता हूँ।

जिन्दगी की शाम को, अब भोर की आशा नहीं,
दिल के अरमां बुझ गए, इनकी कोई भाषा नहीं
फूल मुरझाता हुआ, और मुस्कराना चाहता हूँ

गमों ने पाला है, मुझे खुशियों से मैं वाकिफ़ नहीं
मुझसे किसी को गम मिले, मंजूर ये हरगिज़ नहीं
आदमी तो हूँ मगर, इन्सान बनना चाहता हूँ।

- अजय पाल
वरिष्ठ सहायक, वित्त विभाग

देश को एक सूत्र में पिरोने वाली भाषा हिन्दी ही हो सकती है।
- लाल बहादुर शास्त्री

महामारी बनते हृदय रोग

आज के समय में हृदय रोग और दिल के दौरे असामयिक मृत्यु के सबसे बड़े कारण हैं। विकासशील देशों में हृदय की बीमारियां महामारी बनकर उभर रही हैं। आज विश्व भर में हृदय रोगों से जितने लोगों की मौत होती है, उनमें से 60 प्रतिशत से अधिक मौतें केवल विकासशील देशों में होती हैं। विश्व भर में हर साल हृदय रोगों से करीब 15 करोड़ लोगों की मौत होती है, जिनमें से 10 करोड़ लोग विकासशील देशों के होते हैं। भारतीयों को अनेक कारणों से हृदय रोग अधिक होते हैं। इसका एक कारण अनुवांशिक है। यही कारण है कि अमरीका, ब्रिटेन, सिंगापुर एवं अफ्रीका सहित विश्व के अन्य देशों में बसे भारतीयों को तमाम समूहों की तुलना में हृदय रोग अधिक होते हैं।

एक अध्ययन के अनुसार, भारतीयों में हृदय रोगों का खतरा अमरीकी लोगों की तुलना में तीन से चार गुना, चीनियों की तुलना में छः गुना और जापानियों की तुलना में बीस गुना अधिक है। सबसे दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि आधुनिक समय में कम उम्र के लोगों में भी दिल के रोग उनकी असामयिक मौत के कारण बन रहे हैं, जबकि एक समय इसे अधेड़ावस्था का रोग माना जाता था। आने वाले समय में भारत सहित विभिन्न विकासशील देशों में हृदय रोगों के प्रकोप में और बढ़ोत्तरी होने की आशंका है। अनुमान है कि हमारे देश में प्रति सौ लोगों में से लगभग दो लोग दिल की बीमारियों से ग्रस्त हैं। उम्र बढ़ने के साथ इन बीमारियों के होने की आशंका बढ़ती जाती है।

कुछ साल पहले तक अधेड़ों और प्रौढ़ों का रोग माने जाने वाले हृदय रोग अब नौजवानों को भी अपनी गिरफ्त में ले रहे हैं। अब 35 से 44 वर्ष की उम्र से ही लोग इसके चंगुल में आने लगे हैं और 55 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों के लिए तो हृदय रोग मौत का पर्याय ही बन गया है। हालांकि पुरुषों की तुलना में महिलाओं को हृदय रोग कम होते हैं, लेकिन रजोनिवृत्ति के बाद शरीर में हरमोन में परिवर्तन के कारण महिलाएं भी पुरुषों के समान ही इन रोगों का शिकार होने लगी हैं।

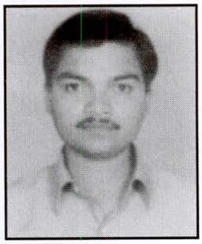

एक अनुमान के अनुसार भारत में ही तकरीबन 7 करोड़ 50 लाख लोग कोरोनरी हृदय रोग से पीड़ित हैं। इनमें से 50 फीसदी लोगों की दिल के दौरे या एंजाइना से अचानक मृत्यु हो जाती है। हमारे देश में हर साल लगभग 25 लाख लोग हृदय रोगों से पीड़ित हो रहे हैं। पश्चिमी देशों में हृदय रोगों के मामले में गिरावट आ रही है, जबकि भारत जैसे विकासशील देशों में इनमें तेजी से बढ़ोत्तरी हो रही है।

भारत में जेनेटिक कारणों के अलावा आधुनिक जीवन शैली एवं खान-पान के तौर-तरीकों में बदलाव आने तथा तनाव बढ़ने के कारण तेजी से बढ़ रहे हृदय रोग चिकित्सकों के लिए चुनौती बने हुए हैं। आनेवाले समय में अनेक कारणों से विकासशील देशों में खास तौर पर भारत में हृदय रोगों का प्रकोप बहुत अधिक बढ़ने की आशंका है। हृदय की बीमारियां विकासशील देशों में महामारी बनकर उभर रही हैं। विश्व के अन्य देशों की तुलना में हमारे देश में हृदय रोगों की घटनाएं

सबसे अधिक हो रही हैं और 30 वर्ष से अधिक आयु के लोगों के लिए यह मौत का प्रमुख कारण बन गया है। हमारे देश में हर साल तकरीबन 25 लाख लोग दिल के दौरे के कारण असामयिक मृत्यु के ग्रास बन रहे हैं। इनमें से करीब 5 लाख लोगों की मौत अस्पताल पहुंचने से पहले ही हो जाती है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन का अनुमान है कि भारत में हृदय रोगों से मरने वालों की संख्या सन् 2015 तक दोगुनी हो जाएगी। जाहिर है कि भविष्य में हमारा पाला जिस महामारी से पड़ने वाला है वह और कोई नहीं, हृदय रोग ही है। आने वाले समय में हृदय रोग सबसे बड़ा हत्यारा बनने वाला है। इसकी चपेट में आकर भारी संख्या में लोग या तो काल के ग्रास बनेंगे या शारीरिक तौर पर अक्षम बन जाएंगे। ऐसे में हृदय रोग के हमले से बचने के लिए समय रहते एक कारगर रणनीति बनाने की आवश्यकता है।

विशेषज्ञों का मानना है कि आनेवाले समय में संक्रामक रोगों का प्रकोप घटने वाला है, लेकिन जीवन शैली से जुड़े रोगों, खास तौर पर हृदय रक्त वाहिका रोगों एवं कैंसर का प्रकोप बढ़ने वाला है। आनेवाले समय में हृदय रोगों से न केवल बुजुर्ग, बल्कि युवा भी प्रभावित होंगे। अनुमान है कि भारत में आनेवाले समय में हृदय संबंधी रोगों से मरनेवालों की संख्या दोगुनी हो जाएगी।

हालांकि आज हृदय संबंधी रोगों के प्रकोप में वृद्धि हुई है। लेकिन साथ-ही साथ जीन थैरेपी एवं लेजर सर्जरी क्रांतिकारी तकनीकों का भी विकास हो रहा है, जिससे आनेवाले समय में हृदय रोगों की चिकित्सा का स्वरूप बिलकुल बदल जाएगा।

– रवि कुमार सिंह

कार्यालय सहायक, परीक्षा नियंत्रण कार्यालय

हिन्दी भारतीय संस्कृति की आत्मा है।
– कमलापति त्रिपाठी

बापू ! एक बार फिर तुझे ही धरती पे आना होगा - एक प्रार्थना

चलने दो,
रोक टोक से कभी रुकती है,
घोटालों की बाढ़ कभी भी?
किसे देख ये क्यों रुकेगी,
गरज-गरज ये घोटाले क्या कहते हैं - कहने दो।
यूरिया, बोफोर्स, आवास,
2-G, कॉमन-वेल्थ, और I.P.L. के प्रबल वेग से - बहने दो।।

सुना ! रोकने इसे कोई बाबा आया था,
दशा हुई थी फिर क्या उसकी - फल क्या उसने पाया था?
पुलिस ने मार मार के दिल्ली से ऋषिकेश तलक उसको भगाया था।।

लोकपाल का डंडा भी - एक सज्जन लाया था,
कई दिन भूखा रह कर- जनता का खूब स्नेह भी उसने पाया था,
बापू ! तेरे सत्याग्रह का दर्पण - भी उसने हमें दिखलाया था।
परन्तु, इन भ्रष्ट 'काले - अंग्रेजों' के सामने - वो भी न टिक पाया था।।

जानता हूँ, स्वर्ग में बैठ बापू तू - अपना ये रोता हुआ भारत देखता होगा,
और ये देख, तेरी आँखें नम होती होंगी और तेरा दिल भी दुखता होगा।
अब ! इन काले अंग्रेजों को सुधारने, एक बार फिर तुझे ही धरती पर आना होगा।
एक बार फिर तुझे ही धरती पे आना होगा।।
जय हिंद !!!

- अभिषेक वर्मा
तकनीकी अधिकारी, डिजाइन

टेढ़ी उँगली

मेरे हेडक्वार्टर में मोबाइल फ़ोन ले जाना वर्जित है और दिल्ली में कार चलाते समय मोबाइल फ़ोन सुनने पर भी जुर्माना है इसलिए मैं मोबाइल कार में ही छोड़ कर जाता हूँ और सभी काल्स, sms और mms आराम से घर जाकर ही देखता हूँ। बस एक बार सरसरी तौर पर देख लेता हूँ कि कोई ज़रूरी काल तो नहीं थी। आज पूरे दिन में सिर्फ एक mms था – मेरे छोटे भाई का। मैंने mms के साथ का मेसेज देखा–

'सिर्फ तुम्हारे और भाभी के लिए। पढ़कर डिलीट कर देना।'

हम दोनों भाइयों में ज़मीन–आसमान का फर्क है मगर चुम्बक के विपरीत ध्रुवों में आकर्षण की तरह हम पक्के दोस्त भी हैं। मैंने तय किया कि घर जाकर पहले खुद आराम से mms देखूंगा और अगर दिखाने लायक हुआ तभी 'रति' को दिखाऊंगा। चालीस साल का होने के बाद भी भाई का भरोसा नहीं क्या भेज दे। कार के शीशे में मैंने अपने आपको मुस्कुराते हुए पाया और कार पार्किंग से बाहर निकालने लगा।

कई साल अलग रहने के बाद, मेरा और रति का तबादला, दो महीने पहले ही दिल्ली में साथ–साथ हुआ था। हमारे दफ्तर तो अलग–अलग दिशाओं में थे मगर दफ्तर से घर पहुँचने का समय लगभग एक ही था।

आज भी रति और मैं रोजाना की तरह एक साथ ही घर पहुंचे थे। वह आज बहुत खुश लग रही थी। मैंने कारण पूछा तो उसने बताया कि –

'दो खास बातें हुई हैं आज। एक तो आखिरकार दफ्तर में मुझे मेरा अलग कमरा मिल गया है, और दूसरे अचानक 'राधा' ने खुद ही आकर मुझसे माफ़ी मांगी।'

पंद्रह साल हुए, हमारी शादी से पहले मेरी पत्नी 'रति' और राधा दोनों सहेलियां थीं। या कहें कि साथ–साथ ही दोनों की नौकरी पिलानी में लगी थी। रति के पास मैंने, उन दोनों के साथ–साथ के, कई फोटो भी देखे थे। मगर जब सगाई के बाद, एक बार मैं पिलानी गया था – तो मैंने राधा की आँखों में अपने लिए, न जाने क्यों, घृणा और अरुचि महसूस की थी। अपनी सहेली का, अपना जीवन साथी अपनी पसंद से खुद ही चुनना, शायद उसके संस्कारों के आड़े आता था, क्योंकि – शक्ल सूरत का तो मैं ठीक–ठाक ही था, पढ़ा लिखा था, अच्छी नौकरी में था और अच्छे खानदान से भी था। अब किसी का मुझसे सिर्फ इसलिए चिढ़ना कि हम प्रेम विवाह कर रहे थे या मेरा जन्म किस घर में हुआ था – मुझे बड़ा तर्कहीन लगा था। मगर हमारे देश में आज भी हमारे संस्कार हमें कई चीज़ों को खुले मन से देखने और समझने में दिक्कत देते हैं। शायद राधा की परवरिश और उसके संस्कार उसे रति और मेरे सम्बंधों को स्वीकार नहीं करने दे रहे थे। रति ने माना नहीं था तब, लेकिन मैंने उसे बताया था कि उसकी दोस्त उसके फैसले से ज़रा भी खुश नहीं है। हमारी शादी के बाद तो उनके सम्बन्ध लगभग टूट ही गए

क्योंकि शादी के बाद रति का तबादला भी मेरे पास कोच्ची हो गया और यह मामला यहीं ख़त्म हो गया। मगर कुछ चीज़ें और लोग घूम फिर कर आपके जीवन में वापस आते-जाते रहते हैं। राधा भी उनमें से एक थी।

इस वर्ष जब मई में, हम दोनों का तबादला जब दिल्ली हुआ तो पहले दिन ही रति ने दफ्तर से लौट कर खुशी-खुशी मुझे बताया था कि राधा भी दिल्ली ऑफिस में ही है। रति तो बहुत सीधी-सादी, सहनशील, सौम्य और सभ्य महिला है। मेहनती भी बहुत है और इसीलिए उसे सफलता भी सही समय पर मिली है। उसकी सोच भी सरल सी है लेकिन हम दोनों का दुनिया को समझने का तरीका अलग-अलग है। मेरे टेढ़े दिमाग ने आने वाली कड़वाहट को भांप लिया था मगर मैंने रति से सिर्फ इतना कहा था कि-

'चलो अच्छा है तुम्हारी दोस्त तुम्हें वापस मिल गई लेकिन यह ध्यान रखना कि तुम्हारी सफलता और तुम्हारे यहाँ आने से वह दफ्तर में अपने आपको तुमसे कम और अपने अस्तित्व को ख़तरे में ना महसूस करे।'

खैर यह तो मई की बात थी। अब जुलाई चल रही थी। कपड़े बदलने जाने से पहले रति ने नौकरानी से चाय बनाने को कहा और मैं मोबाइल पर अपने भाई का भेजा हुआ mms देखने कि सोच कर उठने लगा।

वातावरण का प्रभाव हर आदमी के स्वभाव पर पड़ता है। मेरा भाई 'रियल एस्टेट' और 'कंस्ट्रक्शन' के व्यवसाय में है। दिल्ली और गाज़ियाबाद की सीमा पर उसका दफ्तर है। भाग्य ने मुझे तो ऊपर चढ़ने के लिए 'लिफ्ट' दी थी, मगर वह यहाँ तक 'सीढियां' चढ़ कर आया है, जिसमें से अधिकतर उसने खुद ही बनाई भी हैं।

मैं शांत, सीधे और मृदु स्वभाव का हूँ, झगड़ों से दूर रहता हूँ, कानून और नियम पूरी तरह मानता हूँ। मेरी माँ सहित कई लोग मुझे डरपोंक भी समझते हैं। मगर मेरी जीवन शैली ऐसी ही है मैं ऐसा ही हूँ। मेरा भाई अधिकतर मेरे तरीकों को सही नहीं समझता क्योंकि उसके हिसाब से ना तो जिंदगी इतनी सीधी है और ना ही यह दुनिया। मुझे उसके दफ्तर की एक खास बात देखकर बड़ी हंसी आती है। उसके दफ्तर में 20-25 साल की उम्र के दस - बारह हट्टे-कट्टे लड़के हैं। सभी काली पैंट और नीली कमीज़ पर काली टाई लगाये रहते हैं। किसी के भी दाढ़ी - मूछें नहीं हैं और सभी के बाल भी मुंडे हुए हैं - बिलकुल गंजे हैं। मुझे वह सारे के सारे एक सी शक्ल के लगते हैं।

खैर इससे पहले कि मैं भाई का भेजा हुआ mms देखता रति वापस आकर मेरे पास बैठ गई और कहने लगी -

'इतना सब होने के बाद, आज अचानक राधा का खुद मेरे पास आकर सॉरी कहना बड़ा अच्छा लगा। उसे शायद अपनी ग़लती का एहसास हो गया। नाहक ही मुझसे चिढ़ी हुई थी।'

असल में राधा का किस्सा दो महीने पहले दोबारा शुरू हुआ था। दिल्ली के दफ्तर में पहले दिन ही, रति के निदेशक ने उसे, राधा के साथ उसके कमरे में तब तक बैठने को कहा था - जब तक रति का नया कमरा तैयार ना हो जाए। थोड़े दिन बाद ही रति ने मुझे बताया कि राधा ये पसंद नहीं करती है और किसी तरह का विवाद ना खड़ा हो इसलिए रति अपना अधिकतर समय पुस्तकालय में गुजारती

है। इससे उसके काम पर भी असर पड़ रहा है। निदेशक के एक दो बार टोकने पर वह दोनों फिर एक साथ बैठने लगीं, मगर रति इस सबसे थोड़ा दुखी दिखाई देती थी।

फिर दो सप्ताह पहले वह हुआ जो कोई भी पति बर्दाश्त नहीं कर सकता। एक दिन जब रति दफ्तर से वापस आई, तो आते ही बिस्तर पर तकिये में मुँह छिपा कर रोने लगी। मैंने पूछा तो उसने बताया कि राधा ने उस पर उसके पर्स से दो हज़ार रुपये और उसका धूप का चश्मा चुराने का आरोप लगा कर कहा है कि वह चोर के साथ दफ्तर नहीं बांटेगी। इस गिरी हुई हरकत पर मुझे बहुत गुस्सा आया और सुबह ही राधा से उसके दफ्तर में मिलने का मैंने फैसला ले लिया। रति ने आज दफ्तर ना जाने का मन बना लिया था और मैंने भी जिद नहीं की।

राधा के दफ्तर में बाकायदा 'पास' बनवाकर मैं उसके कमरे में गया। मैंने अपना संयम बनाये हुए बहुत ही तमीज के साथ उसे समझाने की कोशिश की तो सीधे बोली-

'तुम मुझे धमकाने आये हो? तुम जैसे ढीले कैरेक्टर वालों से मैं बात नहीं करती। गेट आउट' वर्ना मैं तुम्हारी शिकायत करुँगी।'

मुझे बुरा तो बहुत लगा मगर मौके़ की नजाकत को देखते हुए यह सोच कर कि 'इस औरत का कोई भरोसा नहीं, क्या आरोप लगा दे' मैं अपना सा मुँह लेकर उसके कमरे से बाहर आ गया। मैंने उनके निदेशक से भी बात की। उन्होंने सहानुभूति तो दिखाई पर वह महिलाओं के इस झगड़े में नहीं पड़ना चाहते थे। उन्होंने ऊपरी मन से मुझे आश्वासन दिया कि वह राधा से बात करेंगे और जल्द ही रति का कमरा भी तैयार करवा देंगे। रति को उन्होंने तब तक पुस्तकालय में ही बैठने की सलाह दी। मैंने बड़ी कठिनाई से उसके पति का फ़ोन नम्बर लेकर उनसे भी बात की- आदमी तो सभ्य लगता था मगर लगता था महारानी ने घर में उसकी भी वाट लगा रखी थी।

राधा को शायद यह सब पता चल गया था तो उसने परेशान करने का एक और तरीका ढूंढ लिया था- आते जाते जब कभी रति और वह, बरामदे में या सीढ़ियों पर मिलते तो वह रति के सामने थूक देती और कुछ अपशब्द बुदबुदाती। एक शरीफ आदमी जो कुछ कर सकता था वह सब मैंने आज़मा लिया था। रति को मैंने उससे दूर रहने को तो कह दिया था मगर मुझे अपनी लाचारी पर बड़ी झुंझलाहट आ रही थी। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करूँ? अपनी सोच के विपरीत तरह तरह के ख्याल आ रहे थे - जाकर इसके दो झापड़ रसीद करूँ, इसके खिलाफ पुलिस में शिकायत करूँ, इस पर मुक़दमा करूँ, या इसकी सुपारी दे दूँ?

इस कशमकश में तीन चार दिन हुए मैंने अपने छोटे भाई से भी अपना दिल हल्का करने के लिए इस बात का ज़िक्र किया था लेकिन मुझ से की गई बदतमीजी वाली बात नहीं कही थी ताकि वह भड़क कर बात और ना बिगाड़ दे। मुझे लगा था कि मुझे रति वाली बात भी उसे नहीं बतानी चाहिए थी क्योंकि वह बीच में पड़ने की बात कर रहा था। फिर भी मैंने उससे कह कर मना कर दिया था कि हम यह समस्या अपने तरीके से सुलझाना चाहते हैं - मुन्ना भाई की तरह नहीं। अच्छा ही हुआ जो उसे रोक दिया था। राधा को ठण्डे दिमाग से सोचने पर अपने व्यवहार पर

ग्लानि हुई होगी, उसे खुद ही सद्बुद्धि आ गयी और उसने रति को सॉरी भी बोल दिया।

रति जब चाय पीकर अंदर गयी तो मैंने भाई का भेजा mms आखिरकार देखा। तबियत खुश हो गई देख कर। चलिए आप को भी सेंसर्ड वर्जन कम से कम शब्दों में तो बता ही देता हूँ-

नीले रंग की एक गाड़ी कालिंदी कालोनी के गेट से बाहर निकली। एक महिला उसे चला रही थी। शक्ल साफ़ नहीं दिख रही थी। गाड़ी थोड़ी दूर चली। अचानक चीलों की तरह दस-बारह गंजे लड़के उस कार पर झपट पड़े और बोनट पीट-पीट कर गाड़ी को रोक लिया। एक व्यक्ति, जिसके सिर पर बाल थे, उसने कार के ड्राईवर की ओर वाला शीशा खटखटा कर, शीशा नीचे करवाया और एक परचा महिला को दिखाया। उस व्यक्ति की आवाज़ सुनाई दी-

'मैडम इस पते का कुछ पता है'?

फिर महिला की आवाज़ सुनाई दी-

'यह मेरे दफ्तर का पता है। यहाँ से तो बीस किलोमीटर होगा और यह महिला वहीं काम करती है। मगर आप मेरी गाड़ी क्यों रोक रहे हैं?'

उस आदमी की सिर्फ पीठ दिखाई दे रही थी उसकी भारी भरकम आवाज़ फिर सुनाई दी-

धन्यवाद मैडम, जिनका पता हम पूछ रहे हैं वह हमारी भाभी जी हैं। पप्पू! चल दो हज़ार रुपये दे मैडम को - इनके चोरी हुए थे।

'जी भाई जी ! मगर कहाँ रखूँ? पर्स में कि मैडम के ब्लाउज में?

महिला के चेहरे पर भाव तो स्पष्ट नहीं दिख रहे थे मगर उसने स्टीरिंग से हटा कर अपने दोनों हाथ झटपट अपने सीने पर रख लिए।

भाई जी बोले-

'अबे ! पर्स से चोरी हुए थे वहीं रख!'

'मैडम पर्स दोगी या खुद रखोगी?'

उस महिला ने चुप चाप पैसे पकड़ लिए। गंजों ने अभी भी कार को घेर रखा था।

भाई जी फिर बोले-

'धनका'! मैडम का चश्मा भी चोरी हुआ था। चल बे अपना दे दे। तेरा वैसे भी लड़कियों वाला लगता है।'

'भाई जी ! मेरी तो आँखें दुखने आय' है। फ्लू हुआ है। लग जागा मैडम को। देखो आँखों में कितने कीचड़ हैंगे।'

'कोई बात नहीं दे दे।'

'पिन्हा दूँ मैडम को?'

'नहीं ! आँखों पर से नहीं चोरी हुआ था। चल हाथ में दे शराफत से। ये शरीफ लोग हैं।'

धनका का चश्मा भी मैडम ने रख लिया।

अचानक वह आदमी सब गंजों से बोला-

'चलो ! सब के सब, थूको मैडम की कार पे और अपने रुमालों से बोनट चमकाओ, तुमने पीट पीट के सारी चमक खत्म कर दी। अच्छी तरह थूकना मैडम को थूकना बहुत पसंद है।'

अगले ही पल सबने बोनट पर थूकना शुरू कर दिया और फिर एक सुर में बोले-

'भाई जी ! नो रुमाल!'

'ठीक है, थूक ही तो है ऐसे ही रहने दो, और हाँ मैडम जी। हमारी हरकतों से हमारी भाभी हमसे बहुत नाराज़ रहती हैं। उन्हें पता भी नहीं कि हम आपकी खातिर कर रहे हैं। हमारी तरफ से उनसे सॉरी बोल देना, सच्चे दिल से! हमारा आपका हिसाब बराबर। अब आपके ऊपर है आप हिसाब बढ़ाना चाहें तो आपकी मर्ज़ी। हमारी मुलाक़ात का ज़िक्र अगर हमारी भाभी जी या अपने मामू से किया तो कल का कार्यक्रम और शराफत से होगा।'

इतने में कोई बोला-

'अरे बस भी करो भाई जी! मैडम की गाड़ी के नीचे से तो पानी टपक रिया है।'

'चुप ! वो AC का पानी है। जो तू समझ रहा वह नहीं है। मैडम तो बड़ी बहादुर हैं। ठीक है मैडम आप जाओ। आज ही सॉरी कहना नहीं भूलना।'

अंतिम शाट में सरपट दौड़ती गाड़ी के पिछले शीशे का फोकस था। बड़ा मजेदार कैपशन लिखा था।

क्लिप खत्म हुई तो मैंने बेडरूम में जाकर रति से पूछा -

'राधा की गाड़ी के पीछे लिखा कैप्शन याद है'

'हाँ 'NO SORRY - NO THANK YOU' क्यों?

'बस ऐसे ही मुझे याद आया। सॉरी कहना तो सीख गयी, thank you भी सीख जाएगी।

मैंने मुस्कुराकर बिना उसे दिखाए क्लिप डिलीट कर दी और अपने भाई को 'thank you' का sms कर दिया।

हमारी मम्मी बताती है कि जब मेरा छोटा भाई उनके गर्भ में था तो एक पूर्ण सूर्य ग्रहण पड़ा था। उस समय वह भूल से बाहर आ गईं थीं, जिसके कारण, उनका मानना है, कि मेरे छोटे भाई की एक उँगली जन्म से ही टेढ़ी है।

अच्छा ही हुआ - कई बार घी निकालने में आसानी होती है।

- डॉ. आरती नूर
एसोसिएट प्रोफेसर, स्कूल ऑफ इलेक्ट्रॉनिक्स

हिन्दी जनसाधारण की भाषा है।

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा सी-डैक, नोएडा का राजभाषायी निरीक्षण

संसदीय राजभाषा समिति का गठन 1976 में राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 4 के अन्तर्गत किया गया था। इस समिति में तीस सदस्य होते हैं जिनमें से बीस लोकसभा के सदस्य तथा दस राज्य सभा के सदस्य जो क्रमशः लोकसभा के सदस्यों तथा राज्यसभा के सदस्यों द्वारा आनुपातिक प्रतिनिधित्व पद्धति के अनुसार एकल संक्रमणीय मत द्वारा निर्वाचित होते हैं। इस समिति का कर्तव्य है कि वह भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों/विभागों/स्वायत्तशासी संगठनों/उपक्रमों आदि द्वारा संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए हिन्दी के प्रयोग में की गई प्रगति का पुनर्विलोकन करे और इस पर सिफारिशें करते हुए राष्ट्रपति को प्रतिवेदन प्रस्तुत करे और राष्ट्रपति उस प्रतिवेदन को संसद के हर सदन के समक्ष रखवाएगा और सभी राज्य सरकारों को भिजवाएगा।

उस पर राज्य सरकारों ने यदि कोई मत अभिव्यक्त किए हों तो उन पर विचार करने के पश्चात् उस समस्त प्रतिवेदन को या उसके किसी भाग के अनुसार निदेश निकाल सकेगा। संसदीय राजभाषा समिति इन निरीक्षणों के आधार पर अब तक अपनी रिपोर्ट के नौ खण्ड प्रस्तुत कर चुकी है जिनमें से आठ खण्डों पर राष्ट्रपति ने अपनी सिफारिशें भी दे दी हैं।

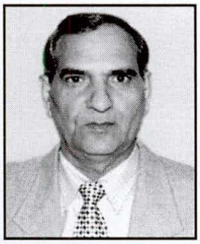

इसी अनुक्रम में 30 सितंबर 2011 को संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा सी-डैक, नोएडा का निरीक्षण किया गया। इस दौरान डॉ. जार्ज वर्की, कार्यकारी निदेशक कार्यालय के काम से विदेश यात्रा पर गए हुए थे। इसलिए उनकी जगह श्री वी.एन. शुक्ला, निदेशक द्वारा प्रस्तुतीकरण का कार्यभार संभाला गया। संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति के माननीय संयोजक डॉ. प्रसन्न कुमार पाटसाणी, श्री किशनभाई वी. पटेल व डॉ. (श्रीमती) बोच्चा झांसी लक्ष्मी सदस्यों ने निरीक्षण के संबंध में प्रस्तुतीकरण के दौरान सी-डैक, नोएडा द्वारा किए गए अनुसंधान एवं विकास कार्यों तथा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग में हुई प्रगति की प्रशंसा करते हुए कहा कि सी-डैक, नोएडा ने प्रशंसनीय कार्य किया है और साथ ही कुछ सुझाव भी दिए। उपर्युक्त निरीक्षण कार्यक्रम की कुछ झलकियां आगामी पृष्ठों पर देखी जा सकती हैं।

– जे.सी. सेठी
हिन्दी अधिकारी

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है।

सी-डैक, नोएडा द्वारा राजभाषा हिन्दी में किए गए कार्यों का संक्षिप्त ब्यौरा प्रस्तुत करते हुए श्री वी. एन. शुक्ला, निदेशक।

संसदीय राजभाषा समिति के समक्ष प्रस्तुत करते हुए श्री वी. एन. शुक्ला तथा उनके साथ सूचना प्रौद्योगिकी विभाग, सी-डैक मुख्यालय व सी-डैक, नोएडा के अधिकारीगण।

निरीक्षण के पश्चात सामूहिक फोटो।

सी-डैक, नोएडा द्वारा प्रदर्शित राजभाषा हिन्दी से संबंधित सामग्री का निरीक्षण करते हुए उप समिति के माननीय सदस्य।

गत वर्ष हिन्दी पत्रिका 'अभिव्यक्ति' के दूसरे अंक का विमोचन करते हुए डॉ. जार्ज वर्की, कार्यकारी निदेशक, श्री वी. एन. शुक्ला, निदेशक, श्री सी. के. जोसफ, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, श्री सी. के. चटर्जी, संयुक्त निदेशक (हिन्दी), सूचना प्रौद्योगिकी विभाग।

हिन्दी सप्ताह के अवसर पर हिन्दी भाषण प्रतियोगिता में भाग लेते हुए सी-डैक नोएडा के सदस्य।

हिन्दी सप्ताह के अवसर पर हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी।

हिन्दी सप्ताह के अवसर पर टाइपिंग प्रतियोगिता।

सी डैक
CDAC

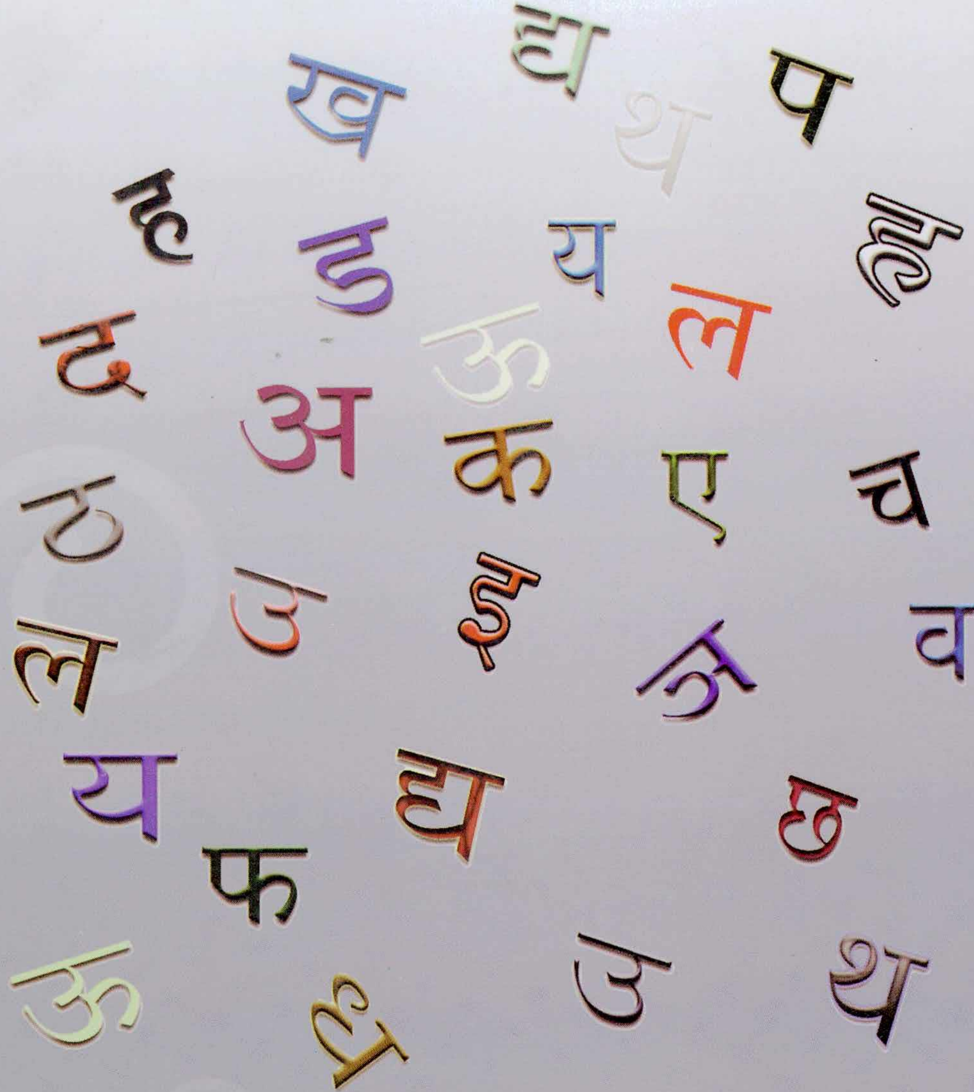

प्रगत संगणन विकास केन्द्र